A-PDF OFFICE TO PDF DEMO: Purchase from www.A-PDF.com to remove the watermark

सुप्रभात

पवित्र आत्मा

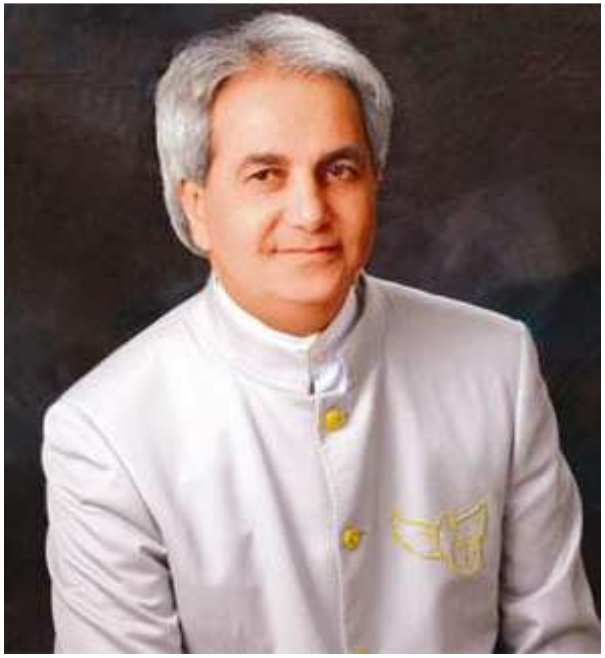

बैन्नी हिन्न

सरांश

आभारोक्ति 2

1. क्या मैं तुझको जान सकता हूँ? 4
2. जाफा से पृथ्वी की छोर तक।.....24
3. ''परम्परा – परम्परा'' 45
4. व्यक्ति से व्यक्ति तक 64
5. आप किसकी आवाज सुनते हैं? 84
6. आत्मा, प्राण और शरीर। 103
7. आपके जहाजों के लिये वायु। 120
8. एक सामर्थी प्रवेश। 140
9. आत्मा के लिये एक जगह।.....161
10. ''केवल एक साँस दूर।'' 178
11. ''आप क्यों रो रहे हैं?'' 192
12. पृथ्वी पर स्वर्ग। 110

आभारोक्ति

नाइल इस्केलिन के परामर्श और सम्पादकीय कार्य जो इस पाण्डुलिपी को तैयार करने में किया, उन्हे मैं धन्यवाद देता हूँ।

मैं अपनी स्नेही माँ को उनकी प्रार्थनाओं हेतु और शैरिल पामक्यूस्ट, क्रिस हिन्न, नैन्सी, प्रिचार्ड, सैमी हिन्न, जेनी पोलिनो, और ओरलेन्डो क्रिश्चियन सेन्टर के कर्मचारियों को, उनके इस योजना में सहयोग देने हेतु धन्यवाद देना चाहता हूँ।

मेरी प्रिय पत्नी सूजेन को उसके निरंतर प्यार और सहयोग के लिये मेरा विशेष धन्यवाद।

अध्याय 1

क्या मैं सचमुच तुझको जान सकता हूँ?

बात सन् 1973 के क्रिसमस के तीन दिन पहले की थी। टोरंटो की वह चुभती ठंड की शीत लहर की चादर ओढ़े सूरज उदय हो ही रहा था।

अचानक वह वहाँ था। पवित्र आत्मा ने मेरे कमरे में प्रवेश किया। वह पवित्र आत्मा उस सुबह मेरे लिये उतना ही वास्तविक था जितना कि अभी आपके साथ यह पुस्तक आपके लिये वास्तविक है।

अगले आठ घंन्टों के लिये मुझे पवित्र आत्मा के साथ एक अविश्वसनीय अनुभव हुआ था। उसने मेरी जिन्दगी की दिशा ही बदल दी। ज्योंही मैनें बाइबल खोली, आश्चर्य और आनन्द के आँसू मेरे गालों को स्पर्श करते हुए लुढ़कने लगे और उसने मेरे सवालों के जवाब दे दिये।

ऐसा लगा कि मेरा स्वर्ग के गोलार्ध में उठा लिया गया था और मैनें हमेशा के लिये वहीं रहना चाहा। मैं अपनी उम्र के 29वें वर्ष में था और यह भेंट मेरी जिन्दगी की आज तक के जन्मदिन या क्रिसमस ईनाम में सर्वश्रेष्ठ था।

मेरे माता – पिता नीचे हॉल में थे। पर वे शायद नहीं समझ सकेंगें कि उनके बैन्नी पर क्या बीत रही थी। दरअसल, अगर उन्होने समझ लिया होता कि मैं क्या अनुभव कर रहा था, तो यह छिन्न – भिन्न होकर बर्बादी के कगार पर खड़े इस परिवार के लिये कायापलट हो सकता था। करीब दो वर्षों से – जब से मैनें अपना जीवन यीशु को समर्पित किया – वस्तुतः मेरे माता – पिता एवं मेरे बीच में कोई वार्तालाप ही नहीं था। यह बिल्कुल भयानक था। इस्त्राएल से एक आप्रवासी

परिवार का पुत्र होने की हैसियत से, मैनें एक परम्परा को तोड़कर अपने घराने को अपमानित किया था। इतनी बड़ी विध्वंसक घटना मेरे जीवन में इसके पहले कभी नहीं घटी थी।

बावजूद इसके मेरे कमरे में असली आनन्द ही आनन्द रहा। हाँ, बिल्कुल अवर्णनीय। हाँ, अपार महिमा से परिपूर्ण। अगर आपने अड़तालीस घंन्टे पूर्व मुझे यह बतला दिया होता कि मेरे साथ क्या घटने जा रहा था, तो मैनें साफ कह दिया होता ''कभी नहीं हो सकता।'' उसी पल से पवित्र आत्मा मेरे जीवन में जीवित हो गया। अब वह दूरवर्ती त्रिएक परमेश्वर का तीसरा व्यक्ति नहीं रह गया था। वह वास्तविक था। उसका एक व्यक्तित्व था।

अब मैं उसके संम्बन्ध में आपके साथ बाँटना चाहता हूँ।

मेरे दोस्त, यदि आप पवित्र आत्मा, के साथ एक व्यक्तिगत संबंध स्थापित करने को तैयार हैं तो आप निश्चित हो जायें कि आप का अतीत का स्वप्न सर्वोत्तम तरीके से पूरा होगा, तब तो आगे पढ़िये। अन्यथा, मेरा आपसे अनुरोध है कि आप इस पुस्तक को हमेशा के लिये यहीं बन्द कर दीजिये। यह ठीक होगा। पुस्तक बन्द कर दीजिये। क्योंकि मैं आपके साथ जो बाँटने जा रहा हूँ वह आपके आत्मिक जीवन को बदल डालेगा।

अचानक यह आपके साथ घटेगा। यह शायद आपके पढ़ते रहते वक्त या आपके प्रार्थना करते समय होगा। अथवा आपके गाड़ी चलाकर काम पर जाते वक्त होगा। पवित्र आत्मा आपके निमंत्रण का जवाब देने जा रहा है। यह आपका घनिष्ट मित्र, आपका मार्ग दर्शक, आपका शांतिदाता, आपका आजीवन साथी बनने जा रहा है। और जब आप और वह मिल जाएंगे, तो आप कहेगें, बेन्नी, मुझे आप से कहने दें कि पवित्र आत्मा मेरे जीवन में क्या कर रहा है।

ईश्वर की सामर्थ प्रगट हुई

पिट्सबर्ग में एक छोटी रात

मेरे एक दोस्त, जिम पॉयन्टर ने मुझे उसके साथ एक किराये के बस में पिट्सबर्ग पैन्सल्वैनिया चलने को कहा। जिम, फ्री मेथोडिस्ट का एक पास्टर हैं जिन के साथ मेरी मुलाकात एक गिरजाघर में हुई थी जहाँ मैं गया था। वह दल एक चंगाई सुसमाचार प्रचारिका, कैथरीन कुलमन की सभा में जा रहा था।

सचमुच, मैं उनकी सेवकाई के बारे में बहुत थोड़ा जानता था। मैनें उन्हें टेलीविजन में देखा था, और उन्होने मुझें विस्मित कर दिया था। मुझे लगा वह अजीब सी बातें करती तथा विचित्र दिखाई देती थी। अब वास्तव मुझे उनसे कुछ अपेक्षा नहीं थी।

किन्तु जिम मेरा दोस्त था, तथा मैं उसको निराश नहीं करना चाहता था।

बस में मैनें कहा, ''जिम, तुम कभी नहीं समझोगे के इस यात्रा से संबन्धित मेरे पिता के साथ मेरा कठिन समय रहा।'' सुनो, मेरे ह्रदय परिवर्तन के बाद माता – पिता ने मुझे गिरजा संबंधी बातों से दूर रखने के लिये यथासंभव सारी कोशिशें की। और अब पिट्सबर्ग की यह यात्रा ? इसका कोई सवाल ही नहीं उठता था, पर बहुत अनिच्छा से उन्होने अपनी अनुमती दी है।

हम ने गुरुवार की अति सुबह टोरंटो छोड़ा। जो मात्र सात घंन्टो की यात्रा थी, एक अकस्मात बर्फीली तूफान की वजह से काफी धीमी हो गयी । हम लोग सुबह एक बजे तक अपने होटल नहीं पहुँचे थे।

तब जिम ने कहा, बेन्नी, हमको सुबह पाँच बजे उठना है।

मैनें पूछा इसी सुबह पाँच बजे। किस लिये?

उसने कहा कि अगर हम लोग छह बजे तक उस मकान के दरवाजे में नहीं पहुँचे, तो हमें बैठने की जगह नहीं मिल सकेगी।

अलबत्ता, मैं यकीन नहीं कर सका। क्या कभी किसी ने सुना है कि गिरजा जाने के लिये उस कड़ाके की सर्दी में सूर्योदय के पहले से ही बाहर खड़े रहे? लेकिन उसने कहा, बस, यही तो हमसे आशा की जाती है।

चुभती ठंड थी। पाँच बजे मैं उठ गया और मैं जितने पा सका, उतने गरम कपड़े पहन लिये – बूट, दस्ताने, काम के प्रयुक्त गरम कपड़े इत्यादि। मैं एक एस्किमो दिख रहा था।

हम लोग पिट्सबर्ग के निचले शहर के पहले प्रेस्बिटेरियन चर्च पहुँच गये, जबकि अब तक अन्धेरा ही छाया था। किन्तु यह देख कर मैं स्तब्ध रह गया कि सैकड़ों लोग वहाँ पहुँच चुके थे। और फिर दरवाजा, और दो घंन्टों तक नहीं खुलने वाला था।

छोटा कद होने के कुछ फायदे हैं। मैं इंच – इंच कर के धीरे – धीरे आगे दरवाजे की ओर खिसकने लगा, जिम को ठीक मेरे पीछे खींचते हुऐ। वहाँ तो दरवाजे के सामने की सीढ़ियों पर लोग सोये हुए थे। एक महिला ने मुझे बतलाया, वे तो रात भर से यहाँ पड़े हुए हैं। यहाँ हर सप्ताह ऐसा ही होता है।

मैं वहाँ खड़ा रहा, मैं तुरन्त कांपने लगा – मानो शरीर को किसी ने कसकर पकड़ लिया हो और वह मेरे शरीर को झझकोर रहा हो।

पल भर के लिये मैंने सोचा कि इस कड़ाके की शीत लहर मुझ पर असर कर रही होगी। परन्तु मैंने गरम कपड़े अच्छी तरह पहन रखे थे, और बेशक मुझे ठंडा तो नहीं लग रहा था। एक अनियंत्रणीय कंपन मुझ पर यों ही हावी हो गया था।

इसके पहले ऐसा कुछ भी नहीं हुआ था। और यह रुका ही नहीं। शर्म के मारे जिम से मैं बोल नहीं सका। मैंने अपनी सारी हड्डियों को कांपता महसूस किया। मैनें इसे अपने घुटनों और मुँह से महसूस किया। मुझे यह क्या हो रहा है ? मैं विस्मित हुआ। क्या यह ईश्वर की शक्ति है? मैं कुछ भी नहीं समझ सका।

चर्च की ओर की दौड़

अब दरवाजे खोले जाने का वक्त हो रहा था, और भीड़ ऐसे आगे बढ़ रही थी कि मैं आगे बढ़ ही नहीं सका। तब भी मेरी कंपकपी रुकी नहीं थी।

जिम ने कहा, बेन्नी, जब वे दरवाजे खुल जायेंगे, तो तुम जितना तेज हो सके, दौड़ना। क्यों ? मैंने पूछा।

यदि तुम नहीं दौड़ोगे, तो भीड़ ठीक तुम्हारे ऊपर से दौड़ेगी। वह यहाँ इसके पहले भी आ चुका था और उसे मालूम था कि वहाँ क्या हाल हो सकता था।

खैर, मैनें कभी नहीं सोचा था कि गिरजा जाने के लिये मुझे एक दौड़ दौड़नी होगी। पर यहाँ सच में मैं दौड़ रहा था। और फिर वे दरवाजे खुल गये, मैं एक ओलंपिक धावक की तरह चौकड़ी भर कर दौड़ने लगा। मैनें हर एक को पीछे छोड़ा – वृद्धाओं, जवान युवकों, और सभी को। सामने की पहली पंक्ति पर पहुँचने में, मैं कामयाब हुआ तथा मैनें बैठने की कोशिश की। एक स्वयंसेवक ने मुझको बतलाया कि आगे की कतार आरक्षित है, मुझे बाद में पता लगा कि कुलमन के स्टाफ उस कतार हेतु लोंगों को चुनते थे। वे पवित्र आत्मा के प्रति इतना संवेदनशील थीं कि वे सकारात्मक, प्रार्थनाशील समर्थकों को ही सामने की पंक्ति में ठीक अपने सामने बैठा देखना चाहती थी।

मेरी गम्भीर हकलाहट समस्या के चलते मैनें सोचा कि उस स्टाफ से बहस बेकार होगी। तब तक दूसरी पंक्ति तो भर चुकी थी, फिर भी जिम और मैनें तीसरी पंक्ति में थोड़ी जगह पा ली।

प्रार्थना सभा शुरु होने में एक घंन्टा बाकी था, इसलिये मैनें अपने कोट, बूट और दस्ताने उतार दिये। मैं बैठ कर आराम कर रहा था, मैंने पाया कि मैं पहले से ज्यादा काँप रहा था। यह रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था। ये कंपन मेरी बाँहो और पावों तक पहुँच रहे थे। जैसे कि मैं किसी मशीन से जुड़ा हूँ। यह अनुभूति मेरे लिये बिल्कुल नई थी। सच कहूँ मैं डर गया था।

ज्यों ही आर्गन बजने लगा, मैं अपने शरीर के कंपन के अलावा और कुछ सोच ही नहीं सकता था। यह कोई बीमार भाव नहीं था। यह ऐसा भी नहीं था कि मानो मुझे सर्दी या वायरस ने पकड़ रखा था। वास्तव में यह जितना लम्बा जारी रहा, उतना ही ज्यादा सुखद भी बन गया। यह एक असमान्य संवेदन था जो बिल्कुल भी शारीरिक नहीं था।

ठीक उसी पल, लगभग अचानक, कैथरीन कुलमन प्रकट हुई। पल भर में उस भवन का सारा माहौल आवेशित हो गया। मुझे नहीं मालूम था कि अब आगे क्या आशा करनी है। मैनें आसपास कुछ भी महसूस नहीं किया। आवाजें नहीं। स्वर्गदूतों का संगीत नहीं। कुछ नहीं। बस, मुझे इतना ही मालूम था कि मैं तीन घंन्टों से कांपता ही जा रहा था।

जैसे ही गाना आरंभ हुआ, वैसे ही मैनें अपने को कुछ करते देखा जिसकी मैनें कभी प्रतीक्षा भी नहीं की थी। ज्यों ही ''हाऊ ग्रेट दाऊ आर्ट'' (प्रभु महान विचारुं कार्य तेरे), गाना आरंभ हुआ मैं अपने पैरों पर खड़ा हो गया था, मेरे हाथ उठे हुए थे, और आँसू की झड़ियाँ गालों से हो कर बहने लगी।

यह ऐसा था मानो मैं विस्फोटित हो गया था। इससे पूर्व कभी भी मेरी आँखों से आँसू इतनी जल्दी नहीं टपकते थे। इसे हर्षोन्माद कहें। यह एक अपार महिमा का सघन भाव था।

मैं साधारणतः गिरजे में जैसा गाया करता था, वैसा नहीं गा रहा था। मैं सम्पूर्ण आत्मा से गा रहा था और – जब मैं उन शब्दों पर आ गया, (Then Sings my Soul, My Saviour God, to Thee) (प्रशंसा होवे प्रभु यीशु की), तब वास्तव में वह मैनें अपनी आत्मा से गाया।

मैं उस गीत के भाव में इतना तल्लीन हो गया कि यह समझने में मुझे थोड़ी देर लगी कि मेरा कंपन कब से पूर्णतः समाप्त हो चुका था।

लेकिन उस आराधना का माहौल बरकरार रहा। मुझे लगा कि मैं पूरी तरह रुपांन्तरित हो चुका था। मैं वह आराधना कर रहा था जो मेरे पूर्व के अनुभव से बिल्कुल भिन्न थी। यह तो एक वास्तविक आध्यात्मिक सच्चाई का आमना – सामना होने जैसा था। अन्य किसी ने यह अनुभव किया या नहीं, पर मैंने किया।

मेरे नये मसीही अनुभव में परमेश्वर ने मेरा स्पर्श किया लेकिन उस दिन जैसा वह मुझे स्पर्श कर रहा था, ऐसा कभी पहले नहीं हुआ था।

एक तरंग की तरह

वहीं खड़ा, लगातार प्रभु की उपासना करते हुए मैंने चारों ओर देखने के लिये अपनी आँखें खोली, क्योंकि सहसा मैंने कुछ कूड़े करकट की बदबू महसूस की। मुझे इसका कोई अन्दाजा नहीं था कि वह कहाँ से आ रही थी। यह एक शीतल पवन की भांति कोमल और धीमी थी।

मैनें खिड़कियों के रंगीन काँचों में देखा। किन्तु वे तो सब बन्द थे। और इतने अधिक ऊँचे थे कि ऐसी बदबू अन्दर आ ही नहीं सकती थी।

फिर भी वह तो अजीब सी पवन मैनें महसूस किया, जो एक तरंग की तरह थी। उसको मैनें अपनी एक बाँह से नीचे की ओर जाते तथा दूसरी ओर से ऊपर की ओर आते अनुभव किया। वस्तुतः उसको बहती हुई मैनें अनुभव किया।

क्या हो रहा था ? क्या मैनें जो अनुभव किया उसे और किसी को कहने की हिम्मत मुझमें कभी हो सकती थी ? वे सोच सकते थे कि मेरा दिमाग खराब हो गया था।

लगभग दस मिनट का समय व्यतीत हुआ, वह पवन मुझ पर लगातार बहती रही। और तब मैनें ऐसा महसूस किया मानो किसी ने तमाम शरीर को एक बढ़िया कंम्बल से ढ़क दिया था – गर्मी का एक कम्बल।

कैथरीन लोगों की सेवा करने लगीं, पर मैं तो पवित्र आत्मा में इतना अंतलींन हो गया था कि उसका मेरे लिये सचमुच में कोई महत्व ही नहीं था। अतीत में प्रभु मेरे जितना करीब था, अब उससे भी कहीं ज्यादा वह मेरे करीब था।

मुझको लगा कि मुझे प्रभु से कुछ बातें करना आवश्यक था, किन्तु मैं इतना ही फुसफुसा पाया, प्रभु यीशु, कृपया, मुझ पर दया कीजिये। मैनें पुनः कहा, प्रभु यीशु मुझ पर दया कर।

मैनें अपने को अधिक अयोग्य पाया।

मैनें यशायाह के सदृश्य अनुभव किया, जब उसने प्रभु की उपस्थिति में प्रवेश किया था।

हाय। हाय। मैं नष्ट हुआ।

क्योंकि मैं अशुद्ध होंठ वाला मनुष्य हूँ,

और अशुद्ध होंठ वाले मनुष्यों के बीच में रहता हूँ,

क्योंकि मैंने सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज को अपनी आँखों से देख है। सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज (यशायाह 6:5)

ठीक ऐसा ही हुआ था, जब लोगों ने यीशु ख्रीष्ट को देखा था। उन्होने तुरन्त अपनी ही बुराई अनुभव की और शुद्धी करण की जरुरत को भी।

वही तो मेरे साथ हुआ। यह ऐसा था मानो एक विशाल प्रोजेक्टर की स्पॉट लाईट (बिन्दु प्रदीप) की तीखी किरणें मुझ पर चमक रहीं हों। मैं तो केवल अपनी कमजोरियाँ, गलतियाँ, और गुनाह ही देख सका।

बारम्बार मैनें कहा, हे प्रेमी प्रभु यीशु, कृपया मुझ पर दया कीजिये।

तब मैनें एक आवाज सुनी, जो मुझे यकीन था कि यह प्रभु की ही थी। यह अपूर्व मृदुल थी, और वह बिल्कुल सुस्पष्ट थी। उन्होने मुझ से कहा, मेरी दया बहुतायत से तुम पर भरपूर है।

इस वक्त तक मेरा प्रार्थना जीवन एक सामान्य एवं औसत मसीही जैसा जीवन था। लेकिन अब मैं प्रभु से योहीं बात नहीं कर रहा था परन्तु वह मेरे साथ बात कर रहा था। वह क्या ही असमान्य वार्तालाप था।

यह मैं शायद ही समझा कि पिट्सबर्ग के उस पहले प्रेस्बटेरियन चर्च की तीसरी कतार में मुझ पर जो घट रहा था, वह मेरे भविष्य के लिये ईश्वर द्वारा निर्धारित योजना का एक पूर्वास्वादन मात्र था।

वे शब्द मेरे कानों में गूंज रहे थे ''मेरी दया तुम पर भरपूर है।''

मैं रोते और सिसकते वहीं बैठा रहा। मेरे जीवन में कुछ भी ऐसा नहीं था जिसके साथ मैं अपने इन अनुभव की तुलना करुं। मैं पवित्र आत्मा से इतना भरा और बदल गया कि मुझे अब और कुछ का महत्व नहीं रह गया। मुझे कोई परवाह नहीं थी अगर एक परमाणु बम पूरे पिट्सबर्ग और सारे संसार को उड़ाकर तहस – नहस भी करता। उस

वक्त मैंने अनुभव किया, जैसा कि वचन वर्णित करता है, शान्ति .....जो हमारी सारी समझ से परे है (फिलि. 4:7)।

जिम ने सुश्री कुलमन की प्रार्थना सभाओं में घटित चमत्कारों के संबंध में मुझ को बतलाया था। परन्तु आगामी तीन घंन्टों में मैं क्या देखने जा रहा था उसकी मुझे कोई भनक तक नहीं थी। लोग, जो बहरे थे, अचानक सुनने लगे। एक महिला अपनी व्हील चेयर (पहिये दार कुर्सी) से उछल कर खड़ी हुई। वहाँ और भी ना ना प्रकार की चंगाईयों के साक्ष्य थे, जैसे अबुर्द (Tumor), गठिया, सिर दर्द अन्य बीमारियाँ जो उनकी प्रार्थना सभा में हुईं थीं, कबूल की हैं।

यह प्रार्थना सभा काफी लम्बी थी, पर समय उड़ चला जैसा प्रतीत हुआ। मेरी जिन्दगी में इसके पहले कभी भी मैं ईश्वर की ऐसी शक्ति से इतना प्रभावित और संस्पर्शित नहीं हुआ था।

वह क्यों सिसक रही थीं ?

जबकि प्रार्थना सभा जारी थी और मैं इतमीनान से प्रार्थना करता रहा, अचानक सब कुछ बन्द हुआ। मैंने सोचा हे प्रभु, कृपया, इस प्रार्थना सभा को कभी बन्द न होने दें।

मैनें कैथरीन को देखने के लिये अपनी आँखें खोल दी। जो अपनी हथेलियों में चेहरा छिपा कर सिसक रहीं थीं। वे इतनी जोर से सिसकती – सिसकती रहीं कि कुछ सहसा ठप्प पड़ गया। गीत – संगीत बंद हुआ। स्वयं सेवी स्टाफ अपने ही स्थानों पर स्तंभित रह गये।

हर एक व्यक्ति की निगाहें उन पर ही टिकी हुई थी। और मैं। मुझे कुछ मालूम ही नहीं था कि वे क्यों सिसक रहीं थीं। मैनें आज तक किसी भी सुसमाचार प्रचारक को ऐसा करते कभी नहीं देखा था। वे इतना

रो क्यों रही थी ? (बाद में मुझे पता चला कि इसके पूर्व उन्होने ऐसा कभी नहीं किया था, और न ही उनके स्टाफ आज तक को ऐसा कुछ याद है।)

वह स्तब्ध स्थिति करीब दो मिनट के लिये रही होगी। तब उन्होने एक झटके से अपना सिर ऊपर किया। बस, वे आ गयीं, मेरे कुछ कदम आगे। उनकी आँखें प्रज्वलित थीं। वे बिल्कुल जीवंत थी।

उसी क्षण वे निर्भीकता से आ गयीं, ऐसी निर्भीकता मैनें किसी व्यक्ति में नहीं देखी थी। उन्होने जबरदस्त शक्ति और आवेग, यहाँ तक बहुत दर्द, के साथ सामने की ओर अपनी ऊँगली उठाई। यदि वहाँ स्वयं शैतान भी होता, तो बस झटके मात्र में वह एक तरफ हटा दिया जाता।

वह अविश्वसनीय आयाम का एक पल था। अभी भी सिसकते हुए उन्होने श्रोताओं की ओर देख कर बड़ी यंत्रणा से कहा, कृ.....प.....या....., पवित्र आत्मा को दुख मत दीजिये।

वे भीख मांगने जैसी याचना कर रही थीं। अगर एक बच्चे पर गोली चलाने आ रहे हत्यारे से हाथ जोड़ कर अपने उस लाड़ले की जिन्दगी की भीख मांगने वाली एक माँ की कल्पना आप कर सकते हैं, बस, ठीक ऐसा ही था। उन्होने याचना विनय की।

''कृपया'', उन्होने सिसकी भरी, ''पवित्र आत्मा को दुखित व पीड़ित मत कीजिये।''

अभी भी मैं उनकी आँखें देख सकता हूँ। वे निगाहें मानों सीधे मुझ ही को घूर रहीं थीं।

और जब उन्होने वह कहा, तब आपने एक सुई गिरायी होती, तो भी आप सुन लेते। साँस लेने को भी मुझे डर लगा। मैनें एक माँस पेशी तक नहीं हिलायी। मैं अपनी सामने की सीट को पकड़े विस्मित हो रहा था कि आगे क्या होने को था।

तब उन्होने कहा, क्या आप समझते नहीं हैं ? वह मेरा सर्वस्व है।

मैनें सोचा, वो किसके विषय में कह रही हैं ?

फिर उन्होने अपनी करुण विनय को जारी रखते हुए कहा, ''कृपया!, उसको पीड़ित मत कीजिये। वह मेरा सर्वस्व है। उसको आघात (प्रताड़ित) मत कीजिये, जिसको मैं प्यार करती हूँ।''

मैं वे शब्द कतई भूल नहीं सकता। मैं अभी भी उनके बोलते समय की साँसों की तीव्रता याद कर सकता हूँ, जब उन्होने वह कहा था।

मेरे चर्च के पास्टर ने (पादरी) पवित्र आत्मा के बारे में बताया था। किन्तु इस प्रकार नहीं। उसके संदर्भ पवित्र आत्मा के वरदानों, या अलौकिक भाषाओं, या भविष्यवाणी के संबंध में थे न कि ''वह'' मेरे निकटतम, सर्वाधि वैयाक्तित, घनिष्ठता मित्र। लेकिन कैथरीन एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बता रही थीं जो आप या मुझसे भी कहीं ज्यादा वास्तविक था।

तब उन्होंने अपनी लम्बी ऊँगली मेरी ओर उठायी और अधिक स्पष्टता के साथ कहा, वह इस दुनिया के सबसे भी अधिक वास्तविक हैं।

मुझको उसे पाना ही है

जब उन्होने मेरी ओर देखा और उन शब्दों को उच्चारित किया तो कुछ या जिसने मेरे अंतरतम को उसकी गिरफ्त में कर लिया। मैनें चिल्ला कर कहा, मुझे उसे पाना ही हैं। अब, सचमुच, मैनें सोचा कि प्रार्थना सभा में प्रत्येक व्यक्ति ठीक ऐसा ही अनुभव किया होगा। परन्तु ईश्वर का लोंगों से व्यक्तिगत संम्पर्क करने का एक तरीका है, और मेरा पूरा यकीन है कि वह प्रार्थना सभा सिर्फ मेरे लिये थी।

मेरा यकीन कीजिये, एक नया मसीही होने की हैसियत से उस प्रार्थना सभा में जो हो रहा था उसके साथ मैं अपने को पूर्ण रुप से सम्मिलित नहीं कर सका। किन्तु मैनें जो सच्चाई और शक्ति की अनुभूति की उसको मैं इन्कार नहीं कर सका।

और जब सभा का समापन होने लगा, मैनें उस महिला प्रचारक को देखा और एक धुंध को उसके ऊपर और उसके चारों ओर देखा। पहिले मैनें सोचा मेरी आखें धोखा दे रही हैं। परन्तु वह वहाँ था और उस धुंध में उसका चेहरा एक प्रकाश के समान चमक रहा था।

मैं एक पल के लिये भी यह विश्वास नहीं करता कि ईश्वर सुश्री कुलमन की महिमा करने की चेष्टा कर रहा था। पर यह मैं विश्वास करता हूँ कि उसने अपनी ही महिमा मेरे लिये प्रकाशित करने हेतु उस प्रार्थना सभा को इस्तेमाल किया था।

जब प्रार्थना सभा खत्म हो गयी, तो भीड़ पंक्तिबद्ध बाहर चली गयी, किन्तु मैनें वहाँ से जाना न चाहा। मै तो दौड़ कर आया था, और अब मैनें शाँत बैठ कर वहाँ अभी – अभी जो हुआ था उस पर मनन करना चाहा।

मैनें उस प्रार्थना भवन में जो कुछ भी अनुभव किया वह मेरे व्यक्तिगत जीवन ने मुझे नहीं दिया था। मुझे मालूम था कि जब मैं अपने घर जाऊँगा तो वही उत्पीड़न जारी रहेगा।

मेरी अपनी आत्मछवि मेरी हकलाहट ने मुझे सबसे अलग कर दिया था और कोई बात करने को भी नहीं था।

मेरे मसीही बनने के बाद भी मैनें बहुत कम मित्र बनाये। कैसे मैं नये लोगों से मिल सकता था, जब मैं अपनी बात को व्यक्त नहीं कर सकता था ?

इसलिये मैनें पिट्सबर्ग में जो पाया, उसको कभी छोड़ना नहीं चाहा। मेरे जीवन में जो कुछ भी था, बस यीशु था। तथा जीवन में और – कुछ का कोई खास मतलब नहीं था। मेरा कोई असली भविष्य नहीं था। मेरे परिवार ने भी प्रायः मेरी तरफ पीठ दिखाई थी। हाँ, यह तो मुझे मालूम था कि उन्होने मुझे प्यार किया, लेकिन यीशु मसीह की सेवा करने के मेरे फैसले ने हमारे बीच एक बहुत चौड़ी खाई खोद दी थी।

मैं यों ही वहाँ बैठा रहा। कौन नरक जाना चाहेगा, जब उसको स्वर्ग मिल गयाा ?

पर यहाँ और कोई विकल्प नहीं रह गया। बस मेरा इंतजार कर रही थी और मुझे वापस जाना था। मैं चर्च के पीछे आखिरी एक पल के लिये रुक गया, यह सोच कर, कि उसका क्या मतलब था ? वो क्या कह रहीं थीं, जब उन्होने पवित्र आत्मा के विषय में कहा ?

टोरंटो लौटते समय रास्ते भर मैं यही सोचता रहा, मुझे नहीं मालूम कि उनका क्या मतलब था। बस में भी मैनें कुछ लोंगों से पूछा। वो भी नहीं बता सके, क्योंकि उन्होने भी नहीं समझा था।

कहने की जरुरत नहीं कि जब मैं घर पहुँचा, तो मैं बेहद थका हुआ था, नींद का आभाव, लंबा सफर, तथा एक आध्यात्मिक अनुभूति, जो एक भावनात्मक रोलर तटपोत की भांति थी, अब मेरा शरीर एक आराम के लिये तैयार था।

लेकिन मैं सो नहीं सका। मेरा शरीर थक कर तार – तार हो गया था, परन्तु मेरी आत्मा अंतहीन सिलसिलेवार विस्फोटित ज्वालामुखियों की तरह अंन्दर – मंथित होती रही।

ईश्वर की उपस्थिति का ज्ञान

कौन मुझको खींच रहा है ?

ज्यों ही मैं अपने पंलग पर लेटा हुआ था, मुझको ऐसा लगा मानो कोई मुझे बिस्तर से बाहर घुटनों की तरफ खींच रहा था। यह एक अजीब संवेदन था, तथा मैनें इतना जबरदस्त अनुभव किया कि मैं इसका विरोध नहीं कर सका।

क्या आश्चर्य था, उस कमरे के अंधेरे में, मैं अपने घुटनों पर आ गया। अब तक ईश्वर संभवतः साथ नहीं था, और मैंने उसके मार्ग दर्शन का पालन किया।

मुझे मालूम था कि मैं क्या कहना चाहता था, पर कैसे मांगना है यह ठीक ज्ञान नहीं था। मैंनें जो चाहा था वह पिट्सबर्ग की उस प्रचारिका के पास था। मैनें सोचा, मुझे वही चाहिये जो कैथरीन को मिला। मैने उसको एक – एक अणु और तंतु के साथ मुझमें चाहा। उसके लिये जो वो बोल रही थी, मुझे भूख थी – हालांकि मैनें उसे समझा नहीं था।

खैर, जो मैनें करना चाहा, सो मुझे मालूम था, पर कैसे बोलूं यह पता नहीं था। अंततः मैनें निर्णय कर लिया कि एक ही रास्ता, जो मुझे मालूम था, अपनाऊँ – मेरे अपने ही सरल शब्दों में।

मैं पवित्र आत्मा को संबोधित करना चाहता था, किन्तु इसके पहले कभी मैनें ऐसा नहीं किया था। मैनें सोचा, क्या मैं सही कर रहा हूँ ? फिर भी, पवित्र आत्मा को संबोधित किये जा सकने वाला एक व्यक्ति नहीं सोचा। मुझे यह भी नहीं मालूम था कि प्रार्थना कैसे शुरु की जाए, पर मेरे भीतर जो था वह मुझे अच्छी तरह मालूम था। मैनें सिर्फ पवित्र आत्मा को पहचानना चाहा जिस प्रकार सुश्री कुलमन ने पहचान लिया था।

और तब मैनें इस प्रकार प्रार्थना की, ''हे पवित्र आत्मा, कैथरीन कहती है कि तू उनका दोस्त है।'' धीरे – धीरे ''मैं आगे कहता रहा, मैं नहीं सोचता कि मैं तुझे जानता हूँ। अब, आज के पहले तक मैनें सोचा कि मैं जानता था। लेकिन उस प्रार्थना सभा के पश्चात् मैं मानता हूँ कि मैं सचमुच आपको नहीं जानता हूँ। मैं नहीं सोचता कि मैं आपको पहचानता हूँ।''

और शिशु की भांति मेरे हाथों को ऊपर की ओर – उठाते हुए, मैनें पूछा, ''क्या मैं तुझ से मिल सकता हूँ ? क्या मैं वास्तव में तुझ से मिल सकता हूँ।''

मैनें आश्चर्य किया, ''कि मैं जो कह रहा हूँ सही है ? क्या मुझे आत्मा से इस प्रकार प्रार्थना करना चाहिये। तब मैनें सोचा, यदि मैं ईमानदार हूँ तो ईश्वर मुझे दिखायेगा कि मैं सही हूँ या गलत।'' क्या कैथरीन कुलमन गलत थी, मैं खोजना चाहता था।

पवित्र आत्मा से बात करने के उपरान्त, कुछ नहीं हुआ जैसा लगा। मैं अपने आप से प्रश्न करने लगा, ''क्या सच में पवित्र आत्मा से मिलना एक अनुभव है ? क्या वास्तव में हो सकता है''

मेरी आँखें बंद थीं। तब, बिजली के झटके की तरह मेरा तमाम शरीर कांपने लगा। ठीक वैसा ही जैसा कि चर्च में प्रवेश के लिये बाहर इंतजार कर रहे वक्त दो घन्टों तक मुझ को हो रहा था। यह वही कंपन था जो एक बार चर्च के भीतर – एक घंन्टे तक मैनें अनुभव किया था।

वह लौट कर आया, और मैनें सोचा, यह फिर हो रहा है। किन्तु इस बार यहाँ भीड़ नहीं थी। भारी कपड़े भी नहीं थे। मैं अपने आरामदेह कमरे में अपने पाजामे में था – एड़ी से चोटी तक काँपता हुआ।

मुझे अपनी आँखें खोलनें में डर लगा। इस बार यह ऐसा था मानो उस सभा में जो भी हुआ था सब का सब पल में सिमट गया। मैं काँप

रहा था लेकिन इस वक्त भी मैनें एक बार ईश्वर की भक्ति – का ऊनी कम्बल मुझे पूरी तरह लपेटा हुआ जैसा अनुभव किया।

मुझे ऐसा लगा, मानो स्वर्ग में उठा लिया गया हूँ। नहीं, मैं बिल्कुल नहीं गया, लेकिन सच में मैं विश्वास नहीं करता कि स्वर्ग इससे बढ़कर कुछ हो सकता है। वस्तुतः मैनें सोचा, यदि मैं अपनी आँखें खोल दूँ, या तो मैं पिट्सबर्ग में हाऊँगा, या स्वर्ग के उस मातियों वाले फाटक के अन्दर।

खैर, थोड़ी देर बाद, मैनें अपनी आँखें खोल दी, और क्या आश्चर्य। मैं ठीक वहीं मेरे उसी कमरे में था। वही जमीन। वही पाजामे में। किन्तु मैं ईश्वर के आत्मा की शक्ति से अब भी झुनझुना रहा था।

आखिरकार, उस रात में जब मैं सोने के लिये लेट गया, तब भी मैं समझ नहीं पाया कि मेरी जिन्दगी में क्या शुरु हुआ था।

मेरे पहले शब्द

अगले दिन भोर में, एकदम भोर में, मैं पूर्ण रुप से जागा हुआ था। और अपने इस नये मित्र से बात करने का इंतजार नहीं कर सका।

ये थे मेरे मुँह से निकले पहले शब्द, ''गुड मॉर्निंग होली स्पिरिट'' (सुप्रभात पवित्र आत्मा)।

ठीक उसी समय, जब मैनें ये शब्द उच्चारित किये, वह महिमा मंडित माहौल मेरे कमरे में लौट आया। हालांकि इस बार मैं कांप या हिल नहीं रहा था। केवल मैनें उसकी उपस्थिति से आंच्छादिक अनुभव किया।

दूसरी बार जब मैनें कहा, ''गुड मॉर्निंग होली स्पिरिट,'' तब मुझे मालूम था कि वह मेरे साथ उसी कमरे में हाजिर था। मैं ने केवल उस

सुबह में पवित्र आत्मा से भर गया, बल्कि जब – जब मैंनें प्रार्थना में समय बिताया, तब – तब मैं उससे ताजा – ताजा भर जाता था।

अब मैं जो बता रहा हूँ वह भाषाओं के वरदान से भी परे है। हाँ, मैं आलौकिक भाषा में मैंने बात अवश्य की है, पर यह उससे भी कहीं बहुत ज्यादा था। यहाँ पवित्र आत्मा यथार्थ बन गया। वह मेरा मित्र मेरा साथी बन गया, और सलाहकार भी।

सब से पहला काम जो मैनें उस सुबह किया कि बाइबल खोली, मैं निश्चित होना चाहता था कि वह मेरे साथ है, ज्यों ही मैंने वचन खोला मैं जान गया कि वह वहाँ था और मानो वह मेरी बगल में बैठा था। नहीं मैनें उसका चेहरा नहीं देखा और न ही उसकी भाव – भंगिमा देखी। पर मुझे बिल्कुल स्पष्ट रुप से मालूम था कि वह वहाँ था। और धीरे – धीरे मैं उसका व्यक्तित्व पहचानने लगा था।

उस समय से बाइबल ने मेरे जीवन में एक नया आयाम ले लिया। मैं कहता, ''हे पवित्र आत्मा उसे मुझको इस वचन में सिद्ध कर दे।'' मैनें जानना चाहा कि क्यों कि वह क्यों आया था और तब वह मुझे इन वचनों की ओर ले गया ''परन्तु हम ने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है जो परमेश्वर की ओर से है कि हम उन बातों को जानें जो परमेश्वर ने हमें दी है'' (1कुरि. 2:12)।

जब मैनें पूछा कि वह मेरा मित्र क्यों बनना चाहता है, तब वह मुझे पौलुस के इन शब्द पर ले गया, प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे। (2 कुरि. 13:14)

बाइबल सजीव हो गयी। मैनें सच में उन वचनों का प्रभाव कभी नहीं समझा था, ''न तो बल से और न शक्ति से, पर मेरे आत्मा से, प्रभु कहता है'' (जकर्याह 4:6)।

बारम्बार उसने अपने वचन द्वारा यह प्रमाणित किया कि वह मेरे जीवन में क्या कर रहा था। उस प्रथम दिन में लगभग आठ घन्टों से ज्यादा और फिर दिन प्रतिदिन मैं उसको ज्यादा करीब से जानने के लिये बढ़ता गया।

मेरा प्रार्थना जीवन बदलने लगा। ''अब'' मैनें कहा, ''हे पवित्र आत्मा, चुँकि तू पिता को अच्छी तरह जानता है, इसलिये क्या तू मुझे प्रार्थना करने की मदद करेगा ?'' और जब मैं प्रार्थना करने लगा, तब मैं उस स्थल पर पहुँचा जहाँ अचानक पिता पहले की अपेक्षा अधिक वास्तविक निकला। यह ऐसा था मानो किसी ने एक दवराजा खोल दिया था और कहा, ''वह यहाँ है।''

मेरा गुरु, मेरा मार्गदर्शक

ईश्वर के पितृत्व की सच्चाई मेरे अतीत के अनुभवों की अपेक्षा और स्पष्ट हो गयी। यह पुस्तक पढ़ने से नहीं थी अथवा एक सूत्र – ए,बी,सी – जानने से। यह तो पवित्र आत्मा से यह कहने से था कि वह मेरे लिये बाइबल खोल कर दे और उसने किया। ''इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाये चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं। क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो, परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कह कर पुकारते हैं।'' (रोमियों 8:14,15)

मैं पवित्र आत्मा के बारे में यीशु मसीह द्वारा कही गयी सारी बातों को सम्मिलित करने लगा। वह मेरा सांत्वनादाता, मेरा गुरु, मेरा मार्गदर्शक था।

मैंनें पहली बार समझ लिया कि यीशु का मतलब तात्पर्य क्या था, जब उन्होने अपने शिष्यों से कहा, ''मेरा अनुसरण करो''।

फिर एक दिन उन्होने कहा, मेरा अनुसरण मत करो – क्योंकि जहाँ मैं जा रहा हूँ, वहाँ तुम नहीं जा सकते हो। उन्होने उनसे कहा, परन्तु पवित्र आत्मा तुम्हारा मार्गदर्शन करेगा। वह तुम्हे आगे ले चलेगा।

वे क्या कर रहे थे ? यीशु मसीह उनको एक दूसरा मार्गदर्शक दे रहे थे। एक दूसरा मार्गदर्शक, जिसका अनुसरण किया जाये।

बाइबल की मेरी खोज दिनोंदिन सप्ताहों तक जारी रही – मेरे प्रश्नों के उत्तर पाये जाने तक। उन दिनों मैं पवित्र आत्मा को अधिकाधिक गहराई से पहचान रहा था। और यह अंतरंग सम्मिलित आज के दिन तक कभी नहीं रुका है। मैंने अनुभव किया कि वह ठीक यहाँ मेरे साथ है। और मेरा सम्पूर्ण जीवन बदलता गया। मेरा पूरा विश्वास है कि आपको भी ऐसा ही होगा।

आज जैसे ही मैं जाग गया, फिर मैनें वही कहा, गुड मॉर्निंग होली स्पिरिट।

अध्याय 2

जाफा से पृथ्वी की छोर तक।

बात सन् 1952 दिसंबर, इस्त्राएल की है। क्लेमेंन्स हिन्न अपने दूसरे बच्चे को जन्म देने वाली थी। वह प्रसव कक्ष में खिड़की से बाहर की ओर देख कर प्राकृतिक सौंदर्य का आस्वादन कर रही थीं। भूमध्य सागर का गहरा नीला जल अनंतता की ओर फैला हुआ था। परन्तु अमेरिकी मूल की इस बहुत साधारण महिला का दिन व्याकुल रहा। वह कडुवाहट, डर और शर्म के मारे तार – तार थी।

उस सागर के सुदूर फैलाव में एन्ड्रॉमेडा चट्टानों का काला समूह दिख पड़ता था। यूनानी द्वंदकथा का मानना है कि जब परिसियुस अपने पंखदार घोड़े पर सवार होकर उड़ा चला जा रहा था तो कुमारी एन्ड्रॉमेडा को उन चट्टानों में से एक पर जंजीर से बंधा देखा और उसने उस समुद्री राक्षस पर हमला कर उसको बचा लिया।

क्लेमेन्स ने भी ऐसा कोई व्यक्ति चाहा जो उसको झपट ले और उसको कलंक और अपमान भरे एक और वर्ष से बचा ले। वह एक परम्परानिष्ट यूनानी महिला थी, पर उसको प्रभु के बारे में ज्यादा नहीं मालूम था। फिर भी, अस्पताल के उस मामूली कमरे में उसने प्रभु के साथ समझौता करने की कोशिश की।

खिड़की के पास खड़े होते ही, उसकी आँखें आकाश की उस शून्यता को भेदती गयीं और उसने दिल की गहराई से कहा, हे प्रभु, मेरा एक ही निवेदन है। यदि तू मुझे एक लड़का देगा, मैं उसे तुझको वापस दे दूंगी।

जाफा

छः खूबसूरत गुलाब

पहला बच्चा जो कॉस्टेन्डी और क्लेमेन्स हिन्न को हुआ वह एक सुन्दर लड़की थी, जिसका नाम रोज था। लेकिन उस मध्यपूर्व हठधर्मी संस्कृति में खास कर हिन्न की पैतृक परंपरा में – पहलौठे को एक लड़का उत्तराधिकारी होना चाहिये था।

कॉस्टेन्डी का परिवार, यूनान से फिलिस्तीन में प्रवासी, एक लड़का करने की क्लेमेन्स की विफलता में उसको प्रताड़ित करने लगा, ''फिर थी'' ''तेरी अन्य जेठानियों – देवरानीयों को तो लड़के हुए थे'', बोलकर उसका उपहास और अपमान किया गया। उसके माता पिता द्वारा बड़ी सावधानी से तय की गयी ऐसी शादी में उसने लज्जा और बदनामी महसूस की।

उस शाम को जैसे नींद में उसकी आँखें बन्द हुई, तब भी पे गीलीं थीं। और रात में उसने एक सपना देखा जो उसे अभी भी याद है, मैनें छः गुलाब देखे – छः खूबसूरत गुलाब मेरे हाथों में, वह आगे कहती है, और मैनें यीशु को मेरे कमरे में प्रवेश करते देखा। वे मेरे पास आये और उन्होने उनमें से एक मुझसे माँगा। मैनें उनको एक गुलाब दे दिया।

वह सपना जारी रहा, एक साधारण, दुबला, काले बालों वाला एक जवान वह उसका तमाम चेहरा नाक – नक्शे के साथ याद करती है – उसकी तरफ आया और उसने क्लेमेन्स को एक गरम कपड़े से लपेट दिया था।

जब वह जागी उसने स्वयं से इस सपने का अर्थ पूछा ? यह क्या हो सकता है ?

अगला दिन, 3 दिसंबर 1952 को मेरा जन्म हुआ।

हमारे परिवार में अंततः छः लड़के और दो लड़कियाँ होने थे लेकिन मेरी माँ ईश्वर के साथ वह समझौता कभी नहीं भूली। उसने बाद में मुझको उस सपने के सम्बन्ध में बताया और कि मैं ही वह गुलाब था जो उसने यीशु को चढ़ाया था।

मैनें यरुशलेम के यूनानी ऑर्थोडाक्स चर्च में प्राधिधर्माध्यक्ष, बेनेडिक्टस, के करकमलों से बपतिस्मा लिया था। वास्तव में उसी समारोह में उन्होने मुझको उनका ही नाम दिया।

पुण्य देश में जन्म लेना ऐसे माहौल में जन्म लेना है, जहाँ धर्म अपरिहार्यतः अपनी एक अमिट छाप छोड़ जाता है। दो वर्ष की उम्र में एक कैथोलिक स्कूल में मेरा नाम लिखा गया और मैं औपचारिक रुप से धर्म बहनों द्वारा – और बाद में मठवासियों द्वारा चौदह वर्षों तक शिक्षित किया गया।

मेरी नजर में जाफा एक अतिसुन्दर नगर था। दरअसल इस शब्द का अर्थ ही वही है – सुन्दर । अरबी भाषा में इस शब्द को जोफा, प्राचीन यूनानी भाषा में जोप्पी तथा इब्रानी में याफो कहा जाता है। सभी भाषा में इसका अर्थ वही वही है।

बचपन से ही आसपास के परिवेश की ऐतिहासिक कहानियाँ सुनने का शौकीन था। इतिहास में अभिलिखित समय के बहुत पहले ही जाफा स्थापित हो चुका था। यहोशू के यरीहो युद्ध से भी पहले, ईसा पूर्व 15 वीं शताब्दी में, फिराडन थुत्मोस तृतीय श्रद्धाजंलि सूचियों में यह कनानी नगर के नाम से जाना जाता था। और यह वही जगह थी, जहाँ तीरुस के कनानी राजा हिराम ने राजा सुलेमान के मंदिर निर्माण हेतु देवदार की लकड़ियाँ उतारी थी।

भले ही ऐतिहासिक कथाएँ मेरे लोमहर्षक रही हों, पर मेरे अपने जन्मस्थान के प्रति इतिहास उतना हमदर्द नहीं लगता था। जोफा पर बारम्बार हमला हुआ, वह बन्दी बनाया गया था। उसका सर्वनाश और पुनःनिर्माण किया गया था। मेक्काबी के सिमोन, वेस्पेसी नेपोलियन, तथा एल्लेन्बी आदि सब ने इसको अपना बनाने का प्रयास किया था।

मेरे जन्म के मात्र छह साल पूर्व ही जाफा ने अपने को इस्त्राएल की अगुवाई करने वाले एक नवनिर्मित पैगम्बरी राष्ट्र के रुप में देख पाया। परन्तु वहाँ का समुदाय खुद यहूदी नहीं था।

मेयर हिन्न

मेरी बाल्यावस्था में जाफा के मेयर मेरे पिता थे। वह बहुत ही हष्ट – पुष्ट व्यक्ति और स्वभावतः एक अच्छे अगुवा भी थे, जिसकी 6′ 2′′ ऊँचाई और वनज 250 पौण्ड था। वह हर तरफ से – शारीरिक, मानसिक और अध्यात्मिक – मजबूत थे।

फिलस्तीन में प्रवासी बन जाने के पहले उनका परिवार यूनान से आकर मिस्त्र में बस गया था। किन्तु यह कहीं से आकर बस जाना एक आम बात थी। मेरे बाल्यकाल का जाफा दरअसल एक अंतरराष्ट्रीय नगर था।

अब्दुल हमीद जुबली क्लॉक टॉवर, दि स्टौन – वॉल्ड बंदीगृह रजिएल सड़क से होकर टॉवर स्क्वायर और 1810 में निर्मित विशाल मस्जिद की ओर टहलते समय मैं स्थानीय निवासियों को फ्रेंच, बल्गरी, अरबी, यदीश, और अन्य भाषाओं में बात करते सुन सकता था। और छतरियों और कहवाखानों में बैठकर मैं बक्लवा, ज्लाबिया, फेलाफेल, समसम तथा दर्जनो अन्य प्रकार के पकवानो का मजा लेता था।

सो मेरा जन्म इस्त्राएल में हुआ था, पर मैं यहूदी नहीं हूँ। एक अरबी संस्कृति में पालन पोषण हुआ, पर अरबी वंश का नहीं हूँ। एक कैथोलिक विद्यालय में अध्ययन हुआ, पर एक ग्रीक ऑर्थोडॉक्स के रुप में उभरा हूँ।

दुनिया के ऐसे स्थलों में भाषाएँ सहज ही आ जाती। मेरा विचार था कि हर एक से यह आशा की जाती थी कि वह तीन या चार भाषाएँ जाने। अरबी हमारे घर में बोली जाती थी। परन्तु स्कूल में कैथोलिक धर्म बहनों ने पुराने नियम को छोड़ कर सब कुछ फ्रेंच में सिखाया। पुराना नियम प्राचीन इब्रानी में पढ़ाया जाता था।

मेरे बचपन में जाफा के हजारों लोगों को उत्तर के तेलअवीव प्रांत की विस्फोटी यहूदी जनसंख्या ने निगल लिया था। यही कारण है कि आज इस महानगर का आधिकारिक नाम तेल अवीव – जाफा हो गया है। इस प्रांत में चार लाख से भी अधिक लोग निवास कर रहे हैं।

वास्तव में, तेल अवीव का उद्‌भव तब होने लगा, जब 1909 में यहूदी परीक्षण के रुप में साठ परिवारों ने जाफा के ठीक उत्तरी भाग में बत्तीस एकड़ टीलेदार रेतीली जमीन खरीद ली तथा उस स्थान की ओर प्रस्थान किया। वहाँ के शोरगुल युक्त माहौल, और अरबी आवासों की दुर्दशाओं से वे अब ऊब चुके थे। इसलिये यहाँ का विस्तार लगातार होता रहा। अंततः विस्तार होते – होते तेल अवीव इस्त्राएल कर सबसे बड़ा नगर बन गया।

यद्यपि मेरे पिता यहूदी नहीं थे, तौभी इस्त्राएल के प्रशासक उन पर विश्वास करते थे। और वे जाफा में ऐसे एक व्यक्ति को पाने में खुश थे जो इस प्रकार के अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के बीच में एक ताल मेल का संबंध स्थापित कर सके। उनकी व्यापक मित्र संगति से हमें गर्व था जिसमें अनेकानेक बड़ी राष्ट्रीय हस्तियाँ शामिल थीं। उनको विदेश में

इस्त्राएल का राजदूत बनने को कहा गया, पर उन्होने जाफा में रहना पसन्द किया।

लेकिन उनके पास अपने परिवार के लिये थोड़ा ही समय था। सच में, मैं यह नहीं कह सकता कि मैं अपने पिता को जान पाया। ऐसा लगता है कि वह हमेशा कुछ न कुछ समारोह या किसी महत्वपूर्ण बैठक में भाग ले रहें हों।

वह कोई प्रदर्शनात्मक स्वभाव के नहीं थे, पर कठोर और उसने बिरला ही अपने स्नेह का किसी बाह्यरुप में इजहार किया। (हालांकि मेरी माँ ने इसके बदले उस कमी को पूरा किया) और फिर, इसका एक कारण संस्कृति भी था। आखिर, पुरुष तो पुरुष ही होते थे।

हम लोग आराम से रहते थे। पापा के सरकारी ओहदे ने नगर परिसर में हमारे लिये एक घर संभव बनाया था। यह घर बहुत ही सुन्दर था जिसके चारों ओर दीवारें थीं और उसके ऊपरी भाग में सुरक्षा के उद्देश्य से शीशे लगाये गये थे। मेरी माँ तो बेशक हर प्रकार से एक घर बनाने वाली थीं; और फिर इन हिन्न संततियों का पालन – पोषण करना किसी भी भारी काम से कम नहीं था।

एक कैथोलिक कोया

मेरी शिक्षा जारी रही, मैं अपने आप को एक कैथोलिक मान लिया। यह प्रक्रिया बहुत पहले शुरु हुई थी। जिस प्रारंभिक विद्यालय में मैं पढ़ा, वह वास्तव में एक कॉन्वेन्ट जैसा था। मिस्सा निरंतर हुआ करता था। मेरे मम्मी – पापा ने इसका विरोध नहीं किया, क्योंकि एक निजी कैथोलिक विद्यालय की शिक्षा सर्वश्रेष्ठ मानी जाती थी।

साप्ताहिक दिनों में मैनें धर्मबहनों के साथ पढ़ा करता था, तथा रविवार को मैं मम्मी – पापा के ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च जाता था। परन्तु बहुभाषी जाफा में यह कोई गम्भीर समस्या नहीं मानी जाती थी। एक खास चर्च के प्रति वफादारी कोई महत्वपूर्ण बात – प्रतीत नहीं होती थी।

क्या मैं एक कैथोलिक था ? बिल्कुल। कैथोलिक धर्म ही मेरा आध्यात्मिक जीवन था सप्ताह में पांच दिन का मेरा समय, ध्यान, अध्ययन इसी में व्यस्त था। यह मेरी मनोवृत्ति बन गयी। वास्तव में मैं कॉन्वेन्ट में रहा, और इस कोया में रह कर मैं बाह्य दुनिया से बिल्कुल अलग हो गया।

दुर्भाग्य मुझें इस दुनिया से भी अलग रखा गया। मेरे बचपन की प्रारंभिक अवस्था से ही मुझको हकलाहट की समस्या थी। तिल भर का समाजिक दबाव या घबराहट से, मेरी हकलाहट और भी तेज होती, तथा यह मेरे लिये बहुत ही असहनीय थी। मित्र बनाना मेरे लिये मुश्किल था। कुछ बच्चों ने मेरी हँसी उड़ाई, और अन्य यों ही मुझ से दूर रहे।

विश्व घटनाएँ मैनें एक दम नहीं जानी – केवल उतनी ही, जितनी शिक्षकों ने मुझ से आशा की। अपितु कैथोलिक जीवन में मैं माहिर था। जैसे मेरे आगे की पढ़ाई लगतार होती रही, डे फ्रेर (धर्म बन्धुओं कालेज) में मेरी भर्ती हुई तथा मठ वासियों के द्वारा शिक्षित किया गया।

जब मैं एक नन्हा बालक ही था, तब से ही मैं अत्याधिक धार्मिक था।

मैनें प्रार्थना की, और प्रार्थनाओं की संम्भवतः आज कल प्रार्थना करने वाले कुछ मसीहियों से भी ज्यादा। मगर कैसे प्रार्थना करनी है यह मैनें इतना ही जाना कि हे हमारे पिता, प्रणाम मरिया, प्रेरितों का धर्म सार, आदि निर्धारित प्रार्थनाएं थीं।

बहुत बिरले ही मैनें प्रभु से बात की। जब मेरी कोई विशेष आवश्यकता पड़ी, मैनें उसको बताया। अन्यथा मेरा प्रार्थना जीवन बहुत संगठित था। एक दिनचर्या था।

एक सूत्र शायद ऐसा लगा, जब आप प्रार्थना करते हैं, तो आपको दर्द महसूस होना चाहिये। और यह तो सहज ही था। घुटनें टेकने के लिये वास्तव में कोई जगह नहीं थी। हर जगह केवल यरुशलेम के सफेद पत्थर ही पत्थर थे। अधिकतर घर इससे बनाये गये हैं। और जिन विद्यालयों में मैं पढ़ा, वहाँ तो दरी नहीं थी, सिर्फ सफेद पत्थर का सादा फर्श।

दरअसल, मैं इस विश्वास पर पहुँचा कि अगर आपको अपनी अनुनय – विनय के साथ दर्द नहीं रहता, तो ईश्वर आपकी नहीं सुनेगा और यही कि दर्द ही ईश्वर से कृपा दान प्राप्ति करने का एक सबसे अच्छा साधन है।

भले ही इस शिक्षा के साथ वस्तुतः कोई आध्यात्मिकता नहीं थी, फिर भी बाइबल की जो नींव मुझ में डाली गयी, उसका मैं अभी तक आदर करता हूँ। मैं अक्सर सोचता हूँ, कितने बच्चों को पुराना व्यवस्थान इब्रानी में सिखाया जाता है ? और हमारे कार्य क्षेत्रों की यात्राएँ परमेश्वर के वचन को हमारे जीवन में जीवंन्त करती हैं।

एक बार हम लोगों ने नेगेव की ओर सैर किया, जहाँ हम लोग इब्राहिम के द्वारा खोदे गये कुएँ के पास खड़े हो गये और उसके बारे में सीखा। वह अनुभव मुझमें हमेशा के लिये अमिट रहेगा।

उसका वस्त्र सफेद से भी सफेद था

मेरे जीवन में बहुत बार ईश्वर ने मुझ से दर्शन में बात की। जाफा के जीवन काल में ऐसा सिर्फ एक ही बार हुआ, जब मैं ग्यारह बर्ष की उम्र का एक बालक था। मैं वास्तव में यह मानता हूँ कि उसी समय से ईश्वर मेरे जीवन को बदलने लगा। मुझे वह दर्शन याद है मानो वह कल ही हुआ हो। मैनें यीशु को शयनकक्ष में प्रवेश करते देखा। उसने एक वस्त्र पहना हुआ था, जो सफेद से भी सफेद था और एक गाढ़े लाल रंग का लबादा उसके ऊपर से ओढ़ा हुआ था।

मैनें उनका बाल देखा। मैनें उनकी आँखों में देखा। मैनें उनकी हथेलियों में कीलों के निशान देखे। मैनें सब कुछ देखा।

आपको ज्ञात हो कि मैं यीशु को नहीं जानता था। मैनें ख्रीष्ट को मेरे दिल में आने को कभी नहीं कहा था। पर जब मैनें उनको देखा, उसी क्षण मैनें उनको पहचान लिया। मुझे मालूम हुआ कि यही यीशु थे।

जब ऐसा हुआ, मैं सोया हुआ था। लेकिन अचानक मेरे इस साधारण शरीर में एक अविश्वसनीस संवेदन महसूस हुआ जिसकी केवल ''बिजली'' की सिहरन वर्णित की जा सकती है। मुझे ऐसा लगा मानो किसी ने बिजली के तार के सॉकेट से जोड़ दिया हो। तब मैनें एक ऐसी झुनझुनी अनुभव की, जिसमें लाखों सुईयाँ मेरे तमाम शरीर में चुभती – त्वरित दौड़ती लगी।

और तब जब मैं एक बहुत गहरी नींद में था, प्रभु मेरे सामने आ खड़े हुऐ। उन्होनें अपनी सुन्दरतम आँखों से मेरी आँखों में आँखें डाल कर सीधे मेरी ओर देखा। वे मुस्कुराये, और उनकी बाँहें चौड़ी खुली थीं। उनकी उपस्थिति मैं महसूस कर सका। यह बहुत ही अद्वितीय था और इसे मैं कतई भूल नहीं पाऊँगा।

प्रभु ने मुझ से कुछ नहीं कहा। बस, यों ही मुझको देखते रहे। और तब वे ओझल हो गये।

तुरन्त मैं पूरी तरह जाग गया। उस वक्त मैं शायद ही समझ पाया कि क्या हो रहा था, पर वह एक सपना नहीं था। इस तरह की भावनाएँ एक सपने में नहीं होती है। ईश्वर ने मुझको एक ऐसे दर्शन का अनुभव करने दिया, जो मेरी तरुणाई में एक अमिट छाप डाल सके।

ज्यों ही मैं जागा, वह अद्वितीय संवेदन तब भी मुझ में रहा। मैनें अपनी आँखें खोली और चारों तरफ देखा, लेकिन वह तीक्ष्ण, जबरदस्त भाव तब भी मुझ में रहा। मैनें एकदम विक्षिप्त – सा अनुभव किया मैं एक पेशी भी नहीं हिला सका। एक बरौनी भी नहीं। मैं बिल्कुल निश्चेष्ट रह गया। इसके बावजूद मैं अपने काबू में था। इस अनोखी भावना में मैं आवृत्त हो गया – पर मुझ पर हावी नही हुई थी।

वास्तव में मैनें सोचा कि मैं कुछ कहूँ कि ''नही, मैं ऐसा नहीं चाहता'' और यह अनुभव मुझ से टल जाता। परन्तु मैनें कुछ नहीं कहा जब मैं जागता लेटा रहा, तब वह भाव भी मुझ में टिका रहा, और धीरे – धीरे लीन हो गया।

सुबह मैनें अपनी माँ को इस अनुभूति के बारे में बताया, और वह अब भी अपने उन शब्दों को याद करती है। उसने कहा ''तब तो तुम एक संत हो''

ऐसी घटनाएँ जाफा में लोगों के साथ नहीं हुई थी, चाहे वे कैथोलिक हों या ग्रीक ऑर्थोडॉक्स। बेशक, मैं संत बिल्कुल नहीं था, पर माँ ने विश्वास किया कि अगर यीशु मेरे पास आ गये, तो वे मुझे एक उत्कृष्ट सेवा के लिये अलग करते होंगें। जब ईश्वर मेरे जीवन से संबंध स्थापित कर रहा था, मेरे परिवार के भविष्य को हमेशा के लिये बदलने वाले अन्य तत्व भी कार्यरत थे।

पृथ्वी की छोर तक

गाजा से गोलेन की चाटियों तक

साठ के दशक में इस्त्राएल में रहते, मैं वहाँ के उग्र रुप लेते राजनीतिक तनाव से काफी वाकिफ हो सका। अरब का इस्त्राएल पर धावा उसके सीमा प्रातों के मिस्त्र से लेकर यरदन और सीरिया तक प्रायः रोज – रोज होता था तथा इस्त्राएली सेना भी अपने ही ढंग का जवाबी धावा लगातार करती थी।

सन् 1967 मई में इस्त्राएल और तीन अरब देशों ने अपनी सशस्त्र सेनाओं को एक संम्भावित युद्ध के लिये सतर्क किया। मिस्त्र की मांग पर संयुक्त राष्ट्रों के सैन्य दल गाजा स्ट्रिप और सिनाई पेन्निसुला को छोड़ कर लौट गये।

फिर पांच जून, 1967 को इस्त्राएली विमानो ने मिस्त्र, यरदन और सीरिया में हवाई – मैदानों पर हमला किया। यह छः दिवसीय युद्ध कहा गया था। एक ही हफ्ते में इस्त्राएलीयों ने अरबी वायु सेनाओं का सर्वनाश किया। इस्त्राएली सेनाओं ने गाजा स्टिप, सिनाई पेन्निसुला, वेस्ट बैंक और सीरिया की गोलेन चोटियों को अपने कब्जे में ले लिया। इस्त्राएल ने अरब के इस्त्राएल के वास्तविक राज्यक्षेत्र से भी तीन गुना अधिक क्षेत्र पर अचानक नियंत्रण कर लिया था।

वह दिन, 1968 का प्रारंभ, मैं कभी भी नहीं भूल पाऊँगा, जब मेरे पिता ने हमारे परिवार के सब को इकठ्ठा किया और कहा कि वह हम लोगों के लिये यहाँ से प्रवास करने की योजना बना रहे थे। उन्होने चिताया कृपया इसकी चर्चा किसी से नहीं करें, क्योंकि हमारे बाहर जाने के वीसा के साथ कुछ समस्या खड़ी हो सकती है।

शुरु में हमारी योजना बेल्जियम जाने की थी। पिता के कुछ रिश्तेदार वहाँ थे, और फिर फ्रेंच भाषी प्रदेश जाने का विचार ही बड़ा उत्तेजक लगा। इसके अतिरिक्त फ्रेंच ही मेरे स्कूली अध्ययन काल की भाषा थी।

इस दरमियान, एक शाम को केनडा दूतावास से एक सहचारी हमारे घर आये तथा केनडा के जीवन के संबंध में एक फिल्म दिखाया। टोरंटो बहुत प्रगतीशील नगर जैसा लगा। पिता के दो भाई वहाँ रहते थे। पर हमें संदेह था कि वे हमारे अधिकारिक समर्थक बनने में आर्थिक दृष्टि से सक्षम थे।

हमारे प्रस्थान से संबंधित समस्या दिनोंदिन बढ़ने लगी। एक बार मेरे पिता ने कहा कि पांच सालों के लिये हम शायद इस देश से निकलने में समर्थ नहीं होंगे।

ईश्वर के साथ मेरा समझौता

उसी समय जब हम सभी लोग प्रस्थान करने को उत्तेजित थे, मैं अपने घुटनों पर आ गया – यरुशलेम के उस सफेद पत्थर पर – और परमेश्वर से मैनें एक वायदा किया, ''हे प्रभु'', मैनें प्रार्थना की, ''अगर आप हमें निकाल लेंगे, तो मैं आपके लिये जैतून तेल का सबसे बड़ा मर्तबान ला दूँगा''। और मैनें आगे कहा, ''जब हम लोग टोरंटो पहुँचेगें, तब मैं उसे चर्च ले आऊँगा तथा आपको धन्यवाद स्वरुप चढ़ाऊँगा।''

मेरे अतीत के जीवन में ईश्वर के साथ ऐसा समझौता कोई नई बात नहीं थी। और जैतून तेल बड़ी मंहगी वस्तु थी। इसलिये मैनें वादा किया।

कुछ हफ्ते में केनडा दूतावास से एक आदमी ने मेरे पिता को बुलाकर कहा, ''श्रीमान् हिन्न, हम लोगों ने सारा काम पूरा कर लिया है – यह नहीं पूछना कि कैसे। आपके सारे कागजात नियमानुसार हैं, और आप जब भी चाहें, जा सकते हैं।''

इसमें कोई ज्यादा समय नहीं लगा। हम लोगों ने प्रायः अपनी जायदाद बेच दी और उत्तर अमेरिका में एक नयी जिन्दगी के लिये तैयार हो गये।

पवित्र देश में उन आखिरी दिनों में मुझ में एक तीव्र भाव था कि कुछ बड़ी घटना घटने को थी। मुझे यह मालूम था कि मैं एक विशेष नगर छोड़ रहा था, पर मुझे यह भी आभास था कि सर्वोत्तम मेरे भावी खजाने में छिपा था। योना तो इसी प्राचीन नगर जोप्पा – मेरा जाफा – के इस बन्दरगाह से ही प्रस्थान किया था। इसका नतीजा था, नीनवे की मुक्ति।

और कितनी बार – मैं उस ऊँचे किले पर चढ़ चुका था, जो उस बन्दरगाह के ऊपर से दिखता था। दीप ग्रह के समीप सन् 1954 में निर्मित एक फ्रान्सिसकन चर्च है। उसके बगल में ही शिमोन पतरस चर्मकार का घर है, जहाँ प्रेरित पौलुस कुछ दिनों तक रहा और वहाँ उसे एक दर्शन मिला, जिसने संसार को ही बदल डाला। ईश्वर की आवाज उसको यह कहती सुनाई पड़ी कि यहूदियों के साथ – साथ गैर – यहूदियों को भी चर्च में स्वीकार करें, और पतरस ने उत्तर दिया अब मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि ईश्वर भेद भाव नहीं करता। किन्तु हर एक राष्ट्र में जो उस पर श्रद्धा रखता और धर्माचरण करता है, वह ईश्वर का कृपा पात्र बन जाता है (प्रेरितों के काम 10:34 – 35)।

उसी समय से यीशु का संदेश जाफा से कैसरिया, और पृथ्वी के सीमाओं तक, सारी मानव जाति का आलिगंन करता हुआ, फैलता गया।

जैसे हम लोग हगेना सड़क से होकर लोद हवाई अड्डे की ओर से आगे बढ़े, मुझे संदेह हुआ, क्या मैं उस स्थान को पुनः देख पाऊँगा ? मुझे उन कैथोलिक धर्म बहनों की याद आ गयी जिन्होने मुझे बहुत लाड़ – प्यार से पढ़ाया था। क्या मैंनें आखिरी बार उनके चेहरे देखे थे।

हवाई जहाज की खिड़की से मैनें तेल अवीव पर वह अंतिम दृष्टि दौड़ाई – धूसर, सफेद घनों का वृहत विस्तार। मेरे पीछे सुदूर में धुन्ध – सी झलक रही यहूदिया की पहाड़ियाँ थी।

और ज्यों ही हम भूमध्य सागर के ऊपर से आगे उड़े जा रहे थे, मैनें जाफा को एक आखिरी अलविदा कहा। मेरा कंठ रुंध गया मैं चौदह वर्ष का था, और मेरे सम्पूर्ण अतीत जीवन में, बस, यह एक ही घर था जिसको मैनें जाना था।

छतरी मे आइसक्रीम

हिन्न परिवार का जुलाई 1968 में टोरंटो आगमन, एक अघोषित घटना थी। बस, यही तो मेरे पिता चाहते थे। काई स्वागत समिति हमसे मिलने नहीं आयी। और पहले से कोई नौकरी भी कहीं तय नहीं थी।

हम लोग अपनी पीठों में कपड़े लिये, अटैचीयों में थोड़ी संम्पत्ति, और जाफा में बिक्री संम्पत्ति से प्राप्त कुछ पैसे के साथ यहाँ पहुँचे। कुछ दिन बिताने के लिये इतना पर्याप्त था।

हमारा नया जीवन किराये के एक फ्लैट में शुरु हुआ। एक विदेशी संस्कृति में अचानक टपक पड़ना कितना बड़ा धक्का था। मैं कई भाषाओं में हकला सकता था, पर अंग्रेजी उनमें नहीं थी। एक, दो, तीन, बस, उतना ही हो गया। किन्तु पापा ने एक मामूली दर्खास्त भरने तक की पर्याप्त अंग्रेजी सीखी थी। और सफल हुआ। अंततः उन्होने, और कोई

नौकारी न पाकर, बीमा का एक विक्रेता बनने की चुनौती को स्वीकार किया।

मुझे नहीं मालूम था कि यह उन्होने एक बड़े परिवार के पालन – पोषण को उठाने के कारण किया था या लोगों से संबंध स्थापित करने के चारित्रिक वैशिष्ट्य के कारण। कुछ भी हो, जल्द ही इस नये पेशे में मेरे पिता बड़े सफल सिद्ध हुए। अधिक महिने नहीं हुए कि हमारा अपना ही एक नया घर हो गया। यह हम सभों के लिये एक बड़े गौरव की बात रही।

मेरी जीवन शैली तेजी से बदल गयी। निजी कैथोलिक विद्यालय के बदले मैं एक राजकीय उच्च विद्यालय, जॉर्जस वानियर उच्चतर माध्यमिक स्कूल गया। हालांकि स्कूल के अधिकांश छात्रों की अंशकालिक नौकारी थी, वही तो मैं भी करना चाहता था।

हम लोग टोरंटो के उत्तर योर्क भाग में रहते थे, और हमसे कुछ ही दूरी पर एक नया फेयरव्यू छतरी खुला था। मैनें एक छतरी में, जहाँ गुलमा और आइस्क्रीम बिकता था, दर्खास्त दी। यद्यपि मुझे इसका पूर्वानुभव नहीं था, फिर भी उन लोगों ने मुझे काम पर रख लिया। और प्रत्येक दिन स्कूल के बाद मैं वहाँ जाता था।

एक शनिवार को मैं एक किराना दुकान गया और मैनें प्रबंधक से पूछा क्या आप के पास जैतून का तेल है ? मुझे उसका सबसे बड़ा डिब्बा चाहिये। बिल्कुल। उसने एक बड़ा वाला डिब्बा मुझे लाकर दिया।

अगले दिन अभिमान के साथ मैं ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च गया और मैनें ईश्वर से की गई प्रतिज्ञा पूरी की। उस तेल को मैनें वेदी के सामने रखा और धीरे से कहा, हे प्रभु आपको धन्यवाद। इस नये घर में हमें सुरक्षित लाने के लिये, आपको धन्यवाद।

मेरा हृदय उस तेल के बर्तन की भांति पूर्ण रुप से भरा हुआ था।

उस छतरी में मैनें अपना काम किया। मेरी हकलाहट के कारण मैं किसी से भी ज्यादा बात नहीं करता था, पर मैं शुगर कॉन (कोन) में आइस्क्रीम भरते समय थोड़ा सनसनाता था। मैं बॉब नामक एक सहकर्मी के साथ काम करता था।

क्या बॉब का दिमाग फिर गया ?

सन् 1970 का वो दिन मैं कदापि नहीं भूलूँगा, जब मैं काम करने आया तो देखा कि बॉब ने कुछ विचित्र काम किया था। उस छोटी छतरी की दीवारों पर सभी जगह उसने बाइबल के पद लिखे पर्चे चिपकाये थे। मैनें सोचा कि उसका दिमाग खराब हो गया था।

मैं जानता था कि वह एक ईसाई था – ऐसा उसने मुझ से कहा था। लेकिन क्या यह हद से ज्यादा नहीं था ? मैनें मन नही मन कहा, क्यों वह ऐसा कर रहा है ? क्या यह मेरे लिये है ? मैं तो शायद उससे भी अधिक बाइबल जानता था।

आखिरकार मैनें उनसे पूछा, कागज के इन टुकड़ों का क्या मतलब हैं ? तुरंत ही वह मुझको गवाही देने लगा। मैनें सोचा कि वह कभी नहीं छोड़ेगा। और जब उसने समाप्त किया, तो मैनें उस सनकी से जितना संभव हो दूर रहने का संकल्प लिया।

लंबे समय तक मैनें उससे दूर रहने की कोशिश की। चूँकि हम दोनो को साथ – साथ काम करना था, इसलिये यह बिल्कुल असंभव था। इसके अलावा, बार – बार धर्म संबंधी विषय लाया करता था। पर यह उससे भी ज्यादा था। उसने मुझसे ''नया जन्म'' लेने के बारे में बात करना चाहा, जो मेरी सीमित शब्दावली में नहीं थी और न ही मेरे विचार से बाइबल में भी। अंत में बॉब ने छतरी की नौकरी छोड़ दी, परन्तु उसके अनेक दोस्त मेरे स्कूल में थे। और आगामी दो वर्षों तक मैनें उनसे दूर

रहने का पूरा प्रयास किया। मैनें सोचा, यह सनकियों का एक दल है। वे सनकी लगते, सनकी बोलते। वे मुझे पढ़ाये उन धर्म बहनों ठीक विपरीत थे।

जब मैं जार्जस वानियर स्कूल का एक सीनियर विद्यार्थी था, तब मेरे जीवन में दूसरी बार प्रभु से सामना हुआ। वे मुझसे मिलने के लिये मेरे कमरे में आये – इस बार यह एक अविस्मरणीय सपने की तरह था।

जाफा में जब मैं ग्यारह वर्ष का था तब यीशु के मेरे सामने खड़े होने के उस दर्शन ने मेरे जीवन में एक अमिट छाप छोड़ दी थी। लेकिन टोरंटो में बाइबल अध्ययन में डूबा हुआ नहीं था। हाँ, अब मैं चर्च जाता था। परन्तु अब जो मुझ पर घटने को था, वह उस छोड़े हुए क्षेत्र से बाहर आने का था। जिसकी मैनें कल्पना तक नहीं की थी। यह बिल्कुल अप्रत्याशित था, और मैं उस अनुभव से स्तंभित रह गया।

1972 फरवरी की उस ठंडी रात में मेरे शयनकक्ष में जो वस्तुतः हुआ, मैं आपसे कहना चाहता हूँ।

जैसे सपना आया, मैनें अपने को अंधेरे में एक लम्बी सीढ़ी से उतरता देखा। वह इतनी सीधी खड़ी थी कि मैनें सोचा मैं गिर जाऊँगा। और यह मुझे एक गहरे अंतहीनगर्त की ओर ले जा रहा था।

एक जंजीर से मुझे सामने के एक कैदी और पीछे के एक कैदी के साथ बांधा गया था। मैं एक कैदी की पोशाक में था। मेरे पैरों और कलाइयों पर भी जंजीरें थी। जितना आगे मैं देख सका मेरे आगे और पीछे एक अंतहीन पंक्ति कैदियों की थी।

तब उस धीमी रोशनी की डरावनी और धुंध – सी खाई में, मैनें दर्जनो छोटे – छोटे लोगों को चलते देखा। वह अजीब ढ़ंग के आकार के कानों युक्त शैतान के सदृश्य थे। मैनें उनके चेहरे देख नहीं पाये, तथा उनके रुप मुश्किल से देख सका। किन्तु हम लोग निश्चित रुप से सीढ़ी

से नीचे की ओर उनके द्वारा खींचें जा रहे थे, कसाई खाने की ओर लिये जा रहे पशुओं की भांति – या उससे भी बद्तर।

सहसा, ईश्वर का एक दूत वहाँ प्रत्यक्ष हो गया। ओह, वह तो देखने लायक एक अद्भुत दृश्य था यह आलौकिक जीव मेरे ठीक सामने मंडराने लगा, मात्र कुछ ही कदम आगे।

ऐसा दृश्य मैनें अपने जीवन में कभी नहीं देखा था, सपने में भी नहीं उस अंधेरे काले गर्त में एक दीप्तिमान एवं सुन्दर स्वर्गदूत।

ज्यों ही मैनें उसको फिर से देखा, उसने अपने हाथों से मुझको उसकी ओर आने का इशारा किया। तब उसने मेरी आँखों में देखा और मुझको बुलाया। मेरी आँखें उसकी आँखों में एक टक देखती रहीं और मैं उसकी ओर चलने लगा। तुरन्त ही मेरे हाथों और पैरों के सारे बंधन टूट कर गिर गये। मैं अपने सह कैदियों के साथ अब बंधा नहीं था।

दूत शीघ्रता से मुझे एक खुले दरवाजे से बाहर ले गया, और जिस वक्त मैं बाहर प्रकाश में पहुँचा, यह अलौकिक जीव मुझे हाथ पकड़ कर ले गया। उसने मुझे डॉनमिल्स सड़क पर उतार दिया – जार्ज वारनियर स्कूल के ठीक कोने पर स्कूल के दीवार के बिल्कुल करीब एक खिड़की के पास छोड़ दिया।

क्षण भर में दूत ओझल हो गया। और मैं पहले ही जाग गया और क्लास शुरु होने के पहले पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने के लिये स्कूल की ओर जल्दी चल पड़ा।

मैं पलक तक नहीं झपका सका

मैं वहाँ बैठा, सपने के बारे में सोच भी नहीं रहा था, छात्रों का एक छोटा दल मेरी मेज की ओर चल कर आया। मैं उन्हे तुरन्त पहचान गया। ये वे लोग थे, जो यीशु की बात को लेकर मुझे तंग किया करते थे।

इन्होने अपनी प्रातः कालीन प्रार्थना सभा में मुझको भाग लेने को कहा। वह कमरा पुस्तकालय के नजदीक था। मैनें सोचा, ठीक है, मैं उलटा इनसे पीछा लूंगा। एक छोटी सी प्रार्थना सभा है, मेरा क्या बिगड़ सकता है।

मैनें उत्तर दिया, ठीक है, और वे मेरे साथ प्रार्थना कक्ष में चले गये। यह एक छोटा ग्रुप था, केवल बारह या पन्द्रह लड़के। और मेरी कुर्सी ठीक बीच में थी।

एकाएक दल के सारे लड़को ने अपने हाथ ऊपर उठाये तथा वे कुछ अनोखी – सी विदेशी भाषा में प्रार्थना करने लगे। मैनें अपनी आँखें बन्द नहीं की। पलक तक मैनें नहीं झपका। ये लड़के सत्रह, अठ्ठारह, उन्नीस वर्ष की उम्र के थे – स्कूल के मेरे जाने – पहचाने बच्चे – जो कुछ अबूझ आवाजों में ईश्वर की स्तुती कर रहे थे।

अलौकिक भाषाओं में बात करते मैनें कभी नहीं सुना था, और मैं आवाक् रह गया। ऐसा सोचना कि बेन्नी यहाँ, एक राजकीय विद्यालय में एक सार्वजनिक संपत्ति पर, कुछ बड़बड़ाते धर्मातों के बीच, बैठा था, मेरी समझ के परे था।

मैनें प्रार्थना नहीं की। मैनें केवल निरीक्षण किया।

अब आगे जो हुआ उसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सका। प्रार्थना करने की एक आकस्मिक प्रेरणा ने मुझे चौंका दिया। लेकिन मुझे सच में नहीं मालूम था क्या बोलना है। प्रणाम माता मरियम मेरे ख्याल से असंगत लगा। पापी की प्रार्थना मुझे सिखाई नहीं गयी थी – मेरी सारी धर्मशिक्षा क्लासों में भी नहीं। एक ही वाक्य मुझे याद था, जो मैनें ''यीशु के लोगों'' के सम्पर्क में सीखा था, ''तुमको यीशु से मिलना ही है।'' ये शब्द मेरे लिये अप्रासंगिक भी लगे, क्योंकि मैं सोचता था, मैं उसको जानता था।

यह एक नाजुक स्थिति रही। मेरे साथ कोई प्रार्थना नहीं कर रहा था और न ही मेरे लिये। बावजूद इसके मैं एक सघन आध्यात्मिक माहौल से घिर गया, जिसका इसके पूर्व मैनें कभी अनुभव नहीं किया था। क्या मैं एक पापी था ? मैं ऐसा नहीं सोचता, बस, मैं एक अच्छा साधारण कैथोलिक बालक था, जिसने प्रत्येक रात को प्रार्थना की और पापों का अंगीकार किया, भले ही मुझे ऐसा करने की जरुरत थी या नहीं।

लेकिन उस वक्त मैनें अपनी आँखें बन्द कर ली और मात्र चार शब्द कहे, जिन्होने मेरे जीवन को हमेशा के लिये बदल दिया, ''प्रभु यीशु, लौट आ।''

मुझे यह नही पता था कि मैनें ऐसा क्यों कहा, पर उतना ही मेरे मुँह से निकल सका मैनें उन शब्दों को बार – बार दोहराया, ''प्रभु यीशु, लौट आ। प्रभु यीशु, लौट आ।''

क्या मैनें सोचा कि वे मेरा घर छोड़ कर या जीवन से चले गये थे? सच में मुझे नहीं मालूम। किन्तु जिस वक्त मैनें ये शब्द उच्चारित किये, एक भाव मुझमें आ गया – यह मुझको ग्यारह वर्ष की उम्र में घटित उस निश्चेष्टता की ओर ले गया। यह उतना तीव्र नहीं था, पर उतनी ही शक्ति का वोल्टेज मैं महसूस कर सका। यह मेरे पूरे शरीर में दौड़ रहा था।

मैनें वास्तव में यही सोचा कि इस शक्ति का आवेश मुझे शुद्ध कर रहा था – तत्काल अन्दर – बाहर दोनों। मैनें पूर्ण रुप से शुद्ध, निष्कलंक एवं निर्मल महसूस किया।

अचानक मैनें अपनी आँखों से यीशु को देखा। वह क्षण भर में हुआ। वे वहाँ थे। यीशु।

आठ बजने में पांच मिनट

मेरे आसपास के लड़के शायद यह नहीं जान सके कि मेरे जीवन में क्या हो रहा था। वे सब प्रार्थना कर रहे थे। तब एक – एक कर, वे कमरे से निकल कर अपने – अपने क्लास जाने लगे।

सुबह आठ बजने में पाँच मिनट बाकी था। इसी समय मैं वहीं बैठ कर रो रहा था। मुझे नहीं मालूम था कि क्या करुँ या क्या कहूँ।

उस वक्त मैनें इसे समझा नहीं, पर यीशु मेरे लिये उतने ही वास्तविक हो गये जितनी की मेरे पाँव तले की यह जमीन। मैनें असल में प्रार्थना नहीं की, उन चार शब्दों को छोड़कर। परन्तु मैनें इतना निश्चय ही जाना कि उस फरवरी की सुबह में जो घटना घटी, वह बिल्कुल असाधारण थी।

इतिहास कक्षा के लिये प्रायः देर हो चुकी थी। यह मेरे मन पसन्द विषयों में एक था; हम लोग चीनी क्रांति पढ़ रहे थे। परन्तु टीचर को नहीं सुन पाया। जो कुछ कहा गया मुझे स्मरण नहीं। उस सुबह जो भाव आरम्भ हुआ मुझे नहीं छोड़ रहा था। जब भी मै अपनी आँखें बन्द करता, वह वहाँ थे – यीशु, और जब मैं अपनी आँखें खोलता, वह तब भी वहीं थे। प्रभु के चेहरे का वह रुप मुझको छोड़ता नहीं था।

सारा दिन मैं अपनी आँखों से आँसू पोछता रहा। और केवल एक बात बोलता रहा यीशु, मैं आपको प्यार करता हूँ। यीशु मैं आपको प्यार करता हूँ।

मैं क्लास के दरवाजे से बाहर निकला और बगल के रास्ते से चल रहा था, मैने पुस्तकालय की खिड़की को देखा तो सभी टुकड़े एक निश्चित स्थान पर जमने लगे।

वो स्वर्गदूत। वो सपना। सब कुछ फिर से वास्तविक हो गया।

ईश्वर मुझ से क्या कहना चाहता था ?

बेन्नी को क्या हो रहा था ?

अध्याय 3

''परम्परा, परम्परा''

मैनें अपने शयन कक्ष में प्रवेश किया, चुम्बकित जैसा, मैं उस बड़ी काली बाइबल की ओर खिंच गया। हमारे घर में यह एक ही बाइबल थी। मम्मी – पापा के पास एक भी नहीं थी। मुझे पता नहीं कि यह कहाँ से आयी, पर मुझे जहाँ तक स्मरण है, यह मेरी ही थी।

जब से केनडा में हमारा आगमन हुआ, तब से इसके पन्ने पलटे नहीं गये थे, पर अब मैनें प्रार्थना की, ''प्रभु आपको मुझको यह बताना होगा कि आज मुझे क्या हुआ है।'' मैनें बाइबल खोली और भूखे आदमी के समान जिसको एक पाव रोटी दी गई है, उसका एक – एक पन्ना खाने लगा।

पवित्र आत्मा मेरा टीचर बन गया। यह मुझे उस समय मालूम नहीं था, पर दरअसल वहीं तो एक चमत्कारिक रुप में होने लगा। ऐसा तो, प्रार्थना सभा के उन लड़कों ने नहीं कहा, अब बाइबल यही कहती है। वे मुझे कुछ नहीं बोले। वस्तुतः उन्हे कुछ पता ही नहीं था कि गत चौबीस घन्टों में क्या घटित हुआ था, और निश्चय ही, मैनें अपने मम्मी – पापा को एक शब्द भी नहीं कहा।

मैनें सुसमाचार पढ़ते हुए आरम्भ किया। मैनें अपने को जोर से पढ़ते सुना? ''यीशु मेरे दिल में आइए। कृपया, हे प्रभु, यीशु मेरे दिल में आइए।''

वचन पर वचन पढ़ते – मैनें उद्धार की योजना को खुलते देखा। यह ऐसा था मानो मैनें बाइबल इसके पहले कभी पढ़ी नहीं थी। हे मेरे दोस्त यह तो सजीव था। एक – एक शब्द सोते के भीतर से बुलबुलों की भांति निकलने लगे, और मैं मुफ्त में उसमें से पी रहा था। अंततः सुबह तीन या चार बजे एक अंनत शांति के साथ, जो मैनें इसके पहले कभी अनुभव नहीं की थी, मैं सो गया।

सम्पत्ति

अगले दिन मैनें उन धर्मांतों को ढूँढ़ निकाला और कहा, ''हे, मैं गिरजा जाना चाहता हूँ आप मुझे अपने साथ ले चलें।'' उन्होने साप्ताहिक प्रार्थना सभाओं के बारे में मुझे बताया, जिसमें वे लोग भाग ले चुके थे, और दो दिन बाद उन्होने मुझे वहाँ ले चलने का वादा किया।

बृहस्पतिवार की रात को मैनें अपने को उस ''कब्र तहखाना'' में पाया। उन्होने प्रार्थना सभा का यही नाम रखा था। यह प्रार्थना सभा स्कूल में सुबह हो रही उस प्रार्थना के समान थी – लोग अपनी बाँहे ऊपर उठा कर स्तुति कर रहे थे। हालांकि इस बार मैनें भी उसमें ऐसा करते भाग लिया।

''यहोवा जायरे, मेरे पालन हारा, उसकी कृपा ही मेरे लिये पर्याप्त है।'' इसे उन्होने बार – बार गाया। मैनें यह गाना पहली बार सुना मुझे पसन्द आया, और जब मुझे यह मालूम हुआ कि यह गाना पादरी की पत्नी मेर्ला वाट्सन ने ही लिखा था, तब से मैनें इसे और भी अधिक पसंद किया। उसका पति मेर्व, ही यहाँ के अनन्य भेड़ का चरवाहा था।

यह तुमड़ी (कब्रतहखाना) यहाँ के गिरजा का प्रतिनिधि दल नहीं था। यहाँ प्रार्थना के लिये ये लोग बहुत उत्साही ईसाई थे, जो प्रत्येक बृहस्पतिवार को संत पौल महा गिरजा में मिला करते थे। ये टोरंटो के मुख्य बाजार में स्थित ऐंग्लिकन चर्च के ईसाई थे।

यह ''यीशु क्राँति'' के दिन थे जब इन तथा कथित हिप्पियों को अपने बाल कटवाने में जितनी देर लगती है, उससे भी जल्दी मुक्ति पाने का दावा करने वाले थे। जरा सोचिये, मैनें तो एक नाई की कुर्सी बहुत दिनो से नहीं देखी है।

मैनें चारों तरफ दृष्टि दौड़ायी। वह जगह मेरे जैसे बच्चों से खचाखच भरी हुई थी। आपको यह देखना चाहिये था। वे प्रभु के सामने उछलते कूदते, नाचते – गाते हर्षोल्लास कर रहे थे। यह मेरे लिये विश्वास करना भी मुश्किल था कि क्या ऐसा कोई स्थान था। पर कैसा भी हो, उसी पहली रात से ही मुझको लगा कि मैं उनका हूँ।

''उधर ऊपर जा''

प्रार्थना सभा के समापन पर, मेर्व वाट्सन ने कहा, ''मैं चाहता हूँ कि आप लोगों में जो – जो सामूहिक पाप स्वीकार करना चाहते हैं, वे सब आगे आयें। जैसे आप लोग यीशु को अपने दिल में आमंत्रित करेंगे, हम लोग भी आपके साथ प्रार्थना करेंगे।''

मैं काँपने लगा। लेकिन मैनें सोचा, मुझको नहीं लगता कि मैं वहाँ जाऊँगा, क्योंकि मेरी मुक्ति हो चुकी है। मुझको मालूम था कि उस सोमवार को जब आठ बजने में पांच मिनिट बाकी था तब प्रभु ने मेरे जीवन को संम्भाल लिया था। आज तो बृहस्पतिवार है।

आपका अंदाज सही निकला। कुछ ही पलों में मैनें देखा कि मैं आगे उस मंच की ओर तेजी से जा रहा था। मुझे नहीं पता कि मैनें ऐसा क्यों किया। पर मेरे भीतर कोई कह रहा था, ''उधर ऊपर जा।''

यह ठीक वही वक्त था जब एक एंग्लिकन चर्च में एक करिश्माई प्रार्थना सभा के दौरान, ग्रीक आर्थोडॉक्स घराने के इस साधारण ईसाई बालक ने यीशु को अपने दिल से स्वीकार करने के लिये एक सामूहिक पाप स्वीकार किया। ''यीशु'', मैनें कहा, ''मैं चाहता हूँ कि आप मेरे जीवन के मालिक बन जायें।''

इस महान घटना से पुण्य देश की कोई तुलना नहीं। यीशु जहाँ रहा करते थे, उससे भी कितना श्रेष्ठ है, वह स्थान, जहाँ यीशु थे।

उस रात जब मैं घर पहुँचा, मैं प्रभु कि उपस्थिति से इतना ओत – प्रोत हो गया कि मैनें वहाँ जो घटा था उसके संबंध में अपनी माँ को बताने का निश्चय किया। (पापा को बतलाने की मुझमें हिम्मत नहीं थी)।

''माँ, आपको बताने के लिये एक खास खबर है, मैं फुसफुसाया, मैं मुक्त किया गया।''

पलभर के लिये उसका मुँह खुला ही रह गया। उसने घूरते और बुदबुदाते ''पूछा, किससे मुक्ति?'' मेरा यकीन कीजिये, मैनें कहा, आप समझ जायेंगी।

शुक्रवार को सुबह और सारा दिन – स्कूल में, छतरी में, जहाँ कहीं भी मैं गया, एक तस्वीर मेरे मन में आती रही। मैनें अपने को प्रचार करते देखा। पर कल्पनातीत था, पर मैं इस बिम्ब को मिटा नहीं सका। मैनें लोगों की भीड़ देखी। और मैं एक सूट पहने बाल तरतीब से जमे और साफ – सुथरा, एक तूफान को प्रचार कर रहा था।

उसी दिन मैनें अपने उस सनकी दोस्त, बॉब, को देखा, जिसने एक दिन छतरी की तमाम दीवारों पर बाइबल के पर्चे चिपकाये थे। मैनें उसे उस सप्ताह में जो घटा सारांश में बताया। मैनें उससे कहा, मैं अपने स्वयं को प्रचार करते देख रहा हूँ। मैनें कहा ''बॉब'' ''पूरे दिन यह ऐसा ही था, मैं अपने दिमाग से विशाल खुली हुई हवा की रैली, स्टेडियम में, चर्चों में तथा संगीत हॉल में प्रचार करते अपने स्वयं की तस्वीर को मिटा नहीं पा रहा हूँ।'' हकलाते मैं बोला, ''मैं, जितनी दूर आँख देख सके, लोगों को देखे जा रहा हूँ। मुझे लगता है मेरा दिमाग खराब हो गया है! तुम क्या सोचते हो इसका क्या अर्थ है ?''

बस, यहाँ तो एक ही बात हो सकती है, वह बोला, ईश्वर तुमको एक महान सेवकाई के लिये तैयार कर रहा है। मैं सोचता हूँ कि यह बहुत ही सराहनीय कार्य है।

निर्वासित

मुझको घर में भी ऐसा प्रोत्साहन नहीं मिला। हाँ, वास्तव में, प्रभु जो कर रहे थे, कदाचित मैं उन्हे बता नहीं पाया।

वो हालात डरावना था।

अपमान और लज्जा

मेरा सारा परिवार मुझे परेशान करने और मेरी हँसी उड़ाने लगा। यह बहुत ही भंयकर था। मैनें अपने पापा से यह आशा की थी; पर मम्मी से नहीं। जब मैं बढ़ रहा था, तो उसने मुझे बेहद प्यार किया था। उसी प्रकार मेरे भाइयों और बहनों ने भी किया था। लेकिन अब उन्होने मेरी अवहेलना की – एक घुसपैठिया की तरह जो सदा एक गैर रहा।

''परम्परा! परम्परा!'' फिड्लर ऑन द रुफ गाना कहता है। अगर एक पूर्वीय व्यक्ति परम्परा तोड़ता हो, तो उसे एक अक्षम्य अपराध किया है। मुझे संदेह है कि एक पाश्चात्य व्यक्ति वास्तव में इस बात की गम्भीरता समझेगा या नहीं। वह इस परिवार के नाम पर एक कलंक है। और उसकी क्षमा नहीं दी जा सकती।

परिवार ने मुझसे कहा, ''बेन्नी, तुम हमारे परिवार का नाम बिगाड़ रहे हो।'' उन्होने मुझसे आग्रह किया कि मैं उनके परिवार की इज्जत

मिट्टी में नहीं मिलाऊँ। मेरा पिता एक मेयर थे और उन्होने वह बात मुझे याद दिलायी। ''परिवार का नाम'' दाँव पर था।

कृपया मुझे समझें, जब मैं यह कहता हूँ कि एक व्यक्तिगत मसीही धर्म में ढ़ले जाने में शायद ग्रीक आर्थोडॉक्स तथा अन्य उच्च श्रेणियों के पूर्वीय चर्च के लोग सर्वाधिक कठिन होते हैं।

जब मैं नया जन्म प्राप्त मसीही बन गया, तो यह उनके लिये एक शर्मनाक बात थी। क्यों ? क्योंकि ये मानते हैं कि ये ही असली ईसाई हैं। और इसको प्रमाणित करने के लिये इनके पास ऐतिहासिक अभिलेख हैं। ये अन्य लोंगों से भी लंबे अरसे से मसीही रहे हैं।

परन्तु यही तो समस्या है, और मैं इसी के साथ के साथ ही पाला – पोसा गया। इनका विश्वास आडंबर, धार्मिक अनुष्ठान, और धर्म सिद्धातों की दृष्टि से लंबा है, पर ईश्वर के आध्यात्मिक अनुभूति की दृष्टि से छोटा है। शक्ति का अभाव है। और इसके फलस्वरुप प्रभु से सुनना अथवा पवित्र आत्मा से संचालित होना आदि बातों को समझने की इनमें ग्राह्य – क्षमता नहीं है।

यह तो स्पष्ट था कि अगर मैं अपने ही घर में रहा होता, तो यीशु ख्रीष्ट के बारे में बातें करने के सारे रास्ते मुझको बंद कर देने होते।

कैसा भी हो, मेरे इस नये विश्वास के जोश को कोई भी ठंडा नहीं कर सका। मैं कभी नहीं बुझने वाले एक जलते अंगारे की भांति था।

बड़े भोर में ही मेरी बड़ी बाइबल खुली हुई थी। पवित्र आत्मा वचन के मर्म को निरंतर व्यक्त करता रहा। परन्तु उतना पर्याप्त नहीं था। हर रात, जब – जब मैं परिवार वालों की नजर से बच सका, तब – तब मैं चर्च समारोह, युवा सह प्रार्थना, या प्रार्थना सभा में जाता था। और बृहस्पतिवार रात को मैं उस तुमड़ी (कब्र तहखाना) में लौट आता था।

मैं उस दिन की याद कभी नहीं मिटा पाऊँगा, जब मैनें ''यीशु'' के बारे में घर में बताया। मेरे पापा ने सीधे आकर मेरी गाल पर थप्पड़ मारा। मुझे दर्द हुआ। नहीं, इस बार यरुशलेम का वह सफेद पत्थर नहीं था। यह एक दूसरी तरह का दर्द था लेकिन जो चोट मैंनें झेली, वह मेरे परिवार के लिये थी। उनको मैं बहुत प्यार करता और उनकी मुक्ति के लिये बहुत यंत्रणा में था।

वस्तुतः यह मेरी गलती थी। मेरे पिता ने मुझे चेतावनी दी थी, अगर तुम फिर से एक बार यीशु का नाम लोगे, तो देख लेना, बुरी तरह पछताओगे। वह विद्वेष से गुर्राए उसने मुझको घर से बाहर निकालने की धमकी दी।

मैं अपनी छोटी बहन, मेरी से यीशु के बारे में बताने लगा। किसी प्रकार मेरे पापा को इसकी भनक मिल गयी, उनका क्रोध और भी भड़क उठा। उसने मुझको अपनी बहन से आध्यात्मिक बातें करने से सदा के लिये मना किया।

मनोचिकित्सक की आवश्यता

मेरे भाई लोग भी मुझे सताने लगे। उन्होने मुझे आकाश के नीचे के सारे नामों से पुकारा – और पाताल के कुछ नामों से भी। ऐसा बहुत लंबे समय तक होता रहा। अपने कमरे में मैनें प्रार्थना की, हे प्रभु, क्या यह कभी खत्म होगा। क्या वे आपको कभी जान पायेंगे ?

ऐसी नौबत आ गयी कि मेरे घर में एक भी सदस्य ऐसा नहीं था जिससे मैं बातचीत कर सकूँ। निर्वासित किये जाने की परिभाषा जानने के लिये मुझको और कहीं जाने की जरुरत नहीं पड़ी।

उन्होने मेरी दादी को इस्त्राएल से विमान से बुलाया सिर्फ इतना बताने के लिये कि मेरा दिमाग फिर गया था। तुम परिवार के लिये ग्लानि हो वह बोली क्या तुम समझते नहीं कि तुम परिवार को शर्मिन्दा कर रहे हो। ''मेरे पिता ने मनोवैज्ञानिक से मेरी मुलाकात निर्धारित किया स्पष्ट है कि उन्होने सोचा कि मेरा दिमाग फिर गया है। और डॉक्टर का क्या निगमन ?'' शायद आपका बेटा कुछ नयी चुनौतियों का सामना कर रहा है। वह उससे निकल आयेगा।

मेरे पिता की अगली चाल मेरे लिये एक नौकरी तलाशना थी, ताकि मैं अपने काम में इतना व्यस्त रहूँगा कि मुझे इस यीशु के लिये कोई फुर्सत नहीं होगी। वे अपने एक मित्र के पास गये और बोले, ''मैं चाहूँगा कि आप मेरे बेटे, बेन्नी के लिये एक नौकरी दें।''

पापा मुझे उस आदमी के पास कार में ले गये, और जब मैं भीतर गया, तो पापा कार में इंतजार करते रहे। वह आदमी एकदम अभद्र, बहुत कठोर और घटिया स्वभाव का था। जिसका मैनें पहले कभी सामना नहीं किया था। यहाँ दो मत नहीं थे कि मैं ऐसे व्यक्ति के लिये काम नहीं कर सकता था।

मैं कार में वापस आया, और बोला, ''पिता जी, मैं उसको मेरे मालिक के रुप में कभी नहीं मान सकता।'' मुझे सच में उस दिन पापा के प्रति दया आयी। उसकी आशा लगभग खतम हो रही थी। उसने कहा, ''बेन्नी तुम मुझसे क्या चाहते हो ? बताओ, यह क्या है ?''

''तुम जो कुछ भी चाहो, मैं करने को तैयार हूँ, अगर तुम अपने उस यीशु को कृपया छोड़ दोगे।''

''पापा'', मैनें कहा, ''आप जो भी चाहें मुझ से मांग सकते हैं, पर मैनें वह जो पाया है, उसे छोड़ने से पहले मरना पसंद करुँगा।''

यह बिल्कुल एक अप्रिय दृश्य था। मेरा अपना स्नेही पिता एक पराये व्यक्ति में बदल गया। अब उसकी ओर से मुझको केवल घ्रणा की बौछारें, शब्दों की फटकारें मिलती थी।

अगले दो सालों के लिये मेरे और मेरे पिता के बीच में कोई बातचीत नहीं हुई थी। खाने के समय वह मेरी ओर नहीं देखते थे। मै बिल्कुल उपेक्षित था। अंत में यह यहाँ तक हो गया कि शाम के समय परिवार के साथ बैठ कर समाचार देखना भी असहनीय हो गया।

इसलिये मैनें क्या किया ? मैं अपने कमरे में ही रहा। किन्तु अतीत की ओर झांकते वक्त मैं देख सकता हूँ कि प्रभु को मालूम था कि वे सच में क्या कर रहे थे। मैनें सैकड़ों – हजारों घन्टें प्रभु के साथ अकेल बिताये। मेरी बाइबल हमेशा खुली रहती। मैनें प्रार्थना की। मैनें पढ़ा। मैनें आराधना की। मैं उस स्वर्गीय मन्ना से संतृप्त हुआ जो आगामी वर्षों में भी मेरे लिये जरुरी था।

मुझे प्रभु की आज्ञा माननी चाहिये

अब गिरजा जाना एक जटिल समस्या थी। मुझमें जाने की प्रबल इच्छा थी, पर पापा ने कहा, बिल्कुल नहीं। वास्तव में पापा और मेरे बीच में एक मात्र बातचीत केवल यही थी, प्रभु के घर के संबंध में बहस।

माता – पिताओं की बातें नहीं मानना यह पूर्वी लोग सोच ही नहीं सकते। परन्तु अब मैं लगभग इक्कीस साल की उम्र का हो गया। और उस रात की बात मुझे एकदम स्पष्ट रुप से याद है, जब मैनें सारी हिम्मत को समेटते हुए धीरता से पापा से कहा, ''आपकी सारी बात मैं मानूँगा, लेकिन गिरजा जाने वाली बात पर मैं आपकी बात नहीं मानूँगा। मुझे प्रभु की आज्ञा माननी चाहिये।''

वे अवाक रह गये। आप सोच सकते हैं कि मानो किसी ने उस पर गोली चलाई। वह और भी क्रुद्ध होने लगे।

आदर के कारण, मैनें आज्ञाकारी रहने का अत्याधिक प्रयास किया। मैं उससे पूछता था, क्या आज रात को मैं बैठक में जा सकता हूँ? वह बोलते थे नहीं, और मैं अपने कमरे में जा कर प्रार्थना करता था, हे प्रभु, कृपया, उसका मन बदल दें।

तब मैं फिर से नीचे जाकर पूछता था क्या मैं जा सकता हूँ?

नहीं, वह गुर्राते गये। और फिर मैं लौट कर ऊपर कमरे में चला जाता था।

वे थोड़ा – थोड़ा नरम होने लगे। उन्हे मालूम था कि यह लड़ाई वे हारने वाले। तुमड़ी ने (कब्र तहखाना) रविवार की प्रार्थना समारोहों के लिये किराये पर दूसरा मकान ले लिया, और मैं ठीक वहीं हाजिर हो गया। बाइबल अध्ययन मंगलवार और शुक्रवार को थे, और शनिवार रात को युवा प्रार्थना थी। ये बैठकें मेरा सम्पूर्ण जीवन बन गयी।

हृदय परिवर्तन के दो वर्षों के पश्चात् मेरा आध्यात्मिक विकास शून्याकाश में ग्रहपथ की ओर उड़ने वाले रॉकेट की तरह गतिशील हो गया। 1973 के अंत तक मेर्व और मेर्ला वाट्सन मुझे उनके साथ मंच पर प्रार्थना समारोहों में आराधना और गाने की अगुवाई में सहायता करने हेतु बुलाने लगे थे। हालांकि मैं तो समाज के समक्ष बोल नहीं सकता था।

जिम पॉयन्टर, उत्साही फ्री मेथोडिस्ट पादरी, ने वहाँ मुझे देखा था। और एक दिन वह उस छतरी में, जिसमें मैं काम कर रहा था, प्रभु के बारे में यों ही बात करने आये। यही समय था जब उन्होने मुझे उनके साथ पिट्सबर्ग कुलमन की सभा में जाने को आमंत्रित किया था।

उस सभा के बाद पवित्र आत्मा के साथ मेरी व्यक्तिगत मुलाकात चौंकाने वाली थी। लेकिन कुछ दिनों के पश्चात् ही मैं ईश्वर के प्रकाशन के इन नियमों को समझ सका।

इसी दरमियान मैनें अपनी नौकरी बदल दी। मैनें टोरंटो में कैथोलिक स्कूल बोर्ड के लिये फाइल रखने वाले एक क्लर्क की नौकरी स्वीकार की। मुझे अच्छी तरह मालूम था कि उन्होने कभी – कभी मेरे बारे में ताज्जुब किया था। मेरे चेहरे पर हमेशा एक मुस्कान थी यह सोचकर कि ईश्वर मेरे जीवन में क्या – क्या कर रहा था।

फाइल का काम समाप्त होते ही, मैं घर जाता और ऊपरी मंजिल की ओर दौड़ पड़ता और उससे बात करना आरम्भ करता, हे पवित्र आत्मा, मैं इधर लौट कर आपके साथ अकेले रहने में बेहद खुश हूँ। जी हाँ, वे हमेशा मेरे साथ थे, और मेरा शयनकक्ष एक विशेष, पुण्य स्थान बन गया। जब मैं काम पर नहीं जाता, तब मैं पूरा दिन घर में उसके साथ यों ही एक व्यक्तिगत संपर्क में रहता था।

मैं क्या कर रहा था ? एक सहभागिता। पवित्र आत्मा के साथ सहभागिता। जब मैं काम पर नहीं होता, और न ही कमरे में, तब मैं चर्च में रहने की कोशिश करता। किन्तु मैंनें किसी को भी नहीं बताया कि मुझे क्या हो रहा था।

सुबह, जब मैं घर से निकलता, तब वे भी मेरे साथ निकलते। सचमुच में अपनी बगल में मैनें किसी को हमेशा अनुभव किया। बस इससे बात करने का एक आवेग मुझमें था। परन्तु मैं यह नहीं चाहता था कि लोग मुझे पागल समझें। काम पर भी, ऐसे समय थे जब मैनें कुछ बातें उससे फुसफुसा कर कीं। दोपहर के भोजन पर वे मेरे साथी थे। लेकिन दिन प्रतिदिन, जब मैं घर पहुँचता, मैं उन सीढ़ियों पर कूदते चढ़ा, भीतर

से दरवाजे बंद किये, बोलता था, अब हम अकेले हैं। तथा मेरा आध्यात्मिक सफर जारी रहता।

कार में अभिषेक

यह मुझे समझाने दें कि मैं बहुधा उनकी परिस्थिति से अवगत नहीं था। मुझे ज्ञात था कि वे मेरे साथ थे, लेकिन उनके साथ इतना आदि हो गया कि उन मार्मिक क्षणों में उत्पन्न बिजली – सी सिहरन मुझे नहीं होती थी। किन्तु दूसरों ने अनुभव किया, अनेक बार, जब मेरे दोस्त मुझसे मिलने आते, तो वे पवित्र आत्मा की उपस्थिति में रोने लगते थे।

एक दिन की बात है, जिम पॉयन्टर ने मुझको यह कहने के लिये बुलाया, मैं आपको लेकर एक मेथोडिस्ट चर्च ले जाना चाहता हूँ, जहाँ मैं गाने जा रहा हूँ। अगर आप चाहें तो मेरे संग गा सकते हैं। मैं गायक बिल्कुल नहीं था, पर कभी – कभी उसे मदद देता था।

उस दिन दोपहर को फिर एक बार मैं ईश्वर के आत्मा के अभिषेक में तल्लीन हो गया। तब मैनें जिम को भोंपू बजाते सुना। मैं सीढ़ी से नीचे उतरा और कार की ओर दौड़ पड़ा। वास्तव में मैनें प्रभु की उपस्थिति को भी मेरे साथ दौड़ती हुई अनुभव की।

जैसे ही कार की अगली सीट पर उछल कर बैठा और दरवाजा बंद किया, वैसे ही जिम रोने लगा। वह उस गाने का अंतरा गाने लगा, ''हाल्लेलूया! हाल्लेलूया! उसने मेरी और मुड़ कर कहा, ''बेन्नी, मैं पवित्र आत्मा को इस कार में महसूस कर सकता हूँ।''

जरुर, उसकी उपस्थिति इस कार में नहीं, तो और कहाँ होगी, मैंनें कहा। मेरे लिये यह तो एक सामान्य बात बन गयी थी। परन्तु जिम शायद ही गाड़ी चला सका। वह प्रभु की उपस्थिति में लगातार रोता रहा।

एक बार, जब मैं अपने कमरे में पवित्र आत्मा से बातचीत कर रहा था, मेरी माँ हॉल का रास्ता साफ कर रही थीं। जैसे ही मैं बाहर आया, वैसे ही वह पीछे फेंकी गयी। किसी ने उसको दीवार की तरफ ढकेल दिया था। मैनें पूछा, आपको क्या हो गया, मम्मी ? उसने जवाब दिया, मुझे नहीं पता ? हाँ, प्रभु की उपस्थिति ने उसे ढकेल दिया था।

मेरे भाई आपको बतलाएंगे कि जब वे मेरे नजदीक आते तो उन्हे नहीं पता था कि उन्हे क्या हो जाता था – लेकिन उन्होने कुछ असामान्य स्थिति का अनुभव किया था।

जैसे – जैसे वक्त गुजरता गया, युवको के साथ गिरजा में मजा करने जाने की इच्छा लुप्त हो गई। बस, मैं ने प्रभु के साथ ही रहना चाहा। बार – बार मैंनें कहा, हे प्रभु, दुनिया की सारी चीजों की अपेक्षा मैं यही चाहूँगा। उनको अपना खेल, अपना मनोरंजन, अपना फुटबाल सब मुबारक हो – मुझे इसकी जरुरत नहीं है।

मैं वही चाहता हूँ, जो आप इस वक्त मेरे पास हैं, मैनें प्रभु से कहा। जो भी कुछ है उसको जाने न दे। मैं और भी गहराई से समझने लगा कि पौलुस की पवित्र आत्मा की सहभागिता के लिये इच्छा का क्या तात्पर्य है।

हेन्री, मेरी, सैमी और विल्ली

अब, मेरे परिवार के सदस्य भी सवाल कर रहे थे। परमेश्वर की आत्मा हमारे घर में इतनी समा गई थी कि मेरे भाई बहनों को भी आत्मिक भूख महारत से होने लगी, वे पूछते, बेन्नी, मैं तुझको देख रहा हूँ। ''ये यीशु सचमुच में है, है ना ?''

मेरी बहन ''मैरी'' ने अपना हृदय प्रभु को दे दिया। और अगले कुछ ही महिनों में मेरा छोटा भाई सैमी ने भी उद्धार को पाया। फिर विल्ली ने भी।

मैं हाल्लेलूया चिल्लाने के अलावा कुछ नहीं कर सका। यह हो रहा था – और मैनें प्रवचन देना भी शुरु नहीं किया था।

इतने समय तक मेरे पिता एक शखर्थी होने के लिये तैयार थे, क्या वह अपने तमाम परिवार को यीशु के नाम पर खो रहे थे ? इस समस्या का कैसा समाधान किया जाय यह उसके दिमाग में नहीं आ रहा था। परन्तु यहाँ दो मत नहीं कि मेरी मम्मी और पापा और मुझमें, मेरे दो भाइयों में, और मेरी में हो चुके बदलाव को साफ – साफ देख रहे थे।

जब पहली बार मैनें अपना जीवन परमेश्वर के लिये समर्पित किया था, तब मेरी उनके साथ कुछ अद्‌भुत मुलाकातें हुई थी। लेकिन ये सब मुलाकातें, पवित्र आत्मा के साथ मेरे प्रतिदिन की यात्रा के सामने, नगण्य थीं। अब, प्रभु मेरे कमरे में वास्तविक रुप में भेंट करने आये। उनकी महिमा सारे माहौल को भर देती थी। कभी – कभी मैं आठ, नौ, या दस घंन्टो तक लगातार घुटने टेक कर प्रभु की आराधना सीधे करता रहता था।

सन् 1974 मेरे जीवन में ईश्वर की शक्ति की अंतहीन धारा प्रवाहित होने का एक वर्ष था। मैं कहता, ''गुड मार्निंग, होली स्पिरिट (सुप्रभात पवित्र आत्मा)'', और वह फिर पूर्णता आरम्भ हो जाता था। ईश्वर की महिमा मेरे साथ रही।

अप्रैल में मैनें एक दिन सोचा, इसके लिये एक वजह होनी चाहिये। मैनें सवाल किया, ''प्रभु, ये सब आप मेरे लिये क्यों कर रहे हैं ?'' मुझे मालूम है कि ईश्वर लोगों को हमेशा के लिये आध्यात्मिक भोजन नहीं देता।

तब जैसे ही मैनें प्रार्थना करनी शुरु की, तो परमेश्वर ने मुझे प्रकट किया वह इस प्रकार है। मैनें किसी को अपने सामने खड़ा देखा। वह ज्वाला में पूरी तरह अनियंत्रित रुप से चल रहा था। उसके पैर जमीन को छू नहीं रहे थे। इस जीव का मुँह खुल और बन्द हो रहा था। – ईशवचन में वर्णित ''दांत पीसना जैसा।''

उसी वक्त प्रभु ने सुन सकने लायक आवाज में बात किया। उन्होने कहा, ''सुसमाचार का प्रचार करो।''

निश्चित रुप से, मेरा जवाब रहा, लेकिन प्रभु, ''मैं तो बोल नहीं सकता।''

दो रातों के बीत जाने के बाद प्रभु ने मुझको दूसरा सपना दिया। मैनें एक स्वर्गदूत को देखा। उसके हाथों में एक जंजीर थी, जो एक ऐसे दरवाजे से लगी हुई थी जो सम्पूर्ण स्वर्ग को भर सकता था। उसने उसे खींच कर खोल दिया, और वहाँ लोग दूर – दूर तक भरे हुए थे। आत्माएँ। वे सभी एक विशाल, गहरी घाटी की ओर बढ़ रहे थे – और वह घाटी अग्नि का कोलाहल पूर्ण एक मिट्टी थी।

यह बहुत ही डरावना दृश्य था। मैनें हजारों लोगों को आग में गिरते देखा। आगे की पंक्तियों के लोग अपने को बचाने का संघर्ष कर रहे थे। किन्तु उनके पीछे की भीड़ ने उन्हें उस आग की लपटों में धकेल दिया।

पुनः प्रभु ने मुझ से बात की। बिल्कुल स्पष्ट रुप से उन्होने मुझसे कहा, यदि तुम प्रचार नहीं करतें, तो इन सब के गिरने की जवाबदारी तुम्हारी होगी। उसी क्षण मैनें जान लिया कि मेरे जीवन में जो कुछ हुआ वह एक ही उद्देश्य के लिये था – सुसमाचार के प्रचार के लिये।

यह ओशावा में घटित हुआ

सहभागिता जारी रही। ईश्वर की महिमा लगातार बनी रही। ईश्वर की उपस्थिति बिछुड़ नहीं गयी; वास्तव में यह और भी घनीभूत हुई। वचन और अधिक वास्तविक हुआ। मेरा आध्यात्मिक जीवन अधिक शक्तिशाली बना।

आखिरकार, नवम्बर, 1974, में मैं इस विषय को और टाल नहीं सका। मैनें प्रभु से कहा, ''मैं सुसमाचार का प्रचार एक शर्त पर करुँगा, कि प्रत्येक सभा में आप मेरे साथ रहेंगें।'' मैनें उनको याद दिलाया, ''प्रभु, आप जानते हैं कि मैं बोल नहीं सकता।'' मैं अपनी इस हकलाहट के बारे में लगातार चितिंत रहा और यह तथ्य कि मैं अपने को लज्जित करने जा रहा था।

वास्तव में मेरे मानसपटल पर से उस जलते आदमी की तस्वीर मिटाना असम्भव था तथा प्रभु की आवाज यह कहती हुई ''अगर तुम प्रचार नहीं करते, तो उसमें गिरने वालों की जवाबदारी तुम्हारी ही होगी।''

मैनें सोचा, मुझे प्रचार आरम्भ करना है। लेकिन क्या कुछ पुस्तिकाओं का वितरण भी अच्छा नहीं होगा ? तब एक दोपहर को, दिसम्बर महीने का प्रथम सप्ताह, मैं ओशावा में स्टेन्ली और शैर्ली फिलिप के घर में बैठा हुआ था, टोरंटो से लगभग तीन मील पूर्व में।

क्या मैं कुछ बोल सकता हूँ ? मैनें पूछा। इसके पहले कभी भी अपने अनुभवों, सपनो और दर्शनों की पूरी कहानी किसी से भी कहने की मुझमें इच्छा नहीं थी। प्रायः तीन घन्टों तक मैनें अपने दिल की वे सारी बातें, जो केवल प्रभु और मैं जानते थे, उगल दी।

मेरे खतम करने के पहले ही, स्टेन्ली ने मुझे रोक दिया और कहा, बैन्नी आज रात्रि, तुमको हमारे चर्च में आना है और इसे बताना है।

उनका शीलोह नामक सहभागिता समूह था – ओशावा में असेम्बली ऑफ गॉड चर्च के लगभग एक सौ सदस्य।

उस समय आपको मेरी शक्ल देखनी चाहिये थी। मेरे बाल कंधे तक लम्बे हो गये थे। और मैं चर्च जाने लायक पोशाक में भी नहीं था, क्योंकि निमंत्रण बिल्कुल अप्रत्याशित था।

दिनाँक 7 दिसम्बर, 1974, को स्टेन्ली ने उस समूह से मेरा परिचय कराया, तथा मेरी जिन्दगी में पहली बार मैं प्रचार करने के लिये मंच पर खड़ा हो गया।

जिस क्षण मैनें अपना मुँह खोला, मैनें किसी को मेरी जीभ को स्पर्श करते और उसे ढीला करते अनुभव किया। वह थोड़ी झुनझुनी जैसी थी, और ईश्वर के वचन की निर्बाध धारा – प्रवाह के साथ घोषणा करने लगा।

चौकानें वाली बात तो यह थी। जब मैं श्रोतागण के बीच में बैठा था, ईश्वर ने मुझे चंगा नहीं किया। जब मैं मंच की ओर जा रहा था, उन्होने मुझे चंगा नहीं किया। जब मैं प्रवचन स्टैण्ड के पीछे था, उन्होने मुझे चंगा नहीं किया। जब मैनें अपना मुँह खोला, तब ईश्वर ने चमत्कार किया।

जब मेरी जीभ ढीली हुई, मैनें कहा, क्या कमाल है। हकलाहट भाग चुकी थी। पूरी की पूरी। और फिर वह वापस नहीं आयी।

अब मेरे माता – पिता को इसकी खबर नहीं हुई की मैं चंगा हुआ था क्योंकि हमारे बीच में बहुत कम बातचीत होती थी। और निश्चय ही, ऐसे भी मौके थे, जब मैं थोड़ी देर के लिये ही सही बिना हकलाहट के बोल सकता था। और कुछ अप्रिय घटने तक यह हकलाहट बंद रहती थी।

लेकिन अब मैनें जाना कि मैं बिल्कुल चंगा हो गया था। मेरी सेवा का सितारा चमकने लगा। प्रायः प्रतिदिन मैं किसी चर्च में, यह सहभागिता समूह में सेवा के लिये आमंत्रित किया जाता। मैनें खुद को ईश्वर की इच्छा के ठीक केन्द्र में अनुभव किया।

मैं मरने जा रहा हूँ

अगले पांच महिनो के लिये मैं एक प्रचारक रहा, पर मेरे माता – पिता को इसकी सूचना नहीं थी। ऐसी बात को एक लम्बी अवधि तक गुप्त रखना अपने आप में एक चमत्कार था। मेरे भाई लोग जान गये, किन्तु पिता को कहने की उनमें हिम्मत नहीं थी, क्योंकि उनको मालूम था कि वह बेन्नी का अन्त होगा।

अप्रैल, 1975, के ''टोरंटो स्टार'' अखबार में मेरा फोटो सहित एक विज्ञापन छपा था। मैं टोरंटो नगर के पश्चिम में स्थित एक छोटे पेन्टिकॉस्टल चर्च में प्रचार कर रहा था, और पादरी कुछ दर्शकों का ध्यान आकर्षित करना चाहता था।

यह प्रयास सफल रहा। कॉस्टेन्डी और क्लेमेन्स ने भी विज्ञापन देखा। उस रविवार रात को मैं प्रवचन मंच पर बैठा था। जब गाना गाया जा रहा था, मैंनें श्रोताओं की ओर आँखें उठाईं और मैं अपनी आँखों में विश्वास ही नहीं कर सका। मंच के ठीक सामने, एकाध पंक्ति के पीछे मेरे माता – पिता को सीट पर बैठाया जा रहा था।

मैनें सोचा, ''बस खत्म, अब मैं मरने जा रहा हूँ।''

मेरे एक मित्र, जिम पॉयन्टर, मंच पर मेरे पास ही बैठे हुए थे। मैनें उनकी ओर मुड़ कर कहा, प्रार्थना कीजिये, ''जिम ! प्रार्थना कीजिये ! वह विस्मित हो गया जब मैंनें कहा कि मेरे माता – पिता वहाँ थे।''

हजारो विचार मेरे मानस पटल पर कौंधनें लगे, जिनमें एक गम्भीर बात यह भी थी, हे प्रभु, अगर इस रात को मैं नहीं हकलाया, तब मैं विश्वास करुँगा कि मैं दरअसल चंगा हो गया हूँ। मुझे और कोई समारोह याद नहीं आ रहा है, जहाँ मुझे घबराहट हुई थी, और घबराहट हमेशा मेरी हकलाहट का कारण बनती थी।

ज्यों ही मैं प्रवचन देने लगा, ईश्वरीय उपस्थिति की शक्ति मुझ में प्रवाहित होने लगी, पर मैं अपने मम्मी – पापा की ओर देखने में असमर्थ रहा यहाँ तक की क्षण भर के लिये भी।

इतना तो मैं जान गया कि अब मुझे अपनी हकलाहट के संबंध में सोचना नहीं है। जब ईश्वर ने चंगा किया, तो वह चंगाई स्थाई थी।

समारोह के समापन में मैं उन लोगों के लिये प्रार्थना करने लगा जिनको चंगाई की जरुरत थी ईश्वर की शक्ति से वह सरा माहौल भर गया।

जैसे सभा खत्म हो गई, मेरे माता – पिता उठ गये और पिछले दरवाजे से बाहर निकल गये।

मीटिंग के बाद मैनें जिम से कहा, ''आप प्रार्थना जरुर करें। क्या आपको पता है कि अगले कुछ ही घन्टे में मेरे भाग्य का फैसला होगा ? शायद आज रात मुझको आपके ही घर में सोना पड़ेगा।''

उसी रात को टोरंटो की गलियों में मैं यों ही गाड़ी चलाता रहा। कम से कम सुबह दो बजने तक घर नहीं पहुँचने के उद्‌देश्य से इधर – उधर गाड़ी चलाता रहा।

मुझे मालूम था तब तक मेरे माता – पिता सो गये होगें।

मैं सचमुच उनका सामना नहीं करना चाहता था।

लेकिन इस सिलसिले में बाद में भी।

अध्याय 4

व्यक्ति से व्यक्ति तक

क्या आप पवित्र आत्मा के साथ एक घनिष्ठ और व्यक्तिगत संबंध स्थापित करने को तत्पर हैं ? क्या आप उनकी आवाज सुनना चाहते हैं ? क्या आप उन्हें एक व्यक्ति के रुप में जानने को इच्छुक हैं ?

दरअसल, मेरे साथ ठीक ऐसा ही हुआ, और मेरा जीवन परिपूर्णतः बदल गया। वह एक व्यक्तिगत गहरा अनुभव था, तथा वह ईश्वर के वचन पर आधारित था।

आप पूछेंगें, ''क्या यह एक नियमित बाइबल अध्ययन के परिणाम स्वरुप था ?'' जी नहीं, यह तब हुआ, जब मैनें पवित्र आत्मा को मेरे व्यक्तिक मित्र बनने के लिये आमंत्रित किया। निरंतर मेरा मार्गदर्शक होने के लिये। मेरा हाथ पकड़कर मुझे सत्य की ओर ले चलने के लिये। इस क्रम में वे वचन का जो अनावरण करेगें वह आपके बरइबल अध्ययन को सक्रिय और सजीव बनायेगा।

मैं जो आपके साथ बाँटने जा रहा हूँ वह तब शुरु हुआ जब 1973 के दिसम्बर महिने में पवित्र आत्मा ने मेरे कमरे में प्रवेश किया, तब से यह कभी नहीं रुका है। यहाँ सिर्फ एक फर्क है हमारी उस पहली मुलाकात में उनको मैनें जितना जाना उससे भी कहीं अधिक अच्छी तरह आज उनको मैं पहचानता हूँ।

आइये, हम इसकी कुछ मूल बातों से आरम्भ करें। पवित्र आत्मा नें मेरा जीवन बदल दिया। वे उस समय से मेरे साथ थे जब से मैनें प्रभु ख्रीष्ट को मेरे दिल में आने को कहा और नया जन्म हो गया।

इसके बाद फिर मैनें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा ग्रहण किया। मैं पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया। मैंनें अलौकिक भाषाओं में बातें की।

उन्होने अपनी उपस्थिति एवं कृपा के वरदान मुझ को प्रदान किये। अनेकानेक मसीहियों ने इसी अनुभव को पाया, पर सब कुछ वहीं ढप्प हुआ। उन्होने यह नहीं समझा कि पेन्तिकुस्त में जो हुआ वह तो पवित्र आत्मा के वरदानो में से केवल एक था।

परन्तु आपको जो मैं बताने जा रहा हूँ वह मुक्ति से भी परे, जल से बपतिस्मा लिये जाने से भी परे, आत्मा से भर जाने से भी परे, वह त्रिएकत्व का तीसरा व्यक्ति आप की व्यक्तिगत मुलाकात का इंतजार कर रहा है। एक आजीवन संबंध के लिये वह लालायित है। यही आप अनुभव करने जा रहे हैं।

सहभागिता में खिंच गया

अगर आपने दो वर्ष पूर्व मेरा दूरभाष नम्बर घुमाया होता, तथा फोन से हमारा संम्पर्क हुआ होता, और इस फोन – संवाद को बरकरार रखा होता, और कभी नहीं मिले थे, तो आप वास्तव में मेरे विषय में क्या जानेंगें?

आप कहेगें, ''फोन से आने वाले आपके शब्दों की आवाज जानता हूँ। और बस, मेरे बारे में उतना ही आप जानेंगे।'' यदि आपने मुझे रास्ते पर देखा होता, तो मुझे नहीं पहचाना होता।

किन्तु जब वह दिन आता है जब हम दोनो आमने – सामने मिलते हैं। तुरन्त आप मुझ से अचानक हाथ मिलायेंगे। मैं जैसा दिखता हूँ, आप मुझे वैसे ही देखते हैं, मेरे बालों और आँखों का रुप – रंग, किस प्रकार का पोशाक मैं पहनता हूँ। कदाचित हम दोनो भोजन के लिये बाहर जायेंगे, और आप जानेंगे कि मेरी पसंद कॉफी है या चाय।

आप लोंगो से व्यक्तिगत रुप से मिलते हैं, तब आप उनके बारे में सारी बातें जान जाते हैं।

संघर्ष का अंत

जब पवित्र आत्मा और मैं मिले, तो जो होने को है, उसकी यह शुरुआत थी। मैं उनके व्यक्तित्व के बारे में पहचानने लगा, जिसने मुझे एक मसीही के रुप में बदल दिया। इस उद्धार ने मुझे एक व्यक्ति बना दिया। लेकिन मेरे मसीही जीवन पर पवित्र आत्मा का एक गहरा असर पड़ा।

जैसे मैं पवित्र आत्मा को जानने लगा, मैं उनके प्रति अति संवेदनशील हो गया तथा उन बातों को जान गया जो उनको दुखित और अप्रसन्न करती हैं। उनकी पसन्द और न पसन्द। वे बातें जो उनको खुश करती हैं और जो उनको न खुश करती हैं।

मैनें यह समझ लिया कि बाइबल पवित्र आत्मा से लिखा गया था। उन्होने जीवन के प्रत्येक स्तर के लोगों को इस्तेमाल किया, उनमें प्रत्येक व्यक्ति पवित्र आत्मा से संचालित हुआ था।

बहुत दिनो तक मैनें बाइबल समझने का संघर्ष किया। अंततः वह दिन आ गया, जब मैनें उनकी ओर देखा और कहा, ''बहुत अच्छा, पवित्र आत्मा, क्या आप मुझे यह बताने की कृपा करेंगे कि इससे आपका क्या तात्पर्य है?'' और उन्होने जवाब दिया। उन्होने उस वचन को मेरे लिये स्पष्ट किया।

जो होने को था उसके लिये मेरी तैयारी करने हेतु प्रभु ने कैथरीन कुलमन की एक बैठक का इस्तेमाल किया। परन्तु पवित्र आत्मा के संबंध में बताने के लिये सुश्री कुलमन मेरे पास एक बार भी नहीं बैठीं। जो भी मैनें जाना उन्ही के द्वारा। और यही कारण है कि वह क्यों ताजा हैं, यह क्यों नया है, वह क्यों मेरा अपना है।

पिट्सबर्ग की उस बैठक से जब मैं घर पहुँचा मैं अपने घुटनों के बल पर हो गया। मैं इमानदार और सच्चा था, जब मैनें कहा ''हे परमप्रिय पवित्र आत्मा, मैं आपको जानना चाहता हूँ।'' यह मैं कदापि नहीं भूलूँगा कि उस वक्त मैं कितना घबराया हुआ था। लेकिन उस दिन से मैं उनको एक भाई के रुप में जान गया। वास्तव में, वे मेरे परिवार का एक अभिन्न सदस्य बन गये।

वह कौन है ?

आप पूछते हैं, ''पवित्र आत्मा कौन है ?'' मैं आपको बताना चाहता हूँ कि वे इस पृथ्वी का सर्वाधिक सुन्दर, सर्वाधिक प्यारा, परम प्रिय व्यक्ति हैं। पुत्र ईश्वर इस पृथ्वी पर नहीं हैं। पिता ईश्वर इस पृथ्वी पर नहीं हैं। वे दोनो अब इसी क्षण स्वर्ग में हैं।

पृथ्वी पर कौन है? पवित्र आत्मा ईश्वर। क्योंकि पिता ईश्वर अपने पुत्र जो पुनरुत्थित हुए, के द्वारा कार्य करने आये। जब पुत्र ईश्वर चले गये, तो पवित्र आत्मा ईश्वर आये, तथा वे अभी भी अपना कार्य करते हुए यहाँ हैं।

इसके बारे में जरा सोचिये। जब पुत्र ईश्वर चले गये, उन्होने अपने साथ युहन्ना और पतरस को भी नहीं लिया। उन्होने कहा, हे बालको, मैं और थोड़ी देर तुम्हारे पास हूँ फिर तुम मुझे ढूँढ़ोगे, और जैसा मैं ने यहूदियों से कहा, जहाँ मैं जाता हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते; वैसा ही मैं अब तुम से भी कहता हूँ। (युहन्ना 13:33)

लेकिन जब पवित्र आत्मा ईश्वर जाता है, जैसा कि बहुत लोग विश्वास करते हैं कि वह जल्दी ही होने वाला है, वे अपने प्रभु के मुक्त

हुए लोागों को ले जायेगा। इसे हर्षोन्माद कहा जाता है। वे हमें स्वर्ग में प्रभु से मिलने के लिये ले जायेगा।

यह पवित्र आत्मा कौन हैं ? कभी मैनें सोचा कि वे वाष्प की तरह थे, कुछ तैरती हुई वस्तु के सदृश्य, जो मैं कभी जान नहीं सका। अब मैनें जाना कि वे एक वास्तविक व्यक्ति ही नहीं, बल्कि उनका अपना एक व्यक्तित्व भी है।

अन्दर क्या है ?

मुझको एक व्यक्ति बनाने वाला तत्व क्या है ? क्या यह मेरा भौतिक शरीर है ? मैं नहीं सोचता। मुझे पूरा यकीन है कि आप लोगों ने कभी किसी की अंत्येष्टि में भाग लिया होगा और वहाँ एक शव पेटिका में लेटे शव को देखा होगा। क्या आप उसमें किसी व्यक्ति को देख रहे हैं ? जी नहीं! आप वहाँ एक मृत शरीर देख रहे हैं।

आप महसूस करें कि एक व्यक्ति को व्यक्ति बनाने वाला तत्व उसका भौतिक शरीर नहीं हैं। किन्तु व्यक्ति वह है जो उसके भौतिक शरीर के अन्दर से निकलता है। भावनाएँ, इच्छा, बुद्धि, आवेग, मनोवृत्तियाँ। ये तो कुछ विशिष्टताएँ हैं जो आपको व्यक्ति बनाती है तथा आपको एक व्यक्तित्व प्रदान करती है।

जो लोग मुझे प्रवचन देते देखते हैं, वे बेन्नी हिन्न को देख नहीं रहे हैं। वे तो सिर्फ मेरा शरीर देख रहे हैं। मैं अपने इस भौतिक शरीर के अन्दर में हूँ, अन्दर जो व्यक्ति है वही महत्वपूर्ण है।

पवित्र आत्मा एक व्यक्ति हैं। और ठीक आपके समान वे महसूस कर सकते हैं, समझ सकते हैं, और जवाब दे सकते हैं। उनको चोट लगती है। उनमें प्यार करने की क्षमता है और घृणा करने की भी। वे बोलते हैं तथा उनकी अपनी इच्छा भी है।

लेकिन सचमुच वे कौन हैं ? पवित्र आत्मा पिता ईश्वर का आत्मा है और पुत्र ईश्वर का आत्मा है। वे ईश्वरत्व की शक्ति हैं – त्रिएक परमेश्वर की शक्ति है।

उनका कार्य क्या है ? उनका कार्य पिता ईश्वर की आज्ञा और पुत्र ईश्वर के क्रिया कलाप को उत्पन्न करना है।

पवित्र आत्मा का कार्य समझने के लिये हमें पिता के कार्य और पुत्र के कार्य को जानना जरुरी है। पिता ईश्वर वे हैं जो आज्ञा देते हैं। यह हमेशा पिता ही रहे हैं, जो कहते हैं, वह हो। शुरु से ही यही ईश्वर आज्ञा देते आये हैं।

दूसरी तरफ, पिता की आज्ञाओं का अनुपालन करने वाले पुत्र ईश्वर हैं। जब पिता ईश्वर ने कहा, ''अब प्रकाश हो'' तब पुत्र ईश्वर आये और उसका अनुपालन किया। तब, पवित्र आत्मा ईश्वर प्रकाश ले आये।

इसको हम लोग इस प्रकार वर्णित कर सकते हैं। अगर मैनें आपको कहा, ''कृपया वह बत्ती जलाइये'', तो वहाँ तीन शक्तियाँ शामिल होंगी पहली, मैं हूँ जिसने आदेश दिया। दूसरी, आप होंगे, स्विच को चालू करने वाले। दूसरे शब्दों में, आप कार्य के अनुपालक हैं। अंत में, प्रकाश लाने वाला कौन है ? वह मैं नहीं हूँ, और वह, आप नहीं हैं। यह वह शक्ति है – बिजली – जो प्रकाश उत्पन्न करती है।

पवित्र आत्मा ईश्वर की शक्ति हैं। वे पिता और पुत्र की शक्ति हैं। ये वही हैं जो पुत्र की क्रियाओं का निष्पादन करते हैं। फिर भी ये व्यक्ति हैं। इनकी अपनी भावनाएँ हैं जो एक त्रिएक ईश्वर में एक अनन्य रुप से अभिव्यक्त की जाती है।

मुझसे पूछा गया है, बेन्नी, इन सारी व्याख्याओं में क्या आप ख्रीष्ट के महत्व की उपेक्षा नहीं करते ? कतई नहीं। मैं उनकी उपेक्षा कैसे कर सकता हूँ, जिन्होने मुझको प्यार किया और मेरे लिये मेरी जान कुर्बान कर

दी ? परन्तु कुछ लोग पुत्र में इतना केन्द्रित हैं कि वे पिता को भूल जाते हैं – जिन्होने इनको प्यार किया और अपने पुत्र को भेज दिया। मैं पिता को नहीं भूल सकता और न ही पुत्र को। लेकिन मैं पवित्र आत्मा के बिना पिता और पुत्र के सम्पर्क में नहीं हो सकता हूँ (इफिसियों 2:18)

संगति

पवित्र आत्मा के साथ मेरी पहली मुलाकात में आँसुओं का अनुभव हुआ। साधारण रुप से जैसे मैं आप लोगों से बात कर रहा हूँ वैसे, मैनें उनसे पूछा, आप मुझसे क्या आशा करते हैं ? कृपया क्या आप मुझे बतलाएंगे आप क्या पसंद करते हैं सच में मैं एक जिज्ञासु बच्चे के समान सीखना चाहता था। और मुझे यकीन था कि वे मेरे इन सच्चे प्रश्नों पर गुस्सा नहीं करेगें।

संगति सभा

पवित्र आत्मा ने यह जवाब दिया, ''मैं वहीं हूँ जो तुम्हारे साथ संगति में हूँ। और एक चुटकी बजाते ही वह पद मेरे सामने आ गया, प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे। (2 कुरि0 13:14)

मैनें सोचा, ''बस मैं संतुष्ट हुआ! ये पवित्र आत्मा हैं जो मेरे साथ वार्तालाप करते हैं, जो मेरे साथ साहचर्य में हैं।'' फिर मैनें प्रश्न किया, मैं कैसे यह साहचर्य आपके साथ कर सकता हूँ, पर पुत्र के साथ नहीं ? और उन्होने जवाब दिया, यही तो है, और बिल्कुल ठीक है, उसे ऐसा ही

होना चाहिये। पिता से तुम्हारी प्रार्थनाओं में मदद करने के लिये मैं यहाँ हूँ। और पुत्र से तुम्हारी प्रार्थना करने में मदद के लिये मैं यहाँ हूँ।

उसी क्षण, प्रार्थना के प्रति मेरा सम्पूर्ण दृष्टिकोण बदल गया। यह ऐसा लगा मानो स्वर्ग के फाटक खोलने वाली स्वर्णिम कुँजी मुझको सौंप दी गयी हो। उस समय से मुझको एक व्यक्तिगत मित्र मिले, जिन्होने यीशु के नाम पर पिता से बातचीत करने में मेरी सहायता की। उन्होने सच में मुझे घुटने टेकने को प्रेरित किया तथा पिता के साथ संपर्क करना मेरे लिये आसान बना दिया।

क्या कमाल की सहभागिता। यही तो है जो पवित्र आत्मा चाहते हैं – आपका साहचर्य।

इसे मैं और भी स्पष्ट करना चाहूँगा। संगति में माँगें या बिनतियाँ नहीं होती हैं, जैसे प्रार्थना में होती हैं। यदि मैंने कहा, क्या साहचर्य इससे भी अधिक वैयक्तिक है। आज, आप कैसे हैं ? आइये, हम एक साथ नाश्ता करें! यह हुआ साहचर्य।

ध्यान दें, कि संगति में स्वार्थ पूर्ण माँगें नहीं होती हैं – बस दोस्ती, प्यार और संलाप। ऐसा ही रहा मेरे साथ भी। मेरी प्रार्थना शुरु करने से पहले ही मैं पवित्र आत्मा की प्रतीक्षा करने लगा। मैं कहूँगा, परमप्रिय पवित्र आत्मा, क्या आप अभी आकर प्रार्थना करने में थोड़ी सहायता कर सकते हैं ?

बाइबल कहती है, इस प्रकार इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिये, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर – भर कर, जा बयान से बाहर है, हमारे लिये बिनती करता है, और मनों को जाँचने वाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है ? क्योंकि वह पवित्र लोंगों

के लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिनती करता है। (रोमियों 8: 26 –27)

जब हम नहीं जानते कि हमें क्या करना है, वे हमारी सहायता के लिये पहुँच जाते हैं।

और दूसरा सिद्धांत जो मैनें जाना वह यह है पवित्र आत्मा ही एक मात्र बाइबल के शिक्षक हैं। ''परन्तु हम ने संसार की आत्मा नहीं परन्तु वह आत्मा पाया है जो परमेश्वर की ओर से है कि हम उन बातों को जानें जो परमेश्वर ने हमें दी हैं। जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिला कर सुनातें हैं। (1 कुरि. 2:12,13)

पवित्र आत्मा का मेरे साथ चलना

पवित्र आत्मा के साथ मेरी पहली मुलाकात से ही मैं यह जानने लगा कि वे एक महान शिक्षक हैं – जो मुझे हमेशा ''सम्पूर्ण सत्य की ओर'' ले चलते हैं। इसलिये मैनें उनसे पूछा ''कृपया आप मुझे बतायेंगे कि इस वचन का क्या अर्थ है?''

इसके बावजूद मैनें उनसे जानना चाहा, ''आप कौन हैं? और आप इतने भिन्न क्यों लगते हैं? फिर मैं कहूँगा, मैं देखना चाहता हूँ कि आप कैसे दिखते हैं?

कोमल फिर भी शक्तिशाली

मैनें जो देखा वह यह है। उन्होने स्वयं को जो मेरे लिये प्रकट किया, वह एक तरफ एक शक्तिशाली व्यक्ति थे, तथा दूसरी तरफ एक बालक – सा कोमल व्यक्ति भी। उन्होने मुझसे कहा, जब तुम एक बच्चे को दुख देते हो, तो वह तुम से दूर भागेगा; जब तुम उसको प्यार करते हो, तो वह तुम्हारे बहुत करीब आयेगा। और ठीक इसी प्रकार मैं उनके पास जाने लगा। मैनें अनुभव किया वे कोमल थे, और फिर भी वे महान एवं शक्तिशाली थे। हालाँकि एक बालक की भांति वे उन सभों के निकट रहना चाहते हैं, जो उनको प्यार करते हैं।

क्या आपने कभी एक छोटे बच्चे या बच्ची को अपनी माँ के आँचल या पिता जी की धोती को खीचते – लटकते देखा? माता – पिता जहाँ कहीं भी जायेंगे, वी भी उनको पकड़ते हुए उनके पीछे – पीछे चलता रहेगा। यहाँ एक बात का बिल्कुल स्पष्ट संकेत है ये माता – पिता इस बच्चे को प्यार करते हैं। और उसका ख्याल भी रखते हैं। पवित्र आत्मा के साथ भी ठीक ऐसी ही बात है। वे अपने प्यार करने वालों के नजदीक रहते हैं।

यह कैसे संभव था कि महान प्रचारक चार्ल्स फिन्नी सुसमाचार का प्रचार कर सके और लोग अपने पापों को स्वीकार करते हुए ''शक्ति के अधीन में वध होते जायेंगें?'' वह कौन सी महान शक्ति थी, जब जॉन वेस्ली एक कब्र पर खड़े हो गये और प्रचार करने के लिये अपना मुँह खोल दिये। वह शक्ति पवित्र आत्मा थी, जो उनके इस प्रचार सेवाकार्य के साथ चलते थे।

न्यूयार्क नगर में, कैथरीन कुल्मैन ने हॉल ही में व्यापारियों के लिये एक सम्पूर्ण सुसमाचार अधिवेशन में प्रचार सम्पन्न किया था। कुल्मैन को

भीड़ से बचाने के उद्देश्य से एक लिफ्ट में रसोईघर से होकर ले जाया गया। बावर्चियों को ऐसी बैठक होने की सूचना ही नहीं थी और न ही उन्होने सुश्री कुल्मैन के बारे में सुना था। बावर्ची अपनी सफेद पोशक, टोपी और एप्रेन में थे। उनको जानकारी तक नहीं थी। इस वक्त कुल्मैन वहीं से हो कर गुजर रहीं थीं। बस, जानते हैं अगले क्षण में क्या हुआ। सहसा, वे सब छटपटा कर जमीन पर गिर पड़े। क्यों ? कैथरीन ने उनके लिये प्रार्थना नहीं की थी। वह यों चली गयी। तो क्या हुआ? जब वह अधिवेशन छोड़कर चली गयी, तो ऐसा लगा मानो पवित्र आत्मा की उपस्थिति की शक्ति उसके साथ सेवा करती चल रही थी।

ये पवित्र आत्मा कौन हैं ? ये प्रभु की शक्ति हैं।

यह शक्ति मुझे सर्वाधिक सुस्पष्ट तब हो गयी, जब मैं अपने कमरे में प्रार्थना में लीन रहा – अकेले। दिन प्रतिदिन, घंन्टे – दर घंन्टे , मैने अपनी बाँहें ऊपर उठायी और कहा, ''परमप्रिय पवित्र आत्मा, क्या आप अभी आयेंगे और मुझ से बातें करेंगे ?'' मैं और कहाँ जा सकता हूँ ? मेरा परिवार तो मेरे खिलाफ था। मेरी मित्र – संगति नगण्य थी। केवल वे। केवल वह पवित्र आत्मा।

ऐसे भी मौके थे जब वे एक शीतल पवन की तरह अन्दर आ गये। गरमी के दिनों की एक ताजा समीर की तरह। प्रभु का आनन्द मुझमें इतना भर जाता कि और ग्रहण करने की मुझमें क्षमता नहीं होती। बातों के दौरान मैं कहूँगा, पवित्र आत्मा, मैं आपको प्यार करता हूँ, और मैं आपके साहचर्य के लिये तरसता हूँ। और मैनें यह और भी अनुभव किया कि यह पारस्परिक थी। वे भी साहचर्य के लिये तरसते रहे।

भोजन तो बाद में भी हो सकता है!

एक बार इंग्लैंड में, मैं एक मसीही परिवार में रह रहा था। मेरा कमरा ऊपरी मंजिल में था। एक शाम को मैं पवित्र आत्मा में लीन हो गया। उनसे बातें करता हुआ यह मौका दुनिया का सर्वाधिक आनन्दमय लग रहा था। उस घर की मालकिन ने मुझे पुकारा, ''बेन्नी, भोजन (रात का) तैय्यार है।''

लेकिन मैं हिचकिचा रहा था और जाना नहीं चाहा। उसने फिर से बुलाया, ''खाना तैय्यार है।'' मैं जाने ही वाला था कि मैनें किसी को मेरा हाथ पकड़ते महसूस किया और वह बोला, ''पाँच मिनट और। बस, पाँच मिनट। पवित्र आत्मा भी मेरे साहचर्य के लिये लालायित थे।''

आप पूछेंगे, ''आपने किस विषय में बातें की ?'' मैनें उन से प्रश्न किये।

उदाहरण के लिये, एक दिन मैनें पूछा, ''आप पिता और पुत्र से अलग कैसे हो सकते हैं ?'' और उसी क्षण उन्होंने मुझको पत्थरवाह किये जा रहे स्तेफनुस को दिखाया और मुझसे कहा, स्तेफनुस ने पिता और पुत्र और मुझको देखा। तीन अलग – अलग व्यक्ति।

पवित्र आत्मा ने स्तेफनुस को कष्ट सहने की शक्ति दी। और यीशु उसके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। और पिता सिंहासन पर विराजमान थे। इसे आप प्रेरितों के काम में पढ़ सकते हैं – प्रेरित 7:54 – 56।

पवित्र आत्मा ने मुझको आगे और भी बताया।

यह पवित्र आत्मा ही थे जिन्होंने मूसा को इस्त्राएल की संतानो का उद्धारक होने की शक्ति दी।

यहोशू के जीवन में वह शक्ति भी यह पवित्र आत्मा थे।

लाल सागर को विभाजित करने वाले उस तूफान के पीछे की शक्ति भी ये पवित्र आत्मा थे।

यरीहो की दीवारों को तहस – नहस करने वाली वह महान शक्ति भी ये पवित्र आत्मा थे।

गोलियाथ के गिरते समय दाऊद के पत्थर के पीछे की शक्ति भी ये पवित्र आत्मा थे। पवित्र आत्मा। शमुएल और एलिय्याह के जीवन में शक्ति ये पवित्र आत्मा ही थे। और प्रभु यीशु ख्रीष्ट में भी।

यीशु परिपूर्ण मनुष्य थे, फिर भी प्रभु का वचन स्पष्टतः कहता है कि पवित्र आत्मा के बिना वे बीमारों पर हाथ नहीं रखते थे। ''प्रभु का आत्मा मुझ पर है'', उन्होने कहा, जैसे उन्होने अपना सेवा कार्य शुरु किया, ''सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया'' (लूका 4:18)।

क्या हुआ जब यीशु पिता के पास लौट गये ? अचानक शिष्यगण पवित्र आत्मा के साथ इतने साहचर्य में थे कि उनकी तमाम शब्दावली ही बदल गयी। वे बोलने लगे कि पवित्र आत्मा और हम उनके पुनरुत्थान के साक्षी थे। पवित्र आत्मा उनके जीवन के हर एक कार्य का अभिन्न अंग बन गये। वे आपस में परिपूर्ण संगति में थे – एक साथ पुत्र के लिये कार्य करते हुए।

प्रेरित पौलुस के जीवन में वह कौन सी ताकत थी जिसने उसको सारी मुसीबतें झेलने की शक्ति दी? और पतरस के जीवन में वह क्या था जो पतरस की छाया मात्र ही बीमारी को चंगा करती थी ? वह पवित्र आत्मा का स्पर्श था।

मदर बसीलिया श्लिंक नामक एक महिला से मिलने जाने के बारे में डेविड विल्कर्सन यह बताते हैं। उन्होने कहा कि ज्यों ही उन्होने उस कमरे में प्रवेश किया, त्यों ही वह ईश्वर की उपस्थिति महसूस कर सके।

क्यों? क्योंकि उन्होने पवित्र आत्मा को प्यार किया। जो पवित्र आत्मा को प्यार करते हैं, वे उनकी उपस्थिति पहचानतें हैं।

क्या आप उस आवाज को पहचानते हैं ?

जब यीशु इस पृथ्वी पर थे और शिष्यों की एक समस्या थी, वे किन के पास गये ? वे पुत्र के पास गये और उन्होने पूछा, हमें क्या करना चाहिये ? और उन्होने शिष्यों को समझाया। लेकिन जब यीशु पिता के पास लौट गये, तब वे अकेले नहीं छोड़ दिये गये। यीशु उनसे बोले, पवित्र आत्मा आप का मार्गदर्शन करेंगे। वे आपको सांत्वना देंगे। वे आपको समझायेंगे और आपको बातें याद दिलायेंगे जो मैनें आपको बतायी हैं। वे मेरे बारे में आपको बतायेंगे।

पतरस और युहन्ना अब बोल रहे थे, ''अद्‌भुत पवित्र आत्मा।'' तब पौलुस ने पवित्र आत्मा के ''संगति'' के विषय में बताया।

याफा में शमौन के घर की छत पर पतरस को दर्शन मिलने के पश्चात, आत्मा ने उस से कहा ....., ''देख तीन मनुष्य तेरी खोज में हैं। अतः उठकर नीचे जा, और निःसंकोच उनके साथ हो ले, क्योंकि मैं ही ने उन्हें भेजा है।'' (प्रेरितों 10:19,20)।

पतरस ने पवित्र आत्मा की आवाज को पहचान ली। और यहीं गैर यहूदियों को सुसमाचार का प्रचार करने की शुरुआत थी।

इथोपिया के हिजड़े का हृदय परिवर्त कैसे हुआ ? आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, ''निकट जाकर इस रथ के साथ हो ले'' (प्रेरितों 8:29)। फिलिप्पुस ने पवित्र आत्मा की आवाज पहचान ली। वह पिता ईश्वर नहीं थे, जिन्होने उससे बात की – और न ही वह पुत्र ईश्वर। वह पवित्र आत्मा ईश्वर थे। पवित्र आत्मा एक व्यक्ति हैं, जिनकी अपनी इच्छा

है, और उसी समय वे पिता का कार्य कर रहे थे। मैं विश्वास करता हूँ कि पवित्र आत्मा के विरुद्ध सबसे बड़ा अपराध उनको दुखित करना है, जो उनकी उपस्थिति और शक्ति का तिरस्कार करने से होता है। ऐसे शब्द ''पिता ईश्वर को दुखित मत करो'', ''पुत्र ईश्वर को दुखित मत करो'' बाइबल में आप कहीं नहीं पायेंगे। लेकिन बाइबल में कई स्थानों पर आप देखेंगे, ''पवित्र आत्मा ईश्वर को दुखित मत करो।''

मरुभूमि में ईश्वर ने इस्त्राएल की जनता से कहा, ''तुम लोंगों ने मेरे आत्मा को नाराज किया है।'' उसने यह नहीं कहा, तुम लोगों ने मुझे नाराज किया है। पुत्र ईश्वर ने फरीसियों की ओर देख कर कहा, ''जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बातें कहे उसका वह अपराध क्षमा किया जायेगा, परन्तु जो पवित्र आत्मा की निन्दा करे उसका अपराध क्षमा नहीं किया जायेगा।'' (लूका 12:10)।

ईश्वरत्व में पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व की एक अलग पहचान है। वे कोमल हैं। वे अतिसंवेदनशील हैं। चूँकि यीशु ने उन्हे आपके लिये और मेरे लिये दिया है, वे हमें नहीं छोड़ेंगे।

पवित्र आत्मा एक सज्जन हैं। वे आपके निमंत्रण के बगैर आपके कमरे में नहीं आयेंगे। वे आपकी अनुमति के बिना नहीं बैठेंगे। और वे तब तक आपसे बात नहीं करेंगे जब तक कि आप उनसे बात शुरु नहीं करते।

वे कितनी देर तक इंतजार करेंगे ? आपकी उनसे बात न होने तक। इसमें महिनों लग सकते हैं – सालों भी। बस, वे यों ही इंतजार करेंगे, इंतजार करेंगे, और इंतजार करते ही रहेंगें। मेरे दोस्त, आप उनकी शक्ति कभी नहीं जानेंगें; आप उनकी उपस्थिति कभी नहीं जानेंगें जब तक आप उनके पास नहीं जाते, उनके पास नहीं बैठते, और उनसे यह नहीं कहतें, बहुत अच्छा, पवित्र आत्मा मुझे यीशु के बारे में बताइये।''

मैने मुश्किल से ही फोन सम्भाल सका

फ्लोरिडा में एक रेडियो प्रवचन समाप्त करने के बाद, जिस महिला ने साक्षात्कार लिया था, उसने मुझ से कहा, मैं बहुत दिनो से ईसाई हूँ, पर मेरे जीवन में कुछ चीज का अभाव है।

आप किस के लिये लालायित हैं ? मैनें पूछा।

उसने कहा, मुझे अपनी जिन्दगी में ईश्वर की सच्चाई की जरुरत है। मैनें उनसे पूछा कि उसने पवित्र आत्मा को जाना है या नहीं। मैं यीशु को जानती हूँ, उसने जवाब दिया।

''पवित्र आत्मा एक व्यक्ति हैं'', मैं बोला। यह मुझे कैसे लगेगा कि आप यहाँ बैठ कर मेरी परवाह नहीं कर रहे हैं ? जब हम लोग मिलते हैं, मैं आशा करता हूँ कि आप मुझ से बातें करें। और ठीक ऐसा ही पवित्र आत्मा के साथ भी है।

''ऐसा मैनें कभी नहीं सोचा है,'' उसने कहा।

''आज रात को जब आप अकेली होंगी, उनसे बात कीजिये,'' मैनें कहा, यह बिल्कुल सहज है। मुझे विश्वास था कि वह सच्चाई की खोज कर रही है। और वह उसे मिल जायेगी।

तो यीशु के बारे में क्या ? उसने प्रश्न किया।

मैनें उत्तर दिया, आप यों ही बैठे रहिये और प्रतीक्षा कीजिये; ये पवित्र आत्मा ही हैं जो यीशु को महिमान्वित करते हैं। जी नहीं, आप यीशु, को भूल नहीं रहे हैं। इसके अलावा यह तो यीशु मसीह थे जिन्होने आपको पवित्र आत्मा दिया था; बस, आप वही कीजिये जो यीशु ने कहा।

अगले दिन फोन की घंन्टी बजी; मैनें फोन उठाया; वह इतनी उत्तेजित थी मैं सोच भी नहीं सका। इतनी हड़बड़ी में पूछा कि मुझे उसे धीरे करना पड़ा था। ''बेन्नी, पवित्र आत्मा ने मुझसे बात की।''

उसकी बातों ने मेरे पूरे शरीर में एक झुनझुनी पैदा की, मैं मुश्किल से फोन सम्भाल सकी। वह बोलते – बोलते रोने लगी और कहा कि पवित्र आत्मा ने उससे कहा, मैनें सारी दुनिया में छानबीन की और यहाँ यीशु के समान कोई भी नहीं है। और उसने उन शब्दों को दोहराया जो उसने सुना था, प्रभु यीशु आइये। प्रभु यीशु, आइये।

मुझे तत्काल वह वचन याद आया, आत्मा और दुल्हन दोनों कहती हैं। ''आ''! (प्रकाशितवाक्य 22:17)

यह मुझको प्राप्त सर्वाधिक महत्वपूर्ण शिक्षाओं में एक है। जो व्यक्ति पवित्र आत्मा की उपस्थिति जानता है, वह सदा यीशु की स्तुति और – महिमा करेगा।

जब आप आत्मा को वास्तव में जानते हैं, तो आप ईश्वर के पुत्र यीशु मसीह को महिमा मंडित करेंगे; क्योंकि आप में निहित पवित्र आत्मा पुत्र ईश्वर की महिमा करेगा। यह अपने आप ही होता है। केवल आत्मा से परिपूरित जीवन में ही यीशु महिमान्वित किये जाते हैं।

आपके जीवन का हर कार्य, आप अपने जीवन में जो करते हैं, उसको प्रतिबिम्बित करता है। अगर आज अपने जीवन को समाचारों से भर देते हैं, तो आप समाचार बतायेगें। अगर आप महफिलों के संगीत की धुन में लीन रहेंगें, तो आप महफिल संगीत सुनायेंगे। लेकिन अगर आप आत्मा से परिपूर्ण हैं, तो आप उनकी उपस्थिति में तल्लीन हो जायेंगे, आप यीशु को ढूँढ़ेंगे और यीशु को छोड़ और किसी की स्तुति नहीं गायेंगे।

यदि पिता ईश्वर और पुत्र ईश्वर ने अपना प्यार पवित्र आत्मा के लिये प्रदर्शित किया है, तो हम लोग इससे कम कैसे कर सकते हैं ?

ईश्वर ने आत्मा को इतना प्यार किया कि उसने इस्त्राएली जनता को अपने आज्ञा उल्लंघन के लिये उन्हें दण्ड दिया, परन्तु उन्होने विद्रोह

किया और उसके पवित्र आत्मा को दुख दिया; इसलिये वह एक शत्रु के समान उनके विरुद्ध हो गया (यशायाह 63:10)। पवित्र आत्मा के खिलाफ किये गये अपराधों की क्षमा के लिये मूसा द्वारा चढ़ाये गये बलिदान या यहाँ तक की प्रार्थनायें भी ईश्वर ग्रहण करेगा।

झूठ का बड़ा महंगा नतीजा

हनन्याह और सफीरा का अनुभव हमें स्पष्ट बतलाता है कि पवित्र आत्मा के निरादर करने वालों का क्या होगा। इस दम्पति ने अपनी जमीन बेच दी तथा ईश्वर के हक में का एक अंश मात्र ही दिया। पतरस ने सवाल किया, हनन्याह! शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले ? पवित्र आत्मा से झूठ बोलने दिया ? (प्रेरित 5:3)। हनन्याह तत्काल मर गया। कुछ घंन्टों बाद उसकी पत्नी दौड़ कर भीतर आयी, और पतरस ने उससे पूछा, मुझको बताओ, क्या जमीन बेचने पर तुमको और हनन्याह प्राप्त कीमत इतनी ही थी ? जी हाँ, उसने उत्तर दिया, वह कीमत इतनी ही थी। इस पर पतरस ने कहा, क्यो तुम दोनों मिल कर प्रभु के आत्मा की परीक्षा लेने को सहमत हुए ? सुनों, जिन्होनें तुम्हारे पति को दफनाया है, वे द्वार पर तुम्हारा भी इंतजार कर रहे हैं और वे तुम्हे ले जायेंगे। उसी क्षण वह उसके चरणों में गिर गयी और वह मर गयी (प्रेरित 5:7–10)।

पवित्र आत्मा के विरुद्ध अपराध करना खतरे से खाली नहीं है। अगर आप पवित्र आत्मा के कार्य नहीं समझते, तो उनके संबंध में कुछ टिप्पणी मत कीजिये। मौन रहना ही बेहतर है। मेरे अपने ही प्रचार समारोहों में मैं इस प्रकार बिनती करता हूँ कि मैं जो भी करता हूँ कि मैं जो भी करता हूँ वह ईश्वर की सम्पूर्ण इच्छा के अनुकूल हो। पवित्र आत्मा

ने ही मुझे बुलाया है, वे ही मेरी सारी बैठकों को नियत्रंण करने वाले हैं। दूसरे शब्दों में वे ही समारोह के मालिक हैं।

पवित्र आत्मा को आपके जीवन का मालिक बनाने के लिये आपको उससे आग्रह करना होता है।

क्यों ? क्योंकि वे ही वह शक्ति हैं जो आपके साथ – और आप में रहने के लिये भेजे गये हैं। आप उनको सकते हैं और उनके साथ सहचर्य कर सकते हैं। और जितना अधिक आप उनके साथ संलाप करेंगे, उतना ही अधिक यीशु महान बन जाते हैं। तथा यीशु सुन्दरतम बन जाते हैं। यीशु मसीह बोले, ''जब वह सहायक आयेगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की और से भेजूँगा अर्थात सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है तो वह मेरी गवाही देगा।'' (यूहन्ना 15:26)।

अतः यदि मैं यीशु के संबंध में जानना चाहता हूँ, तो मुझे पवित्र आत्मा के पास जाना होगा। यीशु ने ही ऐसा कहा। और उनको अच्छी तरह से मालूम था कि वे क्या कर रहे थे।

पुराने नियम में, मूसा पिता के पास जा सका। नये नियम में, शिष्य पुत्र से बात कर सके। परन्तु आपकी और मेरी जरुरत होने पर, हम किसके पास जायेंगे ? पवित्र आत्मा के पास। वे एक व्यक्ति हैं, और वे ठीक इसी क्षण उस इंतजार में हैं कि कब आप अपने जीवन में उनका स्वागत करेंगे।

उनकी उपस्थिति खोजने से आप ईश्वर के उन बड़े – बड़े महापुरुषों और स्त्रियों की महानता का रहस्य जान पायेंगे। दाऊद नें कहा, आपकी उपस्थिति से मुझे दूर नहीं रखना, तथा आपके पवित्र आत्मा को मुझसे अलग नहीं करना (भजन सं. 51:11)।

उसने बहुत अच्छी तरह जाना कि जब पवित्र आत्मा ने शाऊल को छोड़ दिया तो फिर उसका क्या हुआ।

पौलुस ने हमसे अनुरोध किया कि हम आत्मा में चलें, आत्मा में जियें, आत्मा में प्रार्थना करें। पतरस और फिलिप ने उनसे बातचीत की। तथा उसी प्रकार मसीह नें भी।

अब समय है आरम्भ करने का

आप पूछते हैं, ''मैं कैसे आरंभ करुँगा ?'' यह सच में बहुत सहज है। आप ऐसे कहते हुए आरंभ कर सकते हैं, ''पवित्र आत्मा, मुझे अब प्रार्थना करने की मदद दीजिये। यही तो वे आपसे आशा करते हैं।'' बाइबल कहती है कि वे आपके लिये बिनती करते हैं, व्यक्त नहीं की जा सकने वाली आहों के द्वारा। और जब आप शुरु करते हैं तो आप महसूस करेंगे कि आपका बोझ हल्का किया गया है। आपकी अपनी प्रार्थना में एक सहभागी मिलेगा जो आपको सीधे ईश्वर के सिंहासन की ओर ले चलेगा।

पवित्र आत्मा एक सुन्दर व्यक्ति हैं। वे आपका घनिष्ठतम् मित्र बनना चाहते हैं, और वे आपको यीशु के निकट ले चलने की प्रतीक्षा में हैं। यीशु मसीह ने कहा, अगर मैं नहीं जाऊँ, तो वह सहायक तुम्हारे पास नहीं आयेगा; किन्तु अगर मैं जाऊँ, तो मैं उसको तुम्हारे पास भेजूँगा (युहना 16:7)। तब उन्होने कहाः ''पवित्र आत्मा सभी सच्चाईयों में आपकी अगुवाई करेगा'' और ''वह मेरी महिमा करेगा; क्योंकि जो मेरा है, उसे वह लेगा और तुम्हे बतायेगा'' (युहन्ना 16:13,14)। और सिर्फ इतना ही नहीं; वह तुम्हें प्रभु के आगमन के लिये भी तैय्यार करेगा; ताकि जब तांडव आये, तब तुम तैय्यार रहो।

पवित्र आत्मा प्रतीक्षा कर रहा है। वह चाहता है कि आप प्रत्येक व्यक्ति (एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति) के साथ नया संबंध आरंभ करें।

अध्याय 5

आप किसकी आवाज सुनते हैं ?

''बेन्नी, मैं चाहता कि तुम इस घर में यीशु खीष्ट के बारे में बोलना बंद करो, समझे ? मैं अपने पिता की क्रोध भरी वह आवाज कभी नहीं भूल सकता, जो मेरे हृदय परिवर्तन से आग बबूले हो गये थे। और पवित्र आत्मा के साथ मेरी मुलाकात के बाद उसकी यह बौखलाहट और भी उग्र हो गयी।

लेकिन मैं एक दूसरी आवाज सुनने लगा। वह आवाज थी पवित्र आत्मा की, और उन्होनें मुझमें अपने पापा के प्रति एक ऐसा प्यार भर दिया, जो मेरे बाल्याकाल या किशोरावस्था में था उससे भी कई गुना ज्यादा। मेरे पापा ने कुछ भी कहा, मुझे उसकी कोई भी परवाह नहीं, मैं यों पूर्णशांति से उसकी ओर देख सका। और मुझे लगा कि जितना ज्यादा गुस्सा मेरे पापा ने किया उतना ज्यादा प्यार पवित्र आत्मा ने मुझे दिया।

जब पवित्र आत्मा का मेरे जीवन में आगमन हुआ, तब यहाँ तीन बातें हुईं।

पहली, जीवित ईश्वर का वचन मेरे लिये सम्पूर्ण जीवन बन गया। अब मैं बाइबल, मत्ती से थोड़ा और भजन संहिता से थोड़ा करके पढ़ता नहीं था। मैनें बाइबल खोली तथा मुझको ऐसा लगा मानो मैं पूर्ण रुप से उसके भीतर था – उसने अपने जीवित और सजीव रुप में देखता हुआ। पवित्र आत्मा की आवाज मुझको बाइबल में एक अपूर्व अनुभूति की ओर ले गयी।

दूसरा, मेरा आध्यात्मिक जीवन सम्पूर्णतयाः बदल गया। वो समय अब खत्म हो गया, जब मैं घंन्टों तक प्रार्थनाओं में जम्हाई लिये और ऊँघते – ऊँघते रट लगाया करता था। पवित्र आत्मा और मैं अब

वार्तालाप में थे। उन्होनें ईश्वर को वास्तविक बनाया। उन्होने मुझे एक ऐसा साहस और शक्ति दी, जिसने मुझे दस फुट और ऊँचा जैसे महसूस कराया।

और तीसरा, उन्होने मेरे दैनिक मसीही जीवन को बदल दिया। वास्तव में मैं गाने लगा, और यह क्यों, मुझे तब तक मालूम नहीं हुआ जब तक मैंनें यह वचन नहीं पढ़ा, ''आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ, और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो और अपने – अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।'' (इफिसियों 5:18,19)।

मुझको जो होने लगा, वह प्राकृतिक नहीं था – वह आलौकिक था। पवित्र आत्मा ने मुझे अपने वश में कर लिया। वे मुझमें लोगों के प्रति प्यार जगाने लगें – खास कर मेरे अपने पिता के प्रति। वचन में ठीक लिखा है, ''पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।'' (रोमियों 5:5)।

मैं इतना परिणत व्यक्ति हो गया कि मेरी प्राकृतिक प्रतिभाएँ, मनोवृत्तियाँ एवं प्रतिक्रियाएँ पवित्र आत्मा के संचालन में बदल गयीं। मैनें अच्छी तरह जान लिया कि मानव स्वभाव को क्रूसित करने का क्या अर्थ होता है। और मुझे मालूम हुआ कि यह कार्य मैं अकेला नहीं कर सका। ''क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे तो मरोगे यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे तो जीवित रहोगे इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाये चलते हैं वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।'' (रोमियों 8:13,14)

उसकी आवाज

आप पवित्र आत्मा से कैसे संचालित होते हैं ? आप उनकी आवाज से परिचित हो जाइये। आप उसको पहचानते हैं। आप उसका जवाब देते हैं।

और जितना अधिक आप उन से सहचर्य करेंगे, उतना ही अधिक आपका संबंध गहरा होता जाता है।

प्रारंभ में

सृष्टि के प्रारंभ से ही, ईश्वर ने मनुष्य और पवित्र आत्मा की शक्ति को बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है। वास्तव में बाइबल के अनुसार ईश्वरत्व की प्रथत अभिव्यक्ति पवित्र आत्मा हैं। परमेश्वर की आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था। (उत्पत्ति 1:2)।

जब ईश्वर ने धरती की मिट्टी से आदम की सृष्टि की पहले उसने मिट्टी को एक रुप देकर शुरु किया। वह मिट्टी प्राणवायु का स्पर्श होने तक निर्जीव थी। बाइबल कहती है कि ईश्वर ने उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया और आदम जीवित प्राणी बन गया। (उत्पत्ति 2:7)।

ईश्वर की साँस पवित्र आत्मा है। अय्यूब इसे इस प्रकार वर्णित करता है; ''मुझे परमेश्वर के आत्मा ने बनाया है, तथा सर्वशक्तिमान की साँस से मुझे जीवन मिलता है'' (अय्यूब 33:4)।

जिस क्षण ईश्वर ने आदम में प्राणवायु फूँक दी, उसी क्षण वह जीवित हो गया। जब आदम ने अपनी आँखें खोल दीं, तो उसका सर्वप्रथम संम्पर्क पवित्र आत्मा से था। क्योंकि आदम के शरीर मे चल रही साँस पवित्र होकर उसके शरीर में भर गयी। आदम परमेश्वर की उपस्थिति से भर पूर होकर खड़ा हो गया।

बाइबल मुझे बतलाती है कि सृष्टि की शक्ति पवित्र आत्मा थी। ''ईश्वर ने अपने आत्मा से आकाश को संवारा'' (अय्यूब 26:13)।

हालाँकि यहाँ और भी आनन्दतिरेक की बात है कि वही आत्मा आप पर भेजना चाहता है।

''जब तक आत्मा ऊपर से हम पर उण्डेला न जाये, और
जंगल फलदायक बन जाये और फलदायक बारी फिर
वन न गिनी जाए तब उस जंगल में न्याय बसेगा और
उस फलदायक बारी में धर्म रहेगा।''(यशा. 32:25,16)

कितनी अद्‌भुत प्रतिज्ञा है। ईश्वर अपना आत्मा आपके पास भेजना चाहता है। वह अपना आत्मा आप में फूँकना चाहता है। वह चाहता है कि आदम के समान आप भी सजीव हो जायें।

यह अनुभव, कि ईश्वर की साँस यह पवित्र आत्मा ही हैं, मेरे लिये छिपा हुआ एक खजाना पाने के सदृश्य था। क्या आपने कभी सर्वशक्तिमान की आवाज को आपसे बात करते सुना ? बहुत लोंगों ने सुना है। लेकिन सच में कौन बात कर रहा था ? किसकी आवाज आपने सुनी ?

मुझे यकीन है कि आप पवित्र आत्मा को ही सुनते हैं। वे ही हैं जो ईश्वर की आवाज से आपके साथ संलाप करते हैं।

पिता ईश्वर की आवाज अय्यूब में इस प्रकार वर्णित है।

उसके बोलने का शब्द तो सुनों .....

वह अपने प्रतापी शब्द से गरजता है .....

परमेश्वर गरजकर अपना शब्द अद्‌भुत रीति से सुनाता है .....

जो बड़े – बड़े काम करता है जिनको हम नहीं समझते। (अय्यूब 37:2,4,5)। ईश्वर की शक्ति इतनी थी कि इस्त्राएली जनता की समझ से परे थी।

स्वर्ग से एक आवाज

ईश्वर ने मूसा से कैसे बात की ? एक स्वर्गदूत के माध्यम से।

नये नियम में वास्तव में केवल तीन बार ईश्वर ने बात की। पहली बार उसने यीशु के विषय में बात की और अचानक स्वर्ग से एक वाणी

यह कहती हुई सुनाई पड़ी, यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ (मत्ती 3:17)।

तब खुद यीशु ने पिता से अपना नाम महिमान्वित करने को कहा। और यही हुआ, स्वर्ग से एक वाणी कहती हुई सुनाई पड़ी, मैनें उसे महिमान्वित किया है और उसे फिर महिमान्वित करुँगा। (यूहन्ना 12:28)। जिन लोंगो ने यह वाणी सुनी, वे बोले कि यह ''गर्जन'' था।

तीसरी बार ईश्वर ने सीधे बात की, जब ताबोर पर्वत पर रुपान्तरण के समय शिष्यों पर बादल छा गया और उसने कहा, यह मेरा परमप्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ, इसकी सुनों (मत्ती 17:5)। ईश्वर की आवाज का एक अद्वितीय परिणाम हुआ। जब शिष्यों ने यह सुना, वे मुँह के बल गिर गये और अत्यधिक भयभीत हुए। किन्तु यीशु आये और उनका स्पर्श किया और बोले, उठो, और डरो मत। और जब उन्होने यह सुना अपनी आँखे उठा कर देखा, तो उन्होने यीशु के सिवा किसी को नहीं देखा (मत्ती 17:6,8)

आप कहते हैं, बेन्नी, मैनें सोचा कि ईश्वर ने बाइबल के आद्यांत बोले हैं। बिल्कुल ठीक लेकिन जो बात कर रहा था, वह पवित्र आत्मा थे।

मैं एक उदाहरण दे रहा हूँ। जो आवाज नबियों के द्वारा सुनी गयी थी, वह पवित्र आत्मा की थी – न कि पुत्र की आवाज और न ही पिता की। ईश्वर की वाणी यह कहती सुनायी पड़ने के संबंध में यशायाह नबी कहता है,

''जा और इन लोगों से कह, सुनते ही रहो, परन्तु न समझो,
देखते ही रहो, परन्तु न बूझो तू इन लोंगों के मन को मोटा
और उनके कानों को भारी कर, और उनकी आँखों को बन्द
कर ऐसा न हो कि वे आँखों से देखें और कानों से सुनें और
मन से बूझें और मन फिराएँ और चंगे हो जाएँ''(यशा.6:9,10)।

लेकिन दरअसल यहाँ कौन बात कर रहा था ? क्या वह वास्तव में प्रभु की आवाज थी ? अथवा क्या वह पृथ्वी पर यहोवा की आवाज थी – पवित्र आत्मा की ? इसे समझने के लिये हम इन्हीं पदों को प्रेरितों के काम में, जैसे दोहराया गया है, देखें

रोम में एक पहरेदार की कड़ी निगरानी के अधीन में पौलुस ने प्रवचन दिया कि,

> पवित्र आत्मा ने नबी यशायाह के द्वारा हमारे पूर्वजों को ठीक ही कहा, यह कहते हुए,
>
> जाकर इन लोंगों से कह कि सुनते तो रहोगे, परन्तु न समझोगे, और देखते तो रहोगे परन्तु न बूझोगे, क्योंकि इन लोंगों का मन मोटा और उनके कान भारी हो गये हैं, और उन्होनें अपनी आँखें बन्द की है, ऐसा न हो कि वे कभी आँखों से देखें और कानों से सुनें और मन से समझे, और फिरें, और मैं उन्हे चंगा करुँ। (प्रेरितों 28:26,27)।

वास्तव में शब्द किसने कहा ? यशायाह ने इसका श्रेय प्रभु को दिया, तो पौलुस ने पवित्र आत्मा को श्रेय देकर स्पष्टीकरन किया।

यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि नया नियम पुराने नियम को स्पष्ट करता है। एक दूसरा उदाहरण लिया जाए। यिर्मयाह में हम पढ़ते हैं; परन्तु जो वाचा मैं उन के बाद इस्त्राएल के घराने से बाँधूगां, वह यह है, मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा और मैं उनका परमेश्वर ठहरुँगा और वे मेरी प्रजा ठहरेंगें यहोवा की यह वाणी है। (यिर्मयाह 31:33)।

नबी लिखता है, प्रभु कहता है, परन्तु इस पाठ का सही स्रोत जानने के लिये हमें इसे इब्रानियों की पुस्तक में पढ़ना होता है; पवित्र आत्मा भी हमें यही गवाही देता हैं; क्योंकि उसने पहले कहा था, ''प्रभु

कहता है कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद उनसे बाधूँगा वह यह है कि मैं अपने नियमों को उनके हृदय पर लिखूँगा और मैं उनके विवके में डालूँगा।'' (इब्रानियों 10:15,16)।

यह किसने कहा। पवित्र आत्मा। न केवल पवित्र आत्मा ने इसकी साक्षी दी, बल्कि वचन व्यक्त करता है, उसने पहले कहा था (पद – 15)।

''यहोवा'' कौन है ?

मेरे आध्यात्मिक जीवन में एक – गहरा बदलाव आ गया, जब मैनें समझ लिया कि पवित्र आत्मा ईश्वर थे। लाखों लोंगों को – और भी उनमें मैं एक था – यह विश्वास करने के लिये किसी प्रकार सिखाया गया है कि पवित्र आत्मा बराबरी नहीं रखता। किसी न किसी तरीके से हमें यह धर्मसिद्धातं घोल कर पिलाया गया है कि चूँकि पवित्र त्रिएकत्व में पवित्र आत्मा तृतीय स्थान पर आते हैं, इसलिये ये सच में ईश्वर नहीं हैं।

आपको सच्चाई पर आना होगा; पवित्र आत्मा ईश्वर हैं। ये यीशु से कम ईश्वर नहीं हैं। ये पिता से कम ईश्वर नहीं हैं ये उतने ही ईश्वर हैं जितने कि पिता और पुत्र।

यहोवा इस त्रिएक ईश्वर का नाम है – न कि इनमें केवल एक नाम। पिता यहोवा कहलाते हैं। पुत्र यहोवा कहलाते हैं। पवित्र आत्मा यहोवा कहलाते हैं।

जब पिता ईश्वर बात करते हैं, वे पवित्र आत्मा की आवाज से बोलते हैं। जब यीशु ने बारहों को भेज दिया, उन्होने कहा, तुम चिन्ता मत करो कि तुम क्या और कैसे बोलोगे; क्योंकि वक्त आने पर तुम्हे बता दिया जायेगा कि तुम क्या बोलोगे; क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं हो, पर तुम्हारे पिता का आत्मा तुम से बोलेगा। (मत्ती 10:19,20)।

बार – बार प्रकाशित वाक्य में हमें सलाह दी गयी है, ''जिसके कान हों, वह सुन ले जो आत्मा कहता है.....'' (प्रकाशितवाक्य 2:7,11,17)। हमें किसकी आवाज सुननी है ? पवित्र आत्मा की आवाज।

खीष्ट भी पवित्र आत्मा के बिना नहीं बोलते थे। प्रेरितों के काम में हम पढ़ते हैं कि यीशु स्वर्ग में आरोहित कर लिये गये,.....उसके बाद यीशु ने अपने प्रेरितों को, जिनको उन्होने स्वयं चुन लिया था, पवित्र आत्मा के द्वारा आदेश दिये (प्रेरितों 1:2)।

क्या यह स्पष्ट हो रहा है ? यही पवित्र आत्मा हैं जो आपके हृदय में स्वर्ग की आनन्दभूति उत्पन्न करते हैं। ये आपके लिये ईश्वर की आवाज है। आप कहते हैं, अच्छा मैं जानता हूँ कि ईश्वर मुझ से बात कर रहा था। जरुर, यह ईश्वर था। यह पवित्र आत्मा ईश्वर थे। दूसरे शब्दों में, पिता, पुत्र के द्वारा पवित्र आत्मा के साथ बात करते हैं।

अब तक हम जो जान चुके हैं, उससे आप कल्पना कर सकते हैं कि यदि पिता ईश्वर ने आप से श्रवणीय स्वर में बात की होती, तो क्या हुआ होता। आप उसे बर्दाश्त नहीं किये होते। मुझे संदेह है कि आप यीशु की, प्रकाशितवाक्य में वर्णित है, उनका शब्द बहुत जल के शब्द की नाई था (प्र. वा.1:15), सुनने को भी तैय्यार होंगे कि नहीं। जब युहन्ना ने इसको सुना, वह उनके चरणों में मृत जैसा गिर गया (पद – 17)।

हालाँकि पवित्र आत्मा पिता और पुत्र की आवाज लेते हैं तथा उसे शांत, सुन्दर और परिपूर्णतः स्पष्ट कर देते हैं।

जब से मैनें यह समझ लिया कि पवित्र आत्मा ईश्वर थे – और उनकी आराधना करने लगा, और उन्हे ईश्वर के में मानने लगा – तब मेरा जीवन बदलने लगा। तब से मैनें पवित्र आत्मा को दूसरे दर्जे का, कहीं किसी कोने में रहते, कम महत्वपूर्ण, कमजोर, एक अस्पष्ट जीव के

रुप में नहीं देखा तब से मेरी तमाम आराधना केवल पिता ईश्वर और पुत्र ईश्वर को ही मिली।

मैं फिर से कहना चाहूँगा। पवित्र आत्मा ईश्वर हैं – प्रभुत्व, शक्ति, महिमा और अनंतकाल में बिल्कुल समान है। वे ईश्वर हैं।

यीशु ने आत्मा के विषय में क्या कहा ? उन्होने कहा कि जब वह आयेगा, ''वह अपनी ओर से नहीं कहेगा'' (युहन्ना 16:13)। वे क्या सुनते हैं ? परमप्रिय पवित्र आत्मा पिता को सुनते हैं तथा आपसे सीधे कहते हैं। लेकिन जब पवित्र आत्मा बोलते हैं। तो इस प्रकार नहीं बोलते, ''पिता कहते हैं।'' वे कहते हैं, ''मैं कहता हूँ''। क्यों ? क्योंकि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा हमेशा एक सामंजस्य में कार्य करते है।

आकाश में सूरज की तरह

ईश्वरत्व सीमित करना अथवा ईश्वरत्व को धर्मग्रंथ के विरुद्ध विभाजित करना एकदम आसान है। नये ईसाई अक्सर यह सवाल किया करते हैं, ईश्वर एक ही समय में एक और तीन कैसे हो सकता है ? ईश्वर एक है। किन्तु ईश्वर तीन हैंः पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा। और जब यह पुस्तक पवित्र आत्मा के विषय में प्रतिपादित की जाती है, आपको त्रिएक ईश्वर दिखाने के उद्देश्य से मैं उन्हें अलग – अलग चाहता हूँ।

ईश्वर आकाश में सूरज की तरह है। आप उसकी कांति को देखते हैं, तो आप केवल एक सूरज देखते हैं। हालांकि, वास्तव में यह एक त्रिएक सूरज हैं, जो हमारे इस ग्रह को जीवित रखता है। यहाँ तीन अलग – अलग तत्व हैं; सूरज, प्रकाश, ताप।

और त्रिएक ईश्वर के संबंध में भी यही बात है। पिता, पूर्ण सूर्य के सदृश्य हैं; यीशु, प्रकाश हैं; तथा पवित्र आत्मा, वह ताप हैं जो आप

महसूस करते हैं। आप पिता की उपस्थिति में खड़े होते हैं, तो आप क्या महसूस करते हैं ? गरमी, ऊर्जस्विता, और पवित्र आत्मा की शक्ति। यदि आप पिता के मुखमंडल पर देखते हैं, तो आप किसको देखते हैं ? ''जिसने मुझको देखा है, उसने पिता को भी देखा है'', यीशु ने फिलिप से कहा (यूहन्ना 14:9)।

जब मैं स्वर्ग में प्रवेश करने के उस समय के बारे में सोचता हूँ, तो मैं उत्तेजित हो जाता हूँ। ईश्वरत्व वहाँ होगा। जब मैं पिता के सामने खड़ा रहूँगा तो मैं तीनों को देखूँगा – पवित्र आत्मा, पुत्र और स्वयं ईश्वर।

ईश्वर कैसे दिखता है ? बाइबल में कहीं भी पिता के विषय में एक विस्तृत विवरण नहीं मिलता है। स्तेफनुस ने ''पवित्र आत्मा से परिपूरित होकर, स्वर्ग की ओर दृष्टि की, और ईश्वर की महिमा तथा यीशु को परमेश्वर की दाहिनी ओर खड़ा देखा'' (प्रेरितों 7:55)।

स्तेफनुस ने यीशु को साफ देखा, लेकिन जब उसने पिता पर दृष्टि की तो उस पर अच्छादित रही सिर्फ ''महिमा'' देख सका। जी हाँ, पिता परमेश्वर का एक रुप है, पर कोई भी नहीं जानता कि वह कैसा दिखता है (फिलिप्पि. 2:6) वचन कहता है, ''किसी ने ईश्वर को कभी नहीं देखा है'' (यूहन्ना 1:18), किन्तु, पुत्र उन्हे प्रकट करने आये हैं।

अगर आप, ख्रीष्ट ने जो कहा उस पर, गौर करेंगे, तो आप समझ पायेंगे कि पवित्र आत्मा ईश्वरत्व में कैसे समाविष्ट हैं। यीशु ने कहा, ''मेरे बिना कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता'' (यूहन्ना 14:6)। और बाइबल हमें सिखाती है कि हम पवित्र आत्मा के द्वारा ख्रीष्ट की ओर आकृष्ट हुए हैं। दूसरे शब्दों में, यदि आप ईश्वरत्व को पाना चाहते हैं, तो पवित्र आत्मा के बिना यह सम्भव नहीं हो सकता है। जब आप पवित्र आत्मा में समाविष्ट होते हैं, तो आप पिता और पुत्र में भी सम्मिलित होते हैं।

वह दिन मैं कभी नहीं भूल सकता, जब पवित्र आत्मा ने मेरे लिये यह व्यक्त किया कि उनका प्रभुत्व यीशु के प्रभुत्व के बिल्कुल बराबर है। उन्होने बाइबल में मुझको दिखा दिया कि वे प्रभु कहलाते हैं।

पौलुस कुरिंन्थि. की कलीसिया को लिखते हुए कहता है, ''अब प्रभु तो आत्मा है; और जहाँ प्रभु का आत्मा है, वहाँ स्वतन्त्रता है''(2 कुरिन्थि. 3:17)। यह बिल्कुल ठीक है। हम सब पुकार कर कहते हैं कि यीशु ही प्रभु है – और पवित्र आत्मा भी ऐसा ही है। वे यीशु का आत्मा हैं।

पवित्र आत्मा सर्वव्यापी हैं, पर दुर्भाग्य की बात है कि मुक्ति एवं स्वतंत्रता सर्वत्र नहीं पायी जाती है। कोई – कोई चर्च, आराधना के पवित्र

स्थान होने से भी ज्यादा, बैरियों का बन्दीगृह जैसा लगता है। क्यों? क्योंकि उस संस्था में पवित्र आत्मा प्रभु नहीं हैं।

यह कदापि मत भूलिये; प्रभु ही आत्मा हैं। अगले पद में ही पौलुस लिखता है, परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रुप में अंश – अंश करके बदलते जाते हैं।'' (2कुरि. 3:18)

आप कैसे जानते हैं ?

अब, आपको यह समझना है कि पवित्र त्रिएकत्व ईश्वर की महिमा हैं। पिता ईश्वर, ईश्वर की महिमा है, और पवित्र आत्मा ईश्वर की महिमा हैं। परन्तु इस महिमा को कौन अभिव्यक्त करते हैं ? यह अभिव्यक्ति पवित्र आत्मा करते हैं। यह उनके कार्य का ही एक विशेष भाग है।

मैं दूसरा प्रश्न कर रहा हूँ। क्या आप जानते हैं कि आप आपने पापों से मुक्त किये गये हैं ? तो, यह आप कैसे जानते हैं ? क्या आपने

स्वर्ग से कोई दिव्य वाणी सुनी ? क्या यीशु अपने भौतिक शरीर के साथ प्रगट होकर आपसे यह बोले, तुम मुक्त हुए ?

आप यह कैसे जानते हैं कि आपने एक आध्यात्मिक मृत्यु से होकर नये जीवन में प्रवेश किया है ? आप यह इसलिये जानते हैं कि आत्मा ने आपको कहा आपने इतनी गहराई तक समझा है कि आप इसके लिये अपनी जान भी दे देंगे। क्योंकि जब पवित्र आत्मा कहते हैं, तो वे सीधे आपकी आत्मा में कहते हैं, सीधे आपकी धमनियों और नस – नस मैं।

ठीक इसी प्रकार, हम जानते हैं कि यीशु जीवित हैं। इसलिये नहीं कि हमने उनका चेहरा देखा है, पर हम जानते हैं कि वे अपने पवित्र आत्मा द्वारा जीवित हैं। और वही आत्मा त्रिएक ईश्वर का तीसरा व्यक्ति है।

हाल ही में किसी ने मुझसे यह प्रश्न किया, बेन्नी, आप यह कैसे जानते हैं कि आप कैसे मुक्त किये गये हैं ? बस, मैं इतना ही उत्तर दे सका, मैं जानता हूँ, कि मैं जानता हूँ, कि मैं जानता हूँ, कि मैं जानता हूँ, कि मैं जानता हूँ,। यही ताकत, यही विश्वास पवित्र आत्मा ने मुझे दिया है।

पवित्र आत्मा न सिर्फ वह आवाज है जो आप सुनते हैं, वह आपार शक्ति भी है जो आप अनुभव करते हैं। मीका नबी ने कहा, ''वास्तव में मैं प्रभु के आत्मा के द्वारा शक्ति, सामर्थ्य, अधिकार और न्याय से भरपूर हूँ'' (मीका 3:8)। पवित्र आत्मा ईश्वरत्व की शक्ति है। स्वर्गदूत ने भी मरियम के गर्भवती होने के पहले उससे कहा था, ''पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी'' (लूका1:35)। पवित्र आत्मा ही वह सर्वश्रेष्ठ शक्ति हैं।

पवित्र आत्मा आपका महान प्रतिरक्षक भी हैं। उदाहरणार्थ; आपका विचार क्या विचार है कि शैतान के आक्रमण से आपको कौन बचाता है ?

वह पवित्र आत्मा ही हैं। जब शत्रु महानद के समान चढ़ाई करेंगे तब यहोवा का आत्मा आत्मा उसके विरुद्ध झण्डा खड़ा करेगा। (यशायाह 59:19)। जब आप इस परिचित पाठ को पढ़ते हैं, तो आप इस निष्कर्श पर पहुँच जाते हैं कि शत्रु एक प्रलय की तरह टुट पड़ते हैं। किन्तु मेरे पास आपके लिये एक खुशखबरी है; वह प्रलय पवित्र आत्मा हैं, शैतान नहीं। यहाँ गौर करने वाली बात है कि इब्रानी भाषा में अल्पविराम का इस्तेमाल नहीं होता है। लेकिन अनुवादक राजा जेम्स ने अनुवाद करते समय प्रलय के बाद एक अल्पविराम लगा दिया, तथा शत्रु को अपनी असली शक्ति से भी ज्यादा शक्तिशाली बना दिया। इब्रानी मूल ग्रन्थ कहता हैं कि जब शत्रु टूट पड़ेंगे एक प्रलय जैसा पवित्र आत्मा उनके विरुद्ध विद्रोह का झण्डा खड़ा कर देगा।

''मेरा अनुसरण करो!''

कौन आपको सुरक्षित रखता है ? यही पवित्र आत्मा। यही कार्य इनको ख्रीष्ट द्वारा सौंपा गया है। बहुधा हम इनको यीशु कह कर पुकारते हैं, लेकिन ये वास्तव में यीशु का आत्मा है। फिर, हम लोंगों ने सिर्फ चर्चा करने के लिये इन्हें अलग कर दिया है जिससे इन्हे हम अच्छी तरह समझ लें। क्योंकि ये दोनों सच ईश्वरत्व में एक हैं। जब पवित्र आत्मा आपसे बात करते हैं, तीनों बात कर रहे हैं, पर जिनको आप सुनते हैं, वह पवित्र आत्मा हैं। जिनको आप महसूस करते हैं, वे पवित्र आत्मा हैं। जो आपको पिता की इच्छा की ओर ले चलते हैं, वे पवित्र आत्मा हैं।

जब पहली बार मैनें यीशु के इन शब्दों को पढ़ा, मेरा अनुसरण करो, मैनें सोचा कि यह कैसे सम्भव होगा। क्या उनके अनुयायियों से भी उनके स्वर्गारोहण के साथ आरोहित होने की आशा की गयी थी ? कदापि नहीं। जब ख्रीष्ट पिता के पास लौट गये उन्होने पवित्र आत्मा को भेजा,

यह कहते हुए, ''वह तुम्हारा मार्ग दर्शन करेगा।'' (यूहन्ना 16:13)। यीशु कह रहे थे, मेरा अनुसरण करना बन्द करो। मैं जा रहा हूँ, किन्तु पवित्र आत्मा को भेज रहा हूँ। अब आपको उनका अनुसरण करना होगा। तो क्यों हम कहते हैं, मैं यीशु का अनुसरण कर रहा हूँ। जब हमारा केवल एक मार्ग दर्शक है, जो पवित्र आत्मा है ?

उनकी वाणी का पालन

पवित्र आत्मा के साथ मेरी पहली मुलाकात होने से ही मैनें जाना कि मुझे उनकी वाणी सुनना है। यहाँ सिर्फ दो विकल्प थे। चाहे मैं इस भौतिक, विषयासक्त संसार की वाणी सुन सकता, या मैं उनकी वाणी सुन सकता, जो संसारिक वस्तुओं पर मन केन्द्रित करते हुए वासना का जीवन व्यतीत करतें हैं, लेकिन जो आत्मा की वस्तुओं पर आत्मा के अनुकूल जीवन व्यतीत करते हैं (रोमियों 8:5)।

यह जीवन का बुनियादी तत्व है, यह बात भी उतनी ही एक बुनियादी तत्व है। अगर आप शरीरिक बातें चाहेंगे, तो आप भौतिक वस्तुओं के पीछे भागेंगे; लेकिन अगर आपका हृदय आत्मा की वस्तुयें चाहेगा, आप एक चुम्बक की तरह उनकी ओर आकृष्ट होंगे। यह एक इच्छा से शुरु होता है। मेरे लिये, यह मेरा एक बड़ा प्रश्न था, कि ''कैसे आपको सच में जान सकता हूँ ?'' यह सवाल मेरे हृदय की पुकार थी। मेरी सबसे बड़ी लालसा पवित्र आत्मा को व्यक्तिगत रुप में जाननें की थी; और यह व्यर्थ नहीं गयी।

प्रेरित पौलुस आपसे कहता है।

प्रेरित पौलुस और उनके साथियों के साथ उनकी मिश्नरी यात्राओं के दरमियान एक अद्‌भुत घटना घटी। एशिया में वचन का प्रचार करने से पवित्र आत्मा द्वारा मना किये जाने के बाद वे फ्रुगिया तथा गलातिया गये।

मुसिया पहुँचने के पश्चात् उन्होने बिधुनिया जाने की कोशिश की, पर आत्मा ने उन्हे अनुमति नहीं दिया (प्रेरितों. 16:6,7)। बस यही तो बात है। वे आत्मा की आवाज के साथ इतनी तन्मयता में थे कि शायद उन्होनें कहा, ''ठीक है, अगर यह नहीं जा रहा है, हम लोग भी नहीं जा रहे हैं।'' परन्तु इस विवरण में व्यक्त की गयी एक दिलचस्प बात यह है कि उन्हे पवित्र आत्मा के द्वारा वहीं रखा गया। जब ख्रीष्ट पिता के पास लौट गये, तब इस पृथ्वी पर ख्रीस्त का कार्य पवित्र आत्मा ने करना शुरु किया।

क्या आपने उनकी आवाज पहचाननी शुरु की है ? पौलुस ने तो की। उसी यात्रा के समय आत्मा ने, एक दर्शन के माध्यम से, प्रेरित को सुदूर राज्य के एक आदमी को दिखाया, जो पौलुस से याचना कर रहे थे, मकिदुनिया में चले आइये और हमारी मदद कीजिये (पद 9)। पौलुस तुरन्त रवाना हो गया।

आपका अन्तः करण यह सिद्ध करता है।

पवित्रआत्मा कैसे बात करते हैं ? वे आपकी अपनी ही अतः करण से प्रमाणित करते हैं। रोम की कलीसिया के लिये पौलुस के पत्र में वह कहता है, ''मैं मसीह में सच बोल रहा हूँ, मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ, मेरा विवके भी पवित्र आत्मा में गवाही देता है।'' (रोमियों 9:1)।

आपको पवित्र आत्मा के मार्ग दर्शन पर कभी भी संदेह नहीं करना चाहिये। कभी भी जब आपका आन्तरिक मानव मुसीबत में है, तब निश्चल रहिये। यदि आप मार्ग दर्शक बनने की चेष्टा करते हैं, तो बेशक आप विफल होंगे। आप उनकी आवाज को ध्यान से सुनिये, जैसे वे आपकी अपनी आत्मा से बात करते हैं।

एक गिरजा निर्माण कार्यक्रम के दौरान मुझसे पूछा गया, कैसे आप जानते हैं कि आप सही कार्य कर रहे हैं ? जवाब तो वही था जैसे जब

मेरी मुक्ति के विषय में भी पूछा गया था। मैं जानता हूँ कि मैं जानता हूँ, कि मैं जानता हूँ, कि मैं जानता हूँ, कि मैं जानता हूँ। प्रभु ने, पवित्र आत्मा के द्वारा निर्माण आरम्भ करने के लिये मुझको कहा। मेरी जिन्दगी में हर एक फैसला इसी अन्दरुनी आवाज पर आधारित है।

संसारिक लोंगो की आत्मा की बातों के विषय की रत्ती भर की जानकारी नहीं। यह इसलिये है कि वे आध्यात्मिक रुप से अन्धे हैं। परन्तु आप जान सकते हैं। क्यों ? क्योंकि आप समझते हैं कि आत्मा कैसे कार्य करता करते हैं तथा आप उनकी आवाज को पहचानना सीख रहें हैं।

ठीक इसी प्रकार हम जानते हैं कि स्वर्ग वास्तविक है, भले ही हम लोगों ने उन मोतियों वाले फाटकों के अन्दर प्रवेश नहीं किया हो। यह पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे लिये एक सजीव बनाया गया है। वचन में स्वर्ग के बारे में पढ़ना तो बहुत अच्छा लगता है, किन्तु केवल वचन पढ़ने से स्वर्ग की सच्चाई प्राप्त नहीं होती है। अनगिनत लोंगो ने बाइबल पढ़ी है, इसके बावजूद वे अनन्त नरक दण्ड के लिये निश्चिंत हैं। क्यों ? क्योंकि वचन ने उनके दिलों में प्रवेश नहीं किया।

उसका जवाब यहाँ है। उन्होने हमें नई वाचा के सेवक होने के योग्य भी किया ''शब्द के सेवक नहीं वरन् आत्मा के, क्योंकि शब्द मारता है, पर आत्मा जिलाता है।'' (2 कुरि. 3:6)

मेरे लिये आश्चर्य की बात तो यह है कि कैसे कोई बाइबल पढ़ कर कह सकता है नहीं, ''मैं नहीं सोचता कि उनका यह मतलब था,'' अथवा उन्होने यह चमत्कार वास्तव में नहीं दिखाया था, ''अथवा उन्होने कुवाँरी मरियम से जन्म नहीं लिया था। यहाँ समस्या स्पष्ट है; वे एक संसारिक बुद्धी से सोच रहे है।''

लेकिन इन्ही मुद्दों में आप दृढ़ विश्वास के साथ चर्चा कर सकते हैं – यहाँ वचन जो आपने पढ़ा है, वह नहीं था; बल्कि इस वचन को

पवित्र आत्मा ने आप से कहा था। ऐसे अनमोल वचन के लिये आप अपने जीवन को भी दाँव पर रखने को तैय्यार होंगे।

अगर वास्तव में आप यह समझना चाहते हैं कि पवित्र आत्मा कैसे बात करते हैं, तो इन सारगर्भित शब्दों को बार – बार पढ़िये, आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की संन्तान हैं। (रोमियों 8:16) यह हम कैसे जानते हैं कि यह सच है ? उसका आत्मा हमारी आत्मा के साथ प्रमाणित करता है। फिर, आप जानते हैं कि आप जानते हैं।

पवित्र आत्मा साक्षी ईश्वर हैं। यीशु ने कहा, जब प्रेरित पतरस यहूदियों के महासभा के समक्ष बुलाये गये थे ? हम इन बातो के गवाह हैं और वैसे ही पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है जो उसकी आज्ञा मानते हैं। (प्रेरितों. 5:32)। यह निरंतर प्रमाणीकरण ही आपको ईश्वर की इच्छा के केन्द्र में स्थिर रखती है।

पवित्र आत्मा ने बाइबल का जो विशेष पद जो मेरे लिये प्रगट किया, जिसने मेरे जीवन का काया पलट किया है, वह यह था, ''प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर पिता का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे।'' आमीन (2 कुरि. 13:14)।

पवित्र आत्मा यह पद बार – बार मेरे सामने लाये। और जितना ज्यादा मैनें उस पर मंथन किया, उतना ज्यादा मैं उत्तेजित हुआ। तुरन्त मैनें जाना कि पवित्र आत्मा मेरे लिये था – आज।

पवित्र आत्मा ने मुझे यही दिखाया। कब हम लोंगो ने जाना प्रभु यीशु ख्रीष्ट की कृपा ? जब वे हमारे लिये मर गये। कब हम लोंगों ने जाना ईश्वर का प्रेम ? जब हमने क्रूस देखा। ये दोनो अतीत की घटनायें हैं। परन्तु अब हम पढ़ते हैं पवित्र आत्मा का साहचर्य आप सभी के साथ

हो। मैं प्रफुल्लित हुआ। मैनें कहा, हाँ बिल्कुल ठीक। पवित्र आत्मा यहाँ मेरे साथ साहचर्य करने के लिये हैं, तथा मेरे साथ रहने के लिये हैं, अब।

कैसा साहचर्य!

बाइबल के अनुसार साहचर्य का अर्थ क्या होता है ? इसके सात अर्थ होते हैं।

पहला, साहचर्य शब्द का अर्थ है उपस्थिति। आपके प्रति पिता ईश्वर की इच्छा यह है कि पवित्र आत्मा का सुसान्निध्य आपके साथ रहे।

दूसरा, उसका अर्थ है साहचर्य। आपको पवित्र आत्मा से बिनती करने की जरुरत नहीं है; आप उनके साथ यों ही साहचर्य कीजिये। और आपको इस साहचर्य के लिये एक तृष्णा चाहिये जैसे आप मरुभूमि में पानी के लिये तरस रहें हों।

तीसरा, अर्थ है आपस में बाटना। आप अपना दिल खोल कर उनके सामने रखते हैं और वे आपके सामने रखते हैं। आप अपना सुख बांटते हैं और वे अपना बांटते हैं। ''वह पवित्र आत्मा को अच्छा लगा, और हमको भी .....'' अन्ताखिया की कलीसिया को प्रेरितों ने लिखा (प्रेरितों. 15:28)। वे आपस में बांट रहे थे – यहाँ तक पत्रों के माध्यम से भी।

चौथा, साहचर्य का अर्थ है सहभागिता। पवित्र आत्मा आपके हिस्से दार बन जाते हैं। बाइबल में ऐसे पद भरे पड़े हैं, उनके साथ कार्य करते, और आत्मा और हम, जो इसका स्पष्टीकाण करते हैं कि पवित्र आत्मा का कार्य आपके साथ सदा सहभागिता के साथ होता है।

पाँचवा, इसका अर्थ है घनिष्टता। आप ख्रीष्ट के साथ एक अगाध प्रेम का अनुभव कभी नहीं कर पायेंगे जब तक कि आप वह प्रेम पवित्र आत्मा के साथ नहीं जानेंगें, जो आप में यह घनिष्ठता ला देते हैं। इसके सिवाय और कोई उपाय नहीं हैं। ईश्वर ने अपना प्यार पवित्र आत्मा जो

हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है। (रोमियों 5:5)। आप पवित्र आत्मा के बिना ईश्वर को प्यार नहीं कर सकते।

छठा, इस शब्द का अर्थ है मित्रता। पवित्र आत्मा आपका घनिष्टतम् मित्र बनने के लिये तरसते हैं, जिनके साथ आप अपने दिल की सारी गुप्त बातें भी कह सकते हैं।

और सातवाँ, साहचर्य का अर्थ है मैत्री। यूनानी भाषा में अंग्रेजी शब्द का अर्थ (कमान्डर) होता है – वह एक कप्तान, एक शासक, अथवा एक मालिक के समान है – किन्तु एक स्नेही और सौम्य व्यक्ति। ऐसा ही, जैसा पवित्र आत्मा ने प्रेरितों को आदेश दिया कि उन्हें कहाँ – कहाँ जाना चाहिये, वैसे तो आपको अपने जीवन की वैयक्तिक बातों में भी पवित्र आत्मा को संचालन करने देना होगा। ध्यान दें, चूँकि ख्रीष्ट चले गये, इसलिये पवित्र आत्मा ही इस धरती पर कार्य सम्भाल रहें हैं।

क्या आप उनकी आवाज सुन रहें हैं ? क्या आप उनके साथ साहचर्य करने को तत्पर हैं ?

जब मैनें पवित्र आत्मा के साथ साहचर्य प्रारंभ किया, मैनें दिन और रात उनके साथ बात की। एक दिन भी ऐसा नहीं गुजरा, जब मैनें यह नहीं कहा हो, ''पवित्र आत्मा, परमप्रिय पवित्र आत्मा।'' और हम लोंगों ने अपनी प्रार्थना एवं साहचर्य का मधुर क्षण शुरु किया।

आह, उसकी वाणी की आवाज।

अध्याय 6

आत्मा, प्राण, और शरीर

महा धोखेबाज शैतान ने एक अविश्वसनीय काम किया है।

उसने इस दुनिया को – यहाँ तक कि सुसमाचार – सेवा में समर्पित प्रचारको को भी यह विश्वास दिलाया है कि पवित्र आत्मा एक प्रभाव अथवा एक विशेष शक्ति से बढ़ कर कुछ नहीं हैं। यह धोखा शैतान की प्राथमिकता है क्योंकि वह जानता है कि जिस घड़ी आप पवित्र आत्मा के व्यक्तितव एवं सच्चाई को पहचान लेंगें, उसी घड़ी आपका जीवन अकस्मात् बदल जायेगा।

इतिहास का पन्ना पलट कर देखिये। प्रत्येक महाजागण के पीछे पवित्र आत्मा का प्रकाशन अवश्यम्भावी रहा है। यहाँ तक कि मार्टिन लूथर अपने पुनर्जागरण का श्रेय पवित्र आत्मा को ही देते हैं। उन्होने कहा कि बाइबल में उनकी सर्वाधिक मनपसंद पुस्तक गालातियों की थी, क्योंकि उसमें एक पद है जिसने उनके मर्म को स्पर्श किया था; ''आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।'' (गलातियों 5:16)।

परन्तु आजकल बहुत कम लोग ऐसे हैं जो आत्मा में चलने का मतलब जानते हों। इस शब्द का मौलिक अर्थ है; मेल मिलाप के साथ सम्मिलित रुप में, अथवा संबंध रखते हुए यहाँ तक कि साहचर्य के साथ भी। यह ताज्जुब की बात है, किन्तु आत्मा – पूरित चर्च में पाले – पोसे आ रहे लोगों ने भी मुझसे यह सवाल किया है; क्या मुझसे आत्मा से बात करने की आशा की जाती है ?

हाल ही में एक बड़े ऐतिहासिक पेन्तीकॉस्टल चर्च में प्रवचन देने के लिये मैं आमंत्रित किया गया था, और सारी सभा दंग रह गयी जब मैंनें कहा, ''आप ही लोग हैं जिन्होने पवित्र आत्मा को पुनः खोजा है, पर

आपने उसे एक पिंजरे में बन्द रखा है।'' मैनें आगे स्पष्ट किया, आपने सोचा कि ''कैथोलिक विस्मयी पवित्र आत्मा को पा नहीं सके। आपने यह भी सोचा कि बैप्टिस्ट विश्वासी भी उन्हें पा नहीं सके। परन्तु मैं आपके लिये एक खबर लाया हूँ। पवित्र आत्मा नें आपका घेरा फान्द लिया है, और सन्त माइकल में चले गये हैं, पहला बेप्टिस्ट, संयुक्त मेथोडिस्ट, तथा बाकी सभों के पास।''

लाखों लोग पवित्र आत्मा से प्रभावित हुए जा रहे हैं, लेकिन उनका आध्यात्मिक विकास कुछ ऐसे पादरियों – पुरोहितों – जो पवित्र आत्मा को त्रिएक ईश्वर में बराबरी का स्थान न देकर दोयम दर्जे का मानते हैं – के स्वार्थ उद्देश्यों के कारण बढ़ नहीं पा रहा है।

दुर्भाग्य वश यीशु ख्रीष्ट की ही कलीसिया ने यह बात, जो मैं आपसे कह रहा हूँ, की उपेक्षा की हैं। वह तथ्य कि आप यह पुस्तक पढ़ रहें हैं, इस बात का प्रमाण है कि आप में पवित्र आत्मा को जानने की एक व्यक्तिगत लालसा है। आप पवित्र आत्मा से परिपूरित हो सकते हैं तथा उनके साथ एक अविस्मरणीय मुलाकात भी सम्भव हो सकती है, किन्तु पवित्र आत्मा के बारे में एक गहरी समझ रातों – रात सम्भव नहीं हो सकती है। मेरे लिये तो पवित्र आत्मा के मार्ग दर्शन और बाइबल अध्ययन और इसके प्रकाशन में कई वर्ष लग गये। और अब भी रोज – रोज सीख रहा हूँ।

ईश्वरत्व

ईश्वरत्व के विषय में आपके साथ मैं जो बांटने जा रहा हूँ उससे पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा का बिल्कुल एक नया रुप मुझे मिला। मैंने पाया कि ईश्वर एक अनन्त आत्मा है, फिर भी वह एक अमूर्त रुप सहित

है। किन्तु वह अपने को बार – बार मनुष्य के रुप तथा अन्य मानवीय विशिष्टताओं के माध्यम से प्रगट करता है।

पिता ईश्वर

मनुष्य के सामने बारम्बार प्रगट होने का ईश्वर का तरीका है ? ईसा पूर्व 593 में जब यहेजकेल को ईश्वर के दर्शन हुए, तो उसने ईश्वर को ''एक ऐसे विस्तार की ऊँचाई पर विराजित देखा, जिसने सारे जीवों को प्रभु की महिमा से अलग किया। उसने देखा सिंहासन के समान, एक नीलमणी के रुप में ..... इस सिंहासन के ऊपर मनुष्य के समान कोई दिखाई देता था।'' (यहेजकेल 1:26)। पिता ईश्वर का रंग रुप क्या था ? एक मनुष्य के समान।

आप कहते हैं, मुझे सिखाया गया है कि ईश्वर निराकार है, आत्मा है। जी हाँ, पर एक निगूढ़ रुप के साथ है, आकाश में मंडराते कुछ बादल नहीं। प्रकाशितवाक्य में प्रेरित यूहन्ना ने ईश्वर को प्रतिबिम्बित चमकीले बहुमूल्य नीलमणियों के साथ वर्णित किया है। उसने कहा, ''तुरन्त मैं आत्मा में आ गया, और क्या देखता हूँ कि एक सिंहासन स्वर्ग में रखा है और उस सिंहासन पर कोई बैठा है। जो उस पर बैठा है वह यशब और माणिक्य – सा दिखाई पड़ता है।'' (प्रकाशन 4:2–3)।

ईश्वर ने यह तथ्य प्रगट किया कि वह देख भी सकता है। ''जो मेरी दृष्टि में बुरा था वही वे करते रहे।'' (यशायाह 66:4)।

मेरे लिये अचम्भे की बात तो यह है कि ईश्वर को ऐसे एक व्यक्ति के समान भी वर्णित किया गया है, जिसके मुख, बाँहें और ऊँगलियाँ हैं। सीनै पर्वत पर मूसा से बात करने के बाद ईश्वर ने उसको ''ईश्वर की ऊँगली से लिखी हुई'' पत्थरों की दो पटियाँ दी (निर्गमन 31:18)। तब

ईश्वर ने मूसा से कहा, तुम मेरा चेहरा देख नहीं सकते, क्योंकि अगर कोई मुझे देख लेगा, वह जीवित नहीं रह पायेगा। (निर्गमन 33:20)।

ईश्वर ने अपनी पीठ के बारे में भी मूसा से बात की। और उसने कहा, ''मेरी महिमा निकल जाते समय ..... मैं ..... मैं तुम्हारे सामने से पार

होऊँगा, तो मैं अपने हाथों से तुम्हे ढक दूँगा। तब मैं अपना हाथ हटा लूँगा, और तुम मेरी पीठ देख सकोगे; किन्तु मेरा चेहरा दिखायी नहीं पड़ेगा'' (पद 22 – 23)।

यदि प्रभु अपने को केवल निराकार आत्मा के रुप में ही प्रगट करता है, तो यह कैसे सम्भव हो सका कि आदम और हवा ने उसकी आहट सुनी ? ''आदम और हवा ने एक दिन, जब शीतल पवन बह रही थी, बगीचे में, ईश्वर के चलने की आहट सुनी'' (उत्पत्ति 3:8)।

ईश्वर का हृदय भी है; प्रभु को इस बात का खेद हुआ कि उसने पृथ्वी पर मनुष्य को बनाया था, और उसको अपने हृदय में बहुत दुःख लगा (उत्पत्ति 6:6)।

''धधकती अग्नि'' की तरह

अब पुत्र के विषय में हम थोड़ा मनन करें।

प्रभु यीशु के इस धरती पर आने के पहले, उसका, पिता ईश्वर के साथ, एक अभौतिक रुप था। माँस, रक्त, और अस्थि का एक भौतिक शरीर उनको तब दिया गया जब बैथलहम में एक शिशु के रुप में उनका जन्म हुआ। और आपके समान वे एक मनुष्य बन गये।

अगर मैं पूछूँ, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में वास्तविक मनुष्य कौन हैं ? अधिकांश लोग कहेगें, पुत्र। हम अपने को ख्रीष्ट के साथ सहज ही मिलान कर सकते हैं, क्योंकि उन्होने एक एक मानव रुप धारण किया। दरअसल, यदि आप यह विश्वास नहीं करते कि ख्रीष्ट ने जीवन

जिया, ख्रीष्ट मर गये, और वे मृतकों में से जी उठे, तो एक मसीही होना आपके लिये नामुमकिन है। यह बुनियादी सच्चाई ही आपकी मुक्ति सम्भव बनाती है।

बाइबल यह स्पष्ट करती है यीशु – ईश्वरत्व अंग की एक आत्मा है। गतसमनी में, क्रूसारोपण के पूर्व, उन्होने अपने शिष्यों से कहा, ''मेरी आत्मा इतनी अधिक उदास है कि मैं मरने – मरने को हूँ'' (मरकुस 14:34)। हमारे सामने ख्रीष्ट का एक शरीरिक चित्रण दिया गया है जिसके कारण हमारे मन में उनका एक बिम्ब पैदा होता है। उदाहरणार्थ, हम जानते हैं कि उनकी दाढ़ी थी और लम्बे – लम्बे केश थे। पुराने नियम के मसीहा संबंधित भविष्यवाणी में, प्रभु कहता है, मुझे मारने वालों के सामने मैनें अपनी पीठ कर ली, और दाढ़ी नोचने वालों की तरफ अपना गाल (यशायाह 50:6)। यीशु नासरथ के निवासी थे। और नासरथ एक ऐसा नगर था, जहाँ के लोंगो को प्रायः लम्बे – लम्बे बाल रखने की एक प्रथा थी।

आज, ख्रीष्ट अपने पुनरुत्थित शरीर के साथ पिता ईश्वर की दाहिनी ओर विराजमान हैं। और वे किस प्रकार दिखते हैं ? यूहन्ना को ख्रीष्ट के संबंध में एक दिव्य दर्शन हुए, जिसका वर्णन प्रकाशितवाक्य में इस प्रकार है, ''पाँवों तक का वस्त्र पहिने और छाती पर सोने का पटुका बाँधे हुए था। उसके सिर और बाल श्वेत ऊन वरन् पाले के समान उज्वल थे और उसकी आँखें आग की ज्वाला के समान थीं। उसका मुँह ऐसा प्रज्वलित था, जैसा सुर्य कड़ी धूप के समय चमकता है।''(प्र.वा. 1:13,14,16)। उसके सिर पर एक ''स्वर्ण मुकुट'' था।(14:14)। तथा उसके वस्त्र पर ये शब्द ''राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु'' अंकित थे (19:16)।

यह पिता ईश्वर नहीं हैं, जिसके बारे में युहन्ना ने यहाँ चित्रण किया है। यह मानव पुत्र है। तथा इनका महिमान्वित मानव शरीर पिता ईश्वर के दैविक रुप से भिन्न है।

उनका अपना एक मन

लेकिन पवित्र आत्मा के बारे में आपकी क्या राय है ? क्या उनका भी अपना एक मन, एक इच्छा, और भावनाएँ हैं ? क्या उनका एक शरीर है ? यह एक ऐसा विषय है। जिसकी अधिकतर प्रचारक चर्चा करने में हिचकिचाते हैं। पर मैनें इस पवित्र आत्मा व्यक्ति का अनुभव किया है।

यह कहना नहीं होगा कि इस सत्य पर हम सब सहमत हैं कि वे एक ''आत्मा'' हैं। यह उनके नाम का एक भाग भी है। परन्तु उनके आन्तरिक जीव के संबंध में आप क्या कहते हैं ? क्या यथार्थ में वे एक व्यक्ति हैं ?

सबसे पहले पवित्र आत्मा का एक अपना मन है। उनके विषय में बात करने के संदर्भ में पौलुस ने कहा, ''हमारे हृदय के सहस्य को भांपने वाला ईश्वर जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है ? क्योंकि वह पवित्र लोंगों के लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिनती करता है।'' (रोमियों 8:27)। पवित्र आत्मा का मन पिता और पुत्र के मन से भी भिन्न है।

दूसरी बात कि उनकी भावनायें भी हैं। उनकी गहरी भावनायें हैं, जो उनको दुखित होने और प्यार करने में एक अहंम भुमिका निभाती हैं। और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो जिससे तुम पर छुटकारे के दिन के लिये छाप दी गई है।(इफिसियों 4:30)। उनके हृदय का स्पर्श किया जा सकता है और उसमें प्यार करने की क्षमता है। पौलुस ने रोम के मसीहियों के पास पत्र लिखते हुए कहा, ''भाइयो, हमारे प्रभु यीशु मसीह के और पवित्र आत्मा के प्रेम का स्मरण दिलाकर मैं तुम से

बिनती करता हूँ कि मेरे लिये परमेश्वर से प्रार्थना करने में मेरे साथ मिलकर लौलीन रहो।''(रोमि.15:30)। क्या आप भावना के बिना प्रेम की कल्पना कर सकते हैं ?

पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व

पवित्र आत्मा की इच्छा के विषय में आपका क्या विचार है ? शायद आपने यह कभी सोचा भी नहीं है कि पवित्र आत्मा स्वयं अपना निर्णय कर सकते हैं। निस्संदेह, वे अपना निर्णय कर सके हैं, किन्तु वे अपना निर्णय हमेशा पिता और पुत्र के निर्णय से सामंजस्य के साथ करते हैं। आध्यात्मिक वरदानो की चर्चा के प्रसंग में पौलुस ने लिखा, ''वही एक आत्मा कराता है और जिसे जो चाहता है वह बाँट देता है।''(1 कुरि. 12:11)। दूसरे शब्दों में पवित्र आत्मा निर्णय लेता है।

कबूतर और मेम्ने

पवित्र आत्मा के शरीर का प्रश्न हमें बड़ी दुविधा में डाल देता है। हाल ही में एक आदमी ने मुझसे कहा, बेन्नी, पवित्र आत्मा का शरीर वास्तव में एक कबूतर के समान है। क्योंकि इस रुप में ही वह स्वर्ग से उतर आया। अगर यह बात सच है तो आपको इस बात का भी विश्वास करना होगा कि यीशु एक कोमल मेम्ना था। क्योंकि ऐसे ही एक रुप में यीशु प्रकाशित वाक्य में चित्रित किये गये हैं।

प्र.वा. में यूहन्ना ने प्राचीनों में से एक को कहते सुना मत रो, ''देख यहूदा के गोत्र का वह जयवन्त हुआ है (प्र.वा.5:5)। उसने एक गरजते शेर को देखने की आशा में मुड़कर देखा, और शेर के बदले उसने वध किये गये, एक छोटे मेम्ने को पाया। अब यीशु एक भौतिक शरीर के साथ स्वर्ग में गये, उनकी हथेलियों में कीलों के निशान थे। लेकिन जो प्रतीक यूहन्ना ने देखा वह तो मेम्नें का था। क्यों ? मेम्ना ईश्वर के मेमने का

प्रतीक था – यीशु ख्रीष्ट। और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी से ऊपर आया और देखो ''उसके लिये आकाश खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते देखा।'' (मत्ती 3:16)। जिस प्रकार पिता और पुत्र देखे जा सकते हैं, ठीक उसी प्रकार पवित्र आत्मा भी। लेकिन एक खूबसूरत कबूतर के आकार में उनके अवरोहण का यह कतई मतलब नहीं कि वे एक कपोत की तरह स्वर्ग में चारों ओर उड़ते रहते हैं। और न ही यीशु एक मेम्ने के शरीर के साथ स्वर्ग में चौकड़ी भरते रहते हैं।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पवित्र आग की जलती सात मशालों की तरह दिखाई देने का वर्णन है (प्रका. वा. 4:5)। यदि मत्ती के अनुसार पवित्र आत्मा एक कबूतर के रुप में प्रगट हुए, तो आप पवित्र आत्मा से सात मोमबत्तियों से या आग के सात टुकड़ों से निर्मित एक शरीर की आशा नहीं कर सकते। एक मेमना, एक कबूतर, एक मशाल – ये सब प्रतीक हैं, न कि शरीर के भौतिक रुप।

सुनते, बोलते, देखते

बाइबल हमें बताती है कि यद्यपि पवित्र आत्मा के कान और मुँह नहीं होते, तो भी वे सम्पर्क कर सकते हैं। वे निश्चित रुप से हमको ध्यान पूर्वक सुन सकते हैं और हमसे बातचीत कर सकते हैं, ''और वह जो कुछ सुनता है, वही बतायेगा''(यूहन्ना 16:13)। और हमको भी उसकी वाणी सुननी होगी। ''पवित्र आत्मा जो कहता है, वह उसे सुन ले''(प्रका.वा.2:7)। और उनकी मेरी जैसी आँखें नहीं होने पर भी पवित्र आत्मा सब कुछ खोज निकालता है, हाँ, यहाँ तक ईश्वर का रहस्य भी (1 कुरि. 2:10)। चूँकि आप कानों, आँखों और मुँह के साथ सृजे गये थे, तो क्या अपने

सृष्टिकर्ता – पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा – से आपको यह अपेक्षा नहीं कि वे आपको सुनने समझने और आपसे बात करने में सक्षम हों ?

मैं यह भी विश्वास करता हूँ कि पवित्र आत्मा अपने शारीरिक रुपों में प्रकट कर सकते हैं, और इसके बावजूद वे असीमित, अनन्त और सर्वव्यापी रह सकते हैं। बाइबल इस सत्य की पुष्टि करती है, जब वह कहती है, ईश्वर का आत्मा सागर पर मण्डरा रहा था (उत्पत्ति 1:2)।

अब बाइबल यह नहीं कहती कि पवित्र आत्मा कैसे दिखते हैं। पर पिता अपने को कैसे प्रगट करते हैं उसकी मुझे थोड़ी सी जानकारी मिली है। और ख्रीष्ट के बारे में भी थोड़ी बहुत रुप – रेखा मिली है। अपितु पवित्र आत्मा अपने को किस प्रकार अभिव्यक्त करते हैं इसके वस्तुतः वर्णन बाइबल में बिरले ही मिलते हैं। कहीं, कभी वे दिखाई पड़े, पर सुने नहीं, और कहीं वे सुनाई पड़े, तो दिखे नहीं। खैर, जो भी हो वे अपनी उपस्थिति एवं संदेश को कहीं भी, कभी भी, अपने मनचाहे किसी भी रुप में प्रगट कर सकते हैं।

एक अपूर्व सदृश्य

''पिता ईश्वर कभी – कभी किस प्रकार दिखाई देते हैं ?'' हालांकि मैनें उनको कभी किसी भौतिक दृश्य रुप देखा नहीं है, मै यकीन करता हूँ – जैसे पवित्र आत्मा के विषय में – कि वे अपने को जैसे यीशु इस धरती पर दिखते थे उनके समान प्रगट कर सकते। वास्तव में अनेक दैविक चारित्रित विशिष्टताओं मानव रुपों जो ईश्वर की प्रति छाया में बनाये गये हैं, के माध्यम से सर्वाधिक स्पष्ट रुप अभिव्यक्त की जाती है (उत्पत्ती 1:26,27,याकूब 3:9)।

इब्रानियों का ग्रन्थ ख्रीष्ट के विषय में इस प्रकार कहता है, वह पुत्र पिता की महिमा का प्रतिबिम्ब और उसके व्यक्तिगत रुप का प्रत्यक्ष

प्रतिरुप है (इब्रानी 1:13)। मैं तो सिर्फ इस निष्कर्श पर ही पहुँच सकता हूँ जब हम यीशु को देखते हैं, हम पिता को भी देखते हैं। और यह मेरा विश्वास है के जिस प्रकार यीशु पिता को प्रगट करते हैं, ठीक उसी प्रकार वे पवित्र आत्मा को भी देखते हैं।

एक दिन मैं इसे अवश्य सिद्ध करने जा रहा हूँ। और मेरा यकीन है कि उस समय आप भी वहाँ होंगे।

फिर दूसरी बात है कि पवित्र आत्मा आपके जीवन के अन्दर बाहर मंडराते रहने वाला कोई अलौकिक समीर अथवा धुंधला सा बादल नहीं। वे ईश्वर हैं तथा वे हममें निवास करते हैं – ईश्वरत्व में पिता और पुत्र की बराबरी के साथ। पौलुस ने कुरिन्थि की कलीसिया को खत लिख कर कहा, क्या आप यह नहीं जानते कि आप ईश्वर के मंदिर हैं तथा ईश्वर का आत्मा आप में निवास करता है ? यदि कोई ईश्वर के मंदिर को नष्ट करता है, तो ईश्वर उसका सर्वनाश करेगा। क्योंकि ईश्वर का मंदिर पवित्र है और वह मंदिर में वास करता है। हम ही लोग वह मंदिर हैं, और पिता तथा आत्मा दोनो हम में समरुप में हैं।

पिता और पुत्र के साथ समानाधिकार

पवित्र आत्मा यों ही एक व्यक्ति नहीं हैं, जो पिता से अलग हैं और पुत्र से भी अलग। वे उससे भी ज्यादा हैं। वे ईश्वर हैं पिता और ख्रीष्ट के साथ समानाधिकार में हैं।

सबसे पहले – हम जानते हैं कि पवित्र आत्मा सर्वव्यापी हैं। अर्थात् वे एक समय में सभी जगहों पर हो सकते हैं। आत्मायें सर्वव्यापी नहीं होती हैं, पर पवित्र आत्मा हैं। वे लेनिग्रेड में जितने वास्तविक हैं, उतने लॉस ऐजेलस में भी। (वे केरल में जितने वास्तविक हैं, उतने कश्मीर में भी)। पूर्ण रुप से जीवित पूर्ण रुप से महिमा से परिपूरित।

अब कुछ लोग शैतान के विषय में अनावश्यक समस्यायें खड़ी करते हैं। वे सोचते हैं कि शैतान सर्वव्यापी है। वह एक ही समय में सभी

जगहों पर नहीं हो सकता क्यों ? क्योंकि दूतगण एक ही समय में सभी स्थानों पर नहीं हो सकते है, और शैतान जो पहले स्वर्गदूत था, एक महादूत। स्वर्गदूत मिखाएल और गाब्रिएल सर्वव्यापी नहीं हैं, और न ही शैतान।

भजन संहिता में पवित्र आत्मा की सर्वव्यापकता इस प्रकार चित्रित है।

मैं तेरे आत्मा से भाग कर किधर जाऊँ ?
या तेरे सामने से किधर भागूँ ?
यदि मैं आकाश पर चढ़ूँ तो तू वहाँ है।
यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊँ तो वहाँ भी तू हैं।
यदि भोर की किरणों पर चढ़कर समुद्र के पार जा बसूं तो वहाँ भी तू अपने हाथ से मेरी अगुवाई करेगा।
और अपने दाहिने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा। (भ.सं.139:7–10)।

किन्तु पवित्र आत्मा न केवल सर्वव्यापी हैं, बल्कि वे सर्वशक्तिमान् भी हैं। स्वर्गदूत ने मरियम से कहा, पवित्र आत्मा आप पर उतरेगा, और सर्वोच्च प्रभु की शक्ति आप पर छा जायेगी (लूका 1:35)। सर्वोच्च प्रभु की शक्ति का तात्पर्य ईश्वर के आत्मा से है। इस सर्वोच्च की यही शक्ति पवित्र आत्मा हैं तथा वे सर्वशक्तिमान् हैं। महा प्रतापी। महाशक्तिशाली। सर्वशक्तिमान्।

पवित्र आत्मा सर्वज्ञानी भी हैं। वे सब कुछ जानते हैं, सब कुछ का ज्ञान भण्डार हैं। मैं निम्नलिखित पदों को पढ़ लेता हूँ, तो काफी उत्तेजित हो जाता हूँ,

जो बातें आँख ने नहीं देखीं

और कान ने नहीं सुनीं,
और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी
वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम
रखने वालों के लिये तैय्यार की हैं।
परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया
क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गुढ़ बातें भी जाँचता है
मनुष्यों में कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है
केवल मनुष्य का आत्मा जो उसमें है ?
वैसे ही परमेश्वर की बातें भी
कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा।(1कुरि. 2:9–11)।

यहाँ थोड़ा गौर कीजिये। पवित्र आत्मा वास्तव में ईश्वर के मन को खोजते हैं – वे वहाँ जो पाते हैं, उसे आपके समक्ष व्यक्त करते हैं। वे कहते हैं, यही हैं जो मैनें पाया। ईश्वर के अन्तरतम की बातें वे कैसे खोज सकते हैं ? क्योंकि वे समूचे ज्ञान का भण्डार हैं, सर्वज्ञानी हैं।

शैतान के संबंध में यहाँ कुछ और बातें हैं, जो आपको जानना जरुरी है। वह आपके मन को जान सकता है। दूतगण आपके मन को जान नहीं सकता, और शैतान तो एक दूत है। यदि वह आपको मन जान सका, तो वह सब कुछ जाननेवाला एक आत्मा होता। परन्तु वह स्थान पिता और पवित्र आत्मा के लिये सुरक्षित है। शैतान आपके मन को जान नहीं सकता।

क्या उनकी आराधना की जानी चाहिये ?

यहाँ मुझे एक महत्वपूर्ण सवाल उठाना होगा। अगर पवित्र आत्मा सर्वव्यापी हैं, अगर वे सर्वशक्तिमान हैं, अगर वे सर्वज्ञानी हैं, तो क्या हमें

ईश्वर के रुप में उनकी आराधना करनी चाहिये ? क्या वे हमारी स्तुति एवं आराधना के पात्र हैं ?

पवित्र आत्मा की आराधना के विषय आते ही मसीहियों के सामने एक जटिल समस्या खड़ी हो जाती है। यह एक ऐसी विषय वस्तु है जिस पर चर्चा करना वे पसंद नहीं करते। और यदि आप उनसे पूछें, क्यों आप पवित्र आत्मा की आराधना नहीं करते हैं ? तो वे इसका कोई जवाब नहीं दे पाते हैं। तब, इस हालत में वे कुछ इस तरह का जवाब देंगें, अच्छा, हमसे तो इसकी आशा नहीं की जाती।

हालांकि पवित्र आत्मा आसमान में उड़ती उस चिड़िया से भी लाखों गुना बढ़कर हैं, जो आपको पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के अवतरण का एक अनुभव दिलाती है। अगर अब पवित्र आत्मा के बारे में जो भी चर्चा करते आ रहे हैं, वह स्पष्ट है – पिता और पुत्र के साथ बारबरी, समानाधिकार – तो उनकी आराधना की जाना अनिवार्य है। आखिरकार, क्या हम पिता की आराधना नहीं करते हैं ? और क्या हम पुत्र की आराधना नहीं करते हैं ?

आप पूछेंगे, पवित्र आत्मा की आराधना किस प्रकार होनी चाहिये ? अच्छा आप पिता ईश्वर की आराधना कैसे करते हैं ? और पुत्र की आराधना कैसे करते हैं ? ठीक उसी प्रकार, यहाँ भी कोई फर्क नहीं होना चाहिये। बस आपको अपनी भक्ति, श्रद्धा और प्रेम को आराधना में उनको बढ़ाना चाहिये ।

बाइबल कहती है कि ईश्वरत्व – पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा स्वविद्यमान हैं ''तो फिर मसीह का रक्त, जिसे उन्होने अनंत आत्मा के द्वारा निर्दोष बली के रुप में ईश्वर को अर्पित किया, हमारे अन्तःकरण के पापों से क्यों नहीं शुद्ध करेगा और हमें जीवन्त ईश्वर की सेवा के योग्य बनायेगा?'' (इब्रानियों 9:14)

जब हम स्वर्गदूतों के बारे में सीखते हैं, तो हम जान जाते हैं कि वे केवल यीशु के उपस्थिति के कारण ही मौजूद हैं। पर मैं आपके लिये एक नयी खबर लाया हूँ। पवित्र आत्मा ईश्वर की तुलना ''मैं हूँ'' से की जा सकती है, ठीक पिता ईश्वर और पुत्र ईश्वर के समान।

तेल, जल, बादल और दीपक

पवित्र आत्मा से मेरी प्रारम्भिक मुलाकात से ही मैनें इस अटुट सत्य का अनुभव किया है कि मैं दिनोंदिन उनकी उपस्थिति में सजीव रुप से बढ़ते और मजबूत होते आ रहा हूँ। प्रत्येक प्रवचन, हर एक मुलाकात और

एक – एक प्रकाशन मेरी जीवन – गति को पवित्र आत्मा में अधिकाधिक सुचारु एवं पूर्णतर बनाता है।

हाल ही में, वचन के अध्ययन के दौरान मैनें अपनी पत्नी से कहा, जानती हो, मैं अपने सम्पूर्ण शरीर में ईश्वर की उपस्थिति महसूस कर रहा हूँ। यह मेरी प्रेरणा, जिसने मेरे हृदयान्तर को छू लिया, मैं उस रात को उन शब्दों का अर्थ और पवित्र आत्मा से उनका संबंध ढूंढ़ रहा था।

मैं आश्चर्य कर रहा था, ''पवित्र आत्मा को 'दुख' देने का वास्तव में क्या अर्थ है ?''

मैनें सीखा है कि पवित्र आत्मा केवल एक आत्मा ही नहीं हैं जिनका कोई रुप हो सकता है। वे इतने वास्तविक हैं कि उनका सामना भी किया जा सकता है। अब बहुत लोग सोचते हैं कि पवित्र आत्मा एक वायु हैं। किन्तु वे नहीं हैं। वायु तो सिर्फ एक प्रतीक है, जो तेल, जल, बादल, कबूतर, प्रकाश और अनेकों प्रतीकों की तरह पवित्र आत्मा का चित्रण करने के लिये इस्तेमाल किया जाता है। इसका कतई मतलब नहीं कि वे अपने इन प्रतीकों के सदृष्य हैं।

वायु तो इन नग्न आँखों के लिये अदृश्य है, पर आप उसका विरोध नहीं कर सकते। यहाँ विरोध का अर्थ रोकना है। आप वायु को रोक नहीं सकते हैं। आप वायु के प्रतिकूल बड़े होने की कोशिश कर देखिये और वह आपके ठीक बगल से निकल जायेगी। लेकिन आप आत्मा का विरोध कर सकते हैं। वास्तव में, उन्हे अपना कार्य करने से रोक सकते हैं।

महासभा मे स्तेफनुस अपने भाषण में मूसा का उदाहरण देते हुए कहा, ''हे हठीले और मन और कान खतनारहित लोंगो तुम सदा पवित्र आत्मा का विरोध करते हो। जैसा तुम्हारे बाप दादा करते थे वैसे ही तुम भी करते हो।'' (प्रेरित 7:51)।

उन लोंगों ने उनका विरोध किया, और दुर्भाग्यवश वे सफल हुए। यह बात याद रखियें, वायु, तेल, या उड़ जाने वाले एक कपोत तक का आप विरोध नहीं कर सकते, पर एक व्यक्ति का आप विरोध कर सकते हैं – और पवित्र आत्मा भी ऐसे ही हैं।

तब मैनें दुख और दुखित शब्दों का अर्थ मूल भाषा, यूनानी, में खोज निकाला। इसका मूल शब्द है लूपा, और जिसका अर्थ है शरीर एवं मन में दर्द महसूस होना। अर्थात् शारीरिक और मानसिक कष्ट झेलना।

पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है, अन्यथा पौलुस ने यह नहीं कहा होता, ''पवित्र आत्मा को शोकित मत करो'' (इफिसियों 4:30)। पवित्र आत्मा को यों ही चोट नहीं लगती। चोट भावनाओं के स्तर पर गहराई में कार्यरत होती है। उनको दुख होता है, और वह अन्तरआत्मा तक पहुँच जाता है।

इतना ही नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा को दबाया जा सकता है। इस शब्द का अर्थ है, दबाना या दमन करना। पौलुस ने थिस्सलुनिकियों की कलीसिया को चेतावनी दी ''आत्मा को न बुझाओ'' (1 थिस्स. 5:19)। आप वायु या अन्य प्रतीकों को दबा नहीं सकते हैं। किन्तु आप एक आदमी को रोक सकते हैं। और पवित्र आत्मा भी ऐसे ही हैं।

बहुत आसानी से घायल

आपको यह भी समझना आवश्यक है कि पवित्र आत्मा को वेदना और यातना दी जा सकती है। उनको व्याकुल किया जा सकता है। यशायाह नबी ने इस्त्राएल के प्रति प्रभु की प्यार भरी अनुकम्पा और दया के विषय में कहा, ''परन्तु उन लोंगों ने विद्रोह किया और पवित्र आत्मा को व्याकुल किया इसलिये वह उन लोंगो का शत्रु हो गया, और उनके खिलाफ युद्ध किया।'' (यशायाह 63:10)। यह कल्पना करना मुश्किल है, पर यह सच है। पवित्र आत्मा को मनुष्यों के द्वारा यातना दी जा सकती है। मूल भाषा में अर्थ है थका देना, परेशान करना, व्याकुल करना और कष्ट देना। केवल व्यक्ति को ही ऐसी यातनाओं का निशाना बनाया जा सकता है।

एक प्रचण्ड वायु को शांत नहीं किया जा सकता है, पर पवित्र आत्मा को किया जा सकता है; ''और उसने मुझे बुलाया और मुझसे बात की, देखो उन्होने ..... मेरे आत्मा को विश्राम दिया है'' (जकर्याह 6:8)। पवित्र आत्मा एक व्यक्ति हैं जो आपकी इच्छाओं का जवाब देते हैं। आप तो उनमें शांत रहने को कह सकते हैं, और वे मानेंगे। पर तब आप उनको दुखित करने का खतरा मोल ले रहें हैं।

आम सभाओं में बार – बार मैने देखा है कि पवित्र आत्मा कुछ कहने ही वाले थे और तब कुछ मानवीय प्रदर्शन द्वारा उन्हे शांत किया गया। ऐसे पुनीत अवसरों पर मैनें पवित्र आत्मा को पीछे हटते अनुभव किया है।

पवित्र आत्मा कोई झगड़ालू नहीं हैं, वे एक प्रेमी हैं। अगर आप उनका विरोध करेंगे, बस वे यों ही छोड़ देंगे। वे शैतान की तरह नहीं हैं, जिसका, बाइबल के अनुसार, अगर आप विरोध करेंगे, तो वह आपसे भाग जायेगा। पवित्र आत्मा डर से भागने वाले नहीं हैं, पर वे एक घायल दिल

लेकर आपकी उपस्थिति छोड़ देंगे। यदि उनको दर्द दिया गया, तो वे हल्के से पीछे हट जायेंगे। यदि उन्हे दबा दिया, तो वे चुपचाप आप से विदा ले लेंगे। ऐसे सोचने में ही कितनी दुःखद बात है कि लोग ऐसे एक प्रिय व्यक्ति को व्याकुल करने या शांत करने का प्रयास करते हैं। परन्तु लोग ऐसा करते हैं। इस्त्राएल के लोंगों ने किया। आज भी हमारे प्यारे लोग ऐसा करते रहते हैं। पवित्र आत्मा आज भी हमारे प्यार एवं हमारे साहचर्य के लिये तरस रहे हैं। तब हम अपनी अज्ञानता और विद्रोह के द्वारा उन्हे घायल करते हैं।

पिट्सबर्ग में कैथरीन कुल्मैन की वे दर्दभरी आहें अब भी मेरे कानों में गूँज रही हैं, ''कृपया उन्हे घायल न करें। वे मेरे सर्वस्व हैं।''

अध्याय 7

आपके जहाजों के लिये वायु

अगर एक पियक्कड़ लड़खड़ाते हुए रास्ते पर तुम्हारी तरफ आते हुए दिखे, तो तुम रास्ते की दूसरी तरफ चले जाओगे। जब मैं पुण्य देश में था, तब हम बच्चों के लिये पिता जी की यही सलाह थी।

हर एक सुबह मेरे भाई – बहनें भी मेरे साथ कैथोलिक स्कूल जाते थे। और बेशक ऐसा ही हुआ – एक बार नहीं, बार – बार। प्रायः सहज बुद्धी से ही, किसी को एक भी शब्द कहे बिना, पियक्कड़ को देखते ही हमें पापा की वह सलाह याद आती और हम उसे पूरी तरह पार होने तक सड़क के दूसरी तरफ से चलते थे।

हम लोगों ने यह कैसे जाना कि वह पिया हुआ था? हम तो उसके पास यह पूछने नहीं गये, भाई साहब आप पिये हुए हैं ? अथवा अच्छा, मैं आपकी साँस सूंघ लेता हूँ। बिल्कुल नहीं। बच्चे होने पर भी पर भी यह जान गये कि वह मतवाला था। उसका बाह्य रुप – रंग ही सीधा प्रमाण दे रहा था। – उसके चलने का अन्दाज, उसके चेहरे का भाव, उसका अस्त – व्यस्त पहनावा। जैसे इंग्लैड में लोग कहते हैं, वह हवा के झोंके में डोरी कटी पतंग के समान।

उसके इस दुष्ट व्यवहार के पीछे की सच्चाई यह थी वह एक असमाजिक शक्ति से नियंत्रित किये जा रहा था। वह इस अमानवीय प्रभाव का गुलाम हो गया था।

प्रेरित पौलुस अपनी फटकार में इससे भी अधिक कठोर नहीं हो सका, जब उसने कहा, दाखरस – पी कर मतवाले नहीं बनें, क्योंकि यह सारा विषय – वासनाओं का उद्‌गम है, बल्कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जायें (इफिसियों 5:18)। विलासिता के जीवन और धार्मिकता के जीवन में एक बहुत बड़ा विरोध है। पौलुस चेतावनी देता है कि नशा मनुष्य को

नैतिक आचरण की ओर ले जाता है। इसलिये यदि एक स्त्री या पुरुष नशा द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है, तो इससे भी कितना अधिक पवित्र आत्मा एक स्त्री या पुरुष को नियंत्रित कर सकता है।

क्या यह फैसला करने में दिक्कत है कि कौन नियंत्रणाधीन है ? बिल्कुल नहीं हर दिन आप ऐसे लोंगो से मिलते हैं जिनके हृदय और मन ईश्वर से लाखों मील दूर हैं। यह सुस्पष्ट है। यह दूरी आप उनकी भाषा में सुनते हैं। आप यह उनके आचरण और मनोवृत्ति में देखते हैं। ऐसा लगता हैं कि उनके जीवन का हर पल और सब कुछ शैतान नियंत्रित कर रहा है।

आत्मा – पूरित जीवन

किन्तु उस व्यक्ति के बारे में जिसको पवित्र आत्मा के साथ एक व्यक्तिगत मुलाकात का अनुभव हुआ है, आप क्या कहते हैं ? आत्मा – पूरित जीवन के क्या – क्या लक्षण हैं ? ऐसे लक्षण बहुत हैं, और बदलाव तो चौंकाने वाला है। यह वर्णनानीत है। जल्दी ही रचनात्मक और सकारात्मक अभिव्यक्तियाँ पग – पग पर बढ़ने लगती है।

पौलुस के यह कहने, आत्मा से पूरित होते जाने के तुरन्त बाद वह अलग – अलग चार परिणामों का वर्णन करता है, जिनसे आप सब वाकिफ हैं। यह आत्मा की जमीन में बीज बोने तथा एक स्वर्गीय फसल काटने के सदृश्य है।

आप बदल जायेंगे

एक आत्मा – पूरित जीवन का सबसे पहला बदलाव यह है कि आपकी बोली भिन्न होगी। पौलुस ने कहा कि हम, ''एक दूसरे के साथ भजन में बात करें'' (इफि. 5:19)। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि अगर हमारी बातचीत , हमने भजन संहिता का

जो वचन पढ़ा, उसके अनुकूल हो गयी तो वह दुनिया कितनी अजीब जगह होगी।

फिलहाल के एक अध्ययन में यह देखा गया है कि अंग्रेजी भाषा की सम्पूर्ण शब्दावली में सबसे अधिक प्रयुक्त शब्द ''मैं'' है। किन्तु आत्मा संचालित मसीही की एक नयी शब्दावली है। यह आत्मा केन्द्रित नहीं हैं। यह ईश्वर केन्द्रित है। तुरन्त आप कह रहे हैं, प्रभु की स्तुति हो (भजन 150:1) और सारे प्राणी ईश्वर की स्तुति करें (पद –6)।

पौलुस के अनुसार दूसरा लक्षण आप यह देखेंगे, आपका एक नया गीत होगा। वह कहता है कि ''आप गायेंगे और पूरे हृदय से प्रभु के आदर में गाते – बजाते रहेंगे'' (इफिसियों 5:19)। यह एक नये गीत से भी ज्यादा है – यह आपके हृदय में हो रहा एक परिवर्तन है। यह आपके अन्दर की प्रक्रिया है। मैं एक गायक होने का दावा नहीं करता हूँ, पर जब से पवित्र आत्मा से मेरी मुलाकात हुई है, तब से मेरे ओंठों पर हमेशा एक मधुर गाना रहा हैं।

बदलाव का तीसरा लक्षण यह है कि आप धन्यवाद देना शुरु करेंगे; ''हमारे प्रभु यीशु के नाम पर सदा सब कुछ के लिये पिता ईश्वर को धन्यवाद दें'' (पद 20)। सहसा सब कुछ के लिये आप ईश्वर को धन्यवाद देना शुरु करेंगे। अच्छी बातों के लिये और अप्रिय बातो के लिये आप सबके लिये धन्यवाद देंगे। आप यह पहचान लेते हैं कि सभी दानों का मालिक अच्छी तरह जानता है कि आपको क्या जरुरी है। इसका परिणाम यह है कि आपकी मनोवृत्ति में बदलाव आ जाता है। कुछ भी हो, कैसा भी हो, कोई परवाह नहीं, आप कहेगें, आपको धन्यवाद।

चौथा स्पष्ट लक्षण है कि आप एक दास बनेंगे। पौलुस कहता है, ''ईश्वर के आधार में एक – दूसरे के अधीन रहें'' (पद 21)। इसमें तात्पर्य है कि प्रेम में एक दूसरे का आदर – सम्मान करना। आपका दिल एक

दूसरे की मदद करने के लिये लालायित रहेगा। पवित्र आत्मा आपको ऐसी स्थिति में लायेंगे, जहाँ आप कहेंगे, बस, आप मुझे बताइये – मैं कर ही लूँगा।

आत्मा से पूरित होना – का क्या मतलब हुआ ? कुछ लोग सोचते हैं के यह ठीक ऐसा ही है जैसे एक व्यक्ति एक मारुति कार चलाकर पैट्रोल पम्प जाता है और टंकी में पेट्रोल भर लेता है। लेकिन यह कार्य बिल्कुल ऐसे नहीं है।

मेरे लिये अपने प्रवचन मंच पर एक बोतल पवित्र तेल रखा गया है। बाइबल के निर्देश के अनुसार चंगाई के लिये आने वालों पर विलेपन करने हेतु मैं इस तेल का इस्तेमाल करता हूँ। यह एक छोटा बर्तन है और इसमें जैतून तेल भरा है। किन्तु जब मैं उसका उपयोग करता हूँ, वह खत्म होता है। फिर से वह बोतल अपने आप नही भरती है।

इफिसियों के पत्र में लिखे गये इन शब्दों के भर जाने का संबंध किसी बोतल या बर्तन के भर जाने से नहीं है। यूनानी भाषा में इन शब्दों को वर्ततान काल में प्रयोग किया गया है। और यह स्पष्ट करते हैं कि आत्मा से पूरित होना एक ही बार में सदा – सर्वदा के लिये होने वाला एक अनुभव नहीं है। यह निरंतर होते रहने वाला अनुभव है।

क्या आपने कभी समुद्री जहाज की यात्रा में एक दिन बिताया ? यह एक बड़ी लोमहर्षक अनुभूती है। जब जहाज यात्रियों से भर जाता है, तो क्या होता है ? जहाज आगे बढ़ने लगता है। पौलुस तो आप से ही यही कह रहा है। वह चाहता है कि आप भर जायें, एक बर्तन की तरह नहीं जो स्वयं निश्चल और निश्क्रिय है, पर एक जहाज की तरह जो सफर में आखिरी मंजिल तक हवा से चलता रहता है। बारम्बार। वह चाहता है कि आप लोग अपने आध्यात्मिक जहाजों में निरंतर बहती रहने वाली पवित्र आत्मा रुपी वायु से बारम्बार भरते और आगे बढ़ते रहें।

क्या आप सोचते हैं कि आप कौन हैं ?

पवित्र आत्मा से परिपूरित होने से आप में क्रिया चालू होती है। यह क्रिया आपकी बोली में, आपकी मनोवृत्ति में, और आपके कार्य – कलापों में व्यक्त होती है। अब आपके शब्द प्रेरणात्मक हैं, आपके हृदय में एक समरसता है, आप ईश्वर को धन्यवाद देते हैं, तथा आप सच्चे अर्थ में और विनम्र भाव से लोंगो की सेवा करते हैं।

पवित्र आत्मा से पूरित एक स्त्री या पुरुष लोकिकता की बातें कैसे कर सकता है ? उसके पास ईर्ष्या, कटुता और निन्दा से भरा एक दिल कैसे हो सकता है ? पवित्र आत्मा से पूर्ण एक व्यक्ति ऐसे नहीं कहता, आप क्या सोचते हैं कि आप कौन हैं ? यह बतलाने वाले कि मुझे क्या करना है ? अथवा मेरे साथ ईश्वर ऐसे क्यो करता है ? ये लक्षण एक आत्माकेन्द्रित व्यक्ति के हैं जो आत्मा रहित हैं, न कि आत्मा – पूरित।

जब यीशु पिता के पास लौट गये, तो उनका यह विचार नहीं था कि आप अपने आप सब कुछ सम्भाल लें। सहायता तो आ रही होती। फिर भी, यहाँ न आपका सामर्थ महत्वपूर्ण है और न ही आपकी शक्ति, किसी शक्ति या सामर्थ से नहीं, बल्कि मेरे आत्मा से, सेनाओं का प्रभु कहता है (जकर्याह 4:6)।

पवित्र आत्मा के द्वारा ही आप यीशु महिमा करने के योग्य बन जाते है। पवित्र आत्मा के द्वारा ही आपका हृदय भजन से भर जाता है। पवित्र आत्मा के द्वारा ही आप यह कहने में सक्षम होते हैं, यीशु, सब कुछ के लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। और पवित्र आत्मा के द्वारा ही आप यह कहने में समर्थ हो जाते हैं, मैं आपको क्षमा करता हूँ।

यह कैसे हो सकता है कि ईश्वर का प्यार ''विदेश में मेरे हृदय में बहाया गया?'' पवित्र आत्मा के द्वारा।

आपने वायु कभी देखी नहीं है, पर उसका फल आपने अवश्य देखा है। पेड़ झूलता है, झुकता है, झण्डा लहराता है। और जहाज चलने लगता है। वह वायु की शक्ति है।

यह जानने के लिये कि पवित्र आत्मा जीवित हैं आपको पवित्र आत्मा को देखना जरुरी नहीं है। पवित्र आत्मा ने जो शक्ति आपको दी है उससे आप उनके जीवित होने के प्रमाण पहचान सकते हैं। एक बार वे अपने को आप में भर देते हैं, तो फिर उनके प्रमाण खोजने का प्रयास व्यर्थ है। एक आदमी ने एक दिन पूछा, बेन्नी, यह तो मुझे बताइये। क्या मैं पवित्र आत्मा से पूरित हूँ ?

मैनें कहा, भाई, अगर आप नहीं जानते हैं, तो आप नहीं है। जब आप परिणाम देखते हैं, तो आपको पूछना ही नहीं पड़ता है। जो व्यक्ति अपने में आत्मा की भरपूरी का संदेश करता है, उसने आत्मा को कभी नहीं पाया है।

यह मुक्ति से प्रारंभ होता है

आप पूछेंगे, कैसे मैं पवित्र आत्मा से पूर्ण हो जाता हूँ ? यदि मैं आलौकिक भाषा में बात करुँ, तो क्या यही लक्षण हैं ?

जिस समय आप अपने पापों की क्षमा और हृदय को शुद्ध करने के लिये प्रभु यीशु मसीह से कहते है, उसी समय से पवित्र आत्मा आप में विद्यमान रहते हैं। यदि आप इस बात पर विश्वास नहीं करते, तो त्रिएक ईश्वर को आप समझेंगे नहीं। पौलुस ने तीतुस को इस प्रकार लिखा ''अपनी दया अनुसार नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा कि के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ। जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकाई से उंडेला। जिससे हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बनें।'' तीतुस 3:5,7

लेकिन अब हम पवित्र आत्मा के द्वारा परिपूरित होने के विषय में प्रमाण के साथ बता रहें हैं, जो सच में दुनिया भर के लोंगों के द्वारा अनुभव किया गया है। इसके आंकड़े अनगिनत हैं। मैं जानता हूँ कि इसके बावजूद बहुत लोग इस विषय पर बहस करना चाहते हैं, किन्तु जिसको ऐसा अनुभव हुआ है, वह बहस करने वाले किसी भी व्यक्ति के वश में कभी नहीं फसता।

मेरे नया जन्म होने के बाद के कुछ प्रारम्भिक दिनों को कभी नहीं भूलँगा। मैं एक छोटे बालक के समान था – और मैं जानता हूँ कि लोग बच्चों के बारे में क्या – क्या कहते हैं। वे हमेशा गिरते, रोते, और मदद मांगते रहते हैं। बस, मैं तो वही था। सच में, बहुत दिनों से सुनते आ रहे हैं इस संदेह को मैनें गिरजा में एक आदमी को बताया। मैनें कहा, ओह मैं काफी थक गया हूँ।

उसने पूछा, गड़बड़ी क्या है ?

मैनें कहा, मुझे पक्का मालूम नहीं कि मैं पवित्र आत्मा से भरा हुआ हूँ। मैं पूरित नहीं था।

तब उसने पूछा, बेन्नी, क्या यह बात तुमने पवित्र आत्मा से पूछी ?

मैनें उत्तर दिया जी हाँ, सर।

उसने कहा, बस, तुम्हें उतना ही करना है।

अच्छा, तो आप देखिये, मैं मसीह में एक बच्चा था। उस समय मैनें नहीं जाना, जो मैं अब जानता हूँ। वास्तव में मुझे पता नहीं था कि मैं क्या खोज रहा था, लेकिन मैनें किसी को यह कहते सुना, अगर तुम आलौकिक भाषा में बात करते हो, तो, बस तुम्हे उतना ही चाहिये।

जैसे बाद में मैनें जाना, आलौकिक भाषा में बात करना आध्यात्मिक वरदानो में से एक है। इन वरदानो से भी ज्यादा आपको इसके दानकर्ता की जरुरत है। रोम की कलीसिया के पास पौलुस ने लिखा, क्योंकि

ईश्वर अपना दान वापस नहीं लेता है और न ही अपना बुलावा निरस्त करता है। (रोमियों 11:29)। ये दान हमें छोड़कर नहीं जायेंगे, पर हमारी और दानकर्ता की शक्ति का प्रवाह रुक सकता है – और दानकर्ता को कष्ट दिया जाता है और उसकी उपेक्षा की जाती है, तो यह प्रवाह बिल्कुल बंद हो जायेगा।

यह कभी न भूलें कि शाऊल राजा के साथ क्या हुआ। प्रभु ने कहा, ''मुझे बड़ा खेद है कि मैनें शाऊल को राजा बना दिया है, क्योंकि उसने मेरा अनुसरण करने के बदले मेरी ओर पीठ दिखायी है, तथा मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं किया है'' (1शमुएल 15:11)। और जैसे ही नये राजा के रुप में शमुएल के कर कमलों से दाऊद का अभिषेक हुआ ''प्रभु का आत्मा शाऊल से विदा हो गया।'' (1शमुएल 16:14)।

आत्म समर्पण

क्या आपने अपने जहाज की मरम्मत की है ?

आप पूछेंगे, पवित्र आत्मा के पास मुझे कैसे जाना चाहिये ? उनका स्वागत करने में मैं अपने को कैसे तैय्यार कर सकता हूँ ?

मैं आपसे एकाध प्रश्न पूछना चाहता हूँ। क्या आपका जहाज अपनी यात्रा के लिये तैय्यार है ? क्या वह समुद्र यात्रा के लायक है ? क्या आपने जहाज की मरम्मत की है ? क्या पवित्र आत्मा अपनी वायु फूँकने लगते हैं ? तो क्या आपका जहाज आपको ग्रहण करने को तैयार है ?

यह तो एक शादी की तैय्यारी जैसी लगती है। उस पावन वेदी के समक्ष खड़े होने के उस पुनीत अवसर की प्रतीक्षा में आप मनन – चिन्तन एवं तैय्यारियाँ करते रहते हैं। तब आप एक प्रतीज्ञा लेते हैं, आज से आजीवन तक एक साथ जीने और रहने .....। वस्तुतः आप स्वयं को पूर्ण रुप से अपने दाम्पत्य के लिये समर्पित करते हैं। यह एक निस्वार्थ

स्नेहमय समर्पण है। उसी समय से पति पत्नी के बीच में एक अनन्य सहचर्य का अटूट बंधन स्थापित हो जाता है, जो केवल इन दोनों के बीच में ही सीमित रहता है।

लेकिन जब विवाह के इस अटूट बंधन से आप अपना हिस्सा वापस लेते हैं, तो क्या होता है ? आप ऐसा नहीं कर सकते। वह मेरा है। और आपकी पत्नी वही कहती, तो क्या होता ? आपके गहनतम संबंध में दरार पड़ जाती है। एकता चूर – चूर होने लगेगी। साहचर्य लड़खड़ाने लगेगा। मात्र एक समर्पण एवं साहचर्य प्रेम ही समझ को उत्पन्न करता है।

इस टूटे संबंध को जोड़ने का एक ही उपाय है। एक जहाज यात्रा के समान, आप तने और कसे हुए नहीं रह सकते हैं। इसके ठीक विपरीत, आपको लचीला होना और झुकना होगा – वास्तव में एक नयी परिपूर्णता के लिये पुनः समर्पण।

जब कभी आप अपने को प्रभु के लिये समर्पित करते हैं, वे अपने आत्मा से आपको भर देंगें। फिर से परिपूर्णता के लिये आपको अनुनय – विनय करने करने की जरुरत नहीं है। और एक बाल्टी आँसू बहाने की आवश्यकता नहीं है। बस आपको इतना ही पर्याप्त हैः यीशु के लिये एक सम्पूर्ण समर्पण और उनके परम प्रिय पवित्र आत्मा को अपनाने की एक उत्सुकता है।

सम्पूर्ण आत्म समर्पण भरपूरी का कारण बन जाता है, और सम्पूर्ण विनम्रता सम्पूर्ण साहचर्य को जन्म देती है। लेकिन जिस वैवाहिक जीवन में होता है, उस प्रकार आपको दिन प्रतिदिन इसके लिये परिश्रम करना पड़ेगाः प्रभु यीशु, मैं आपसे प्यार करता हूँः पिता ईश्वर मैं आपकी आराधना करता हूँ, परम प्रिय पवित्र आत्मा, मैं आपके साहचर्य के लिये

तरस रहा हूँ। अगर एक दिन ही सही आपने साहचर्य करना छोड़ दिया, हो तो अगली बार यह आपके लिये थोड़ा कठिन होगा।

तेज धार वाली छुरी की तरह

वैवाहिक जीवन में जब एक हिस्सेदार दूसरे की अपेक्षा करता है, तो इसका क्या होता है ? थोड़े समय के बाद कड़ुवाहट जल्दी ही विद्वेष, क्रोध, ईर्ष्या तथा इससे भी अधिक घातक भावों में बदल जाती है। अधिकांश लोंगों के लिये इसका नतीजा अलगाव, तलाक और बैर होता है। लेकिन इस दरार की मरम्मत आसानी से की जा सकती है। अपने हृदय से एक ताजा समर्पण और प्रतिज्ञा का नवीनीकरण प्रेम और आनन्द करने की प्रक्रिया से।

जब, आप प्रभु की उपेक्षा करते हैं, तो भी यही बात होती है। आप कटुता और क्रोध को पोसेंगें। जल्दी ही प्रभु के साथ के इस साहचर्य से आप विच्छिन्न हो जायेंगे। मरुभूमि में इस्त्राएली जनता के साथ भी ऐसा ही हुआ था। वे लोग शिकायत करने लगे, ''अच्छा यही होता कि हम मिस्त्र देश में ही मर गये होते। अथवा इस बंजर भूमि में ही ढ़ेर हुऐ होते। तलवार के घाट उतार दिये जाने के लिये प्रभु हमें यहाँ क्यों ले आये ?''(गिनती 14:2–3)। और प्रभु ने मूसा और हारुन से कहा, ''यह बुरी मंडली मुझ पर बड़बड़ाती रहती है, उसको मैं कब तक सहता रहूँ ?'' (पद 27)।

इस्त्राएली जनता ने आगे शिकायत करते हुए कहा, ''.....हमारे लिये यही अच्छा होगा कि हम मिस्त्र वापस जाएं''(पद 3)। इस्त्राएली जनता का इस कदर तेवर बदलने का क्या कारण था? उन्होने ईश्वर को खोजना बंद कर दिया, तथा उनके हृदय कठोर बना दिये। जो घटनायें

हो रही थीं, उन्हे स्पष्ट समझने के पहले ही इन लोंगो ने ईश्वर को त्याग दिया।

प्रभु के हाथों एक नवीन आत्म समर्पण के बिना आपका एक भी दिन बीतने न दें। पौलुस ने लिखा, ''यद्यपि हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है।''(2कुरि. 4:16)। आत्म समर्पण लगातार होते रहना चाहिये। यह स्वयं को प्रभु के पास खाली करने की एक अन्तहीन प्रक्रिया है। और एक बार इस प्रक्रिया को आप अपनी आदत बनाते हैं, तो प्रभु की सम्पूर्ण एकता, सम्पूर्ण साहचर्य, सम्पूर्ण समझ और सम्पूर्ण प्रेम का आप अवश्य अनुभव करेंगे।

मैं यह विश्वास करता हूँ कि आपके लिये ईश्वर की इच्छा यह है कि आप पवित्र आत्मा से निरंतर परिपूरित हो जायें। एक ही संसार में जब एक तरफ पौलुस कहता है, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जायें, तो दूसरी तरफ वह कहता है, नासमझ न बनें, बल्कि यह पहचान लें कि प्रभु की इच्छा यह है कि प्रत्येक विश्वासी में पवित्र आत्मा बस जायें। प्रत्येक माता प्रत्येक पिता, प्रत्येक युवक – युवती, प्रत्येक बच्चे और आपके लिये भी यही ईश्वर की इच्छा है।

निश्चल रहें

मुझे याद है कि टोरंटो के एक गिरजा में मैनें पवित्र आत्मा से पूरित होने के लिये प्रार्थना करते एक जवान को देखा। उसके चेहरे के उस भाव को मैं कभी नहीं भूल सकता – तना और कसा हुआ। पवित्र आत्मा के साथ एक मुलाकात के लिये वह अक्षरशः अनुनय – विनय कर रहा था।

मैनें उसके पास जाकर कहा, हे भाई, आपके गिड़गिड़ाने से कुछ हासिल होने वाला नहीं है। बस, आप यों ही आराम से रहिये। जब आप

आत्म समर्पण करेंगे, तो यह बिल्कुल आसान होगा। उसने वही किया। और तुरन्त, लगभग उसी घड़ी, पवित्र आत्मा उस पर आ गये। सच में यह बहुत ही सुन्दर था। जैसे ही आलौकिक भाषा में वह प्रार्थना करने लगा, वैसे ही एक मुस्कान उसके चेहरे पर छलकने लगी।

आप कैसे आत्म समर्पण करते हैं ? अगर आप ''प्रयास करेंगे'', तो यह भी नहीं होगा। यह तैरना सीखने के समान है। यदि आप तैरने का संघर्ष करेंगे, तो आप डूबने लगेंगे, और शायद आप डूब भी मरेंगे। यही वजह है कि एक तैराकी प्रशिक्षक एक बच्चे को सर्वप्रथम पानी में आराम से रहने और निश्चल बहने को सिखाता है। जब आप संघर्ष नहीं करते हैं, तो तैरना अपने आप आ जाता है।

आत्म समर्पण के साथ भी ठीक ऐसा ही होता है। एक आत्म समर्पित हृदय में वह स्वतः आ जाता है। जब आप अपने जीवन साथी के रुप में एक व्यक्ति से मिले, तो आपने उससे प्यार करने की कोशिश नहीं की। यह एक ऐसी सच्चाई है कि या तो प्यार उधर है या उधर नहीं है। इसके लिये आपको कोशिश नहीं करनी पड़ती है, क्योंकि प्रेम समर्पण करता है।

जब यीशु आपका प्रभु है, जब आप अपने दिल से उनसे मुहब्बत करते हैं, तो प्रभु के पास आत्म समर्पण करना मुश्किल नहीं है। पवित्र आत्मा के प्रसंग में भी यही बात है। हर एक दिन जब आप अपने को अपने को उनके सामने उपस्थित करते हैं, वे आपको पुनः भर देते हैं। सुबह के सूरज की कोमल किरणों में खिली कली की भांति आप ताजा हो जाते हैं – और ये कलियाँ कभी नहीं मुर्झायेंगी।

मैं आपको बता नहीं पाऊँगा कि कैसे उनके सामने जाना है, किन्तु उनके पास जाने का मेरा यह तरीका है। बहुत बार मैं अपने कमरे में

प्रवेश करता हूँ, कमरा भीतर से बंद कर देता हूँ, तथा मेरे हाथों को ऊपर की ओर उठाकर यों ही खड़ा रहता हूँ। उनको पता है कि मैं उनसे प्यार
करता हूँ, मैं भी जानता हूँ कि वे मुझ से प्यार करते हैं। उनका स्वागत करने के लिये मैं अपने हाथों को खोले खड़ा हूँ।

अब वर्षों पहले एक समय था जब मैनें उनके प्रेम पर प्रश्न किया। उस घटना को मैं अभी भी भूल नहीं सकता। मेरे पापा और मम्मी ''का नया जन्म नहीं हुआ था।'' और हमारे रिश्ते में दरार पड़ गयी थी, और बहुत ही दर्दीली थी। तब एक दिन, कमरे में, मैनें अपनी आँखें ऊपर उठायी, और कहा, यीशु मुझे मालूम है कि आप अपने जीवन्त वचन में कहते हैं कि आप मुझसे प्यार करते हैं .....पर, मेरी थोड़ी मदद कीजिये। मुझसे स्पष्ट बोलिये कि आप मुझसे प्यार करते हैं। और मैं सोने गया।

अर्धरात्रि में उछलती बहती नदी की तेज धारा की एक आवाज सुन कर मैं चौंक उठा। मैं तो केवल इस तरह ही उसका वर्णन कर सकता हूँ कि वह एक घनी और भारी आवाज थी। तब स्पष्ट रुप से एक श्रवणीय आवाज मानो कहीं से नहीं आ रही हो, फिर भी चारों तरफ से अचानक आती हुई मुझसे बोलने लगी। नदी की उस प्रचण्ड धारा के ऊपर से मैनें एक सुस्पष्ट आवाज को यह कहते हुए सुना, ''मैं तुम से प्यार करता हूँ। मैं तुम से प्यार करता हूँ।''यह यीशु की आवाज थी। उस वक्त मुझे ऐसा लगा, जैसे कि मेरे कमरे की दीवारें सच में हिल रहीं थीं। प्रभु की उपस्थिति इतनी असाधारण थी कि मैं डर गया।

लेकिन उस दिन से उनके प्यार पर मुझे कभी कोई संदेह नहीं था। मैं विश्वास करता हूँ कि वे ऐसे अनुभव तब देते हैं जब हमें उनकी जरुरत है न कि जब हम चाहते हैं।

बार – बार मैं अपने कमरे में खड़ा होता हूँ और एक शब्द भी नहीं कहता। मैं पूर्ण रुप से मौन साध लेता हूँ। मुझे पूरा यकीन है कि आपने भी ऐसा अनुभव किया है जब किसी को आपके प्यार का विश्वास दिलाने के लिये आपको एक शब्द भी कहना नहीं पड़ा होगा। ऐसे भी मौके दो व्यक्तियों के बीच आये होंगे; जब एक छोटी मामूली आवाज ही सही उनके उस अविस्मरणीय मौन क्षण को भंग किया होता हो। खामोशी ही अक्सर सर्वोत्तम भाषा हुआ करती है।

अनेक बार मैं अपने कमरे में खड़ा हुआ होता और सहसा मेरी आँखें आँसुओं से भर गई हैं। ज्यों ही वे फिर से मुझे ताजा भरने लगते हैं, सारे माहौल में एक अजीब – सी गर्माहट और खूबसूरती छा जाने लगती है। यह कैसे हुआ ? मैनें क्या किया ? दरअसल, मैनें कुछ नहीं किया, पर एक आन्तरिक आत्मसमर्पण के साथ मैं उनकी उपस्थिति में यों ही खड़ा रहा। परन्तु एक सम्पूर्ण मौन में जो आरम्भ हुआ, वह स्तुति और आराधना के साथ अब लगातार चलता रहा, जो मैं कभी अन्त करना ही नहीं चाहता था।

जब आप ईश्वर के आत्मा से निरंतर भरे हुए रहते हैं, तो आपका आध्यात्मिक जीवन एक असम्भावित आयाम ले लेता है। आपके हृदय को पूरित करने और आपको ताजा बनाने वाली पवित्र आत्मा की वायु का अनुभव करने के लिये आपको यह समझना जरुरी है कि प्रार्थना में आप ईश्वर के सिंहासन तक कैसे पहुँचें।

कदम दर – कदम

प्रार्थना के भिन्न सात चरण हैं।

पहला चरण अंगीकार पापों का है। ईश्वर कौन है यह कबूल करते हुऐ प्रार्थना कीजिये। इबाहिम ने उसे पुकारा, ''परमप्रधान ईश्वर यहोवा,

जो आकाश और पृथ्वी का अधिकारी है।'' (उत्पत्ति 14:22)। सर्वशक्तिमान् की शक्ति की घोषणा करते हुए, आरंम्भ करें। एलिय्याह ने कार्मेल पर्वत पर अपनी प्रार्थना शुरु की, ''हे अब्राहम इसहाक और इस्त्राएल के परमेश्वर यहोवा'' (1 राजा 18:36)। अगर आप चाहते हैं कि अग्नी बरसे, तो यह स्वीकार करते हुए, कि ईश्वर कौन है, आरम्भ करें।

दूसरा चरण है, याचना। यों ही ''अपनी मांगे प्रभु के सम्मुख रख दें।'' दुर्भाग्यवश, इस चरण पर लोग जरुरत से ज्यादा वक्त गुजार देते हैं। ऐसा लगता है कि उनका सम्पूर्ण आध्यात्मिक जीवन सिर्फ जरुरतों, मांगो, और इच्छा पर केन्द्रित है। आपकी व्यक्तिगत समस्यायें प्रभु के ध्यान के योग्य हैं, आपने उन्हे प्रस्तुत किया है, किन्तु अब ''आमीन'' कहने का समय नहीं आया। सर्वोत्तम का इन्तजार कीजिये, प्रभु छप्पर फाड़ कर देने वाला है।

तीसरा चरण आराधना है, जो मुझे बेहद पंसद है। यह परम सौन्दर्य और उत्कृष्ट आराधना का समय होना चाहिये ? उनसे प्यार करें। उनकी आराधना करें। यह ऐसे शब्दों के साथ शुरु किया जा सकता है, ''यीशु, मैं आप से प्यार करता हूँ।'' तुरन्त पवित्र आत्मा की मौजूदगी आप महसूस करेंगे, और दो घंन्टों के बाद आप अपनी घड़ी देंखेंगे और कहेंगे, मैं विश्वास ही नहीं कर सकता कि समय जल्दी बीत गया। यह उतना वास्तविक है, उतना जीवन्त है।

चौड़ा चरण, यह घनिष्टता का समय है। यह इतना प्यारा है, इतना पवित्र है, इतना सुन्दर है कि इसका वर्णन प्रायः असम्भव है। ऐसे भी कुछ अवसर आयें हैं कि प्रार्थना में तल्लीन रहते समय मैनें ऐसे अनुभव किया जैसे कोई मेरे सामने खड़ा था और मेरे माथे पर हाथ फेर रहा था। यह ऐसा था ''मानो प्रभु मुझे कह रहा था, आपको धन्यवाद। आपके साथ रहने में मुझे बड़ी खुशी है।''

ध्यान दें, पवित्र आत्मा आपके साथ जबर्दस्ती कभी नहीं करेंगे। आपके प्रार्थना जीवन में वे मांगे नहीं रखेंगे और न शर्तें। लेकिन यदि आप कहते हैं, प्रार्थना करने में मदद दीजिये, तो वे आपका साथ देने को तत्पर हैं।

मेरे जीवन में कभी – कभी इस चरण में मेरी प्रार्थना लगातार घंन्टो जारी रही है। लेकिन घनिष्ठता कोई खास जगह नहीं है, जहाँ से आप शुरु कर सकते हैं। और न ही इस चरण तक पहुँचने के लिये प्रारम्भिक चरणों में जल्द बाजी करें।

इस प्रणाली का पाँचवां चरण मध्यस्थता प्रार्थना है। यीशु ने कहा था कि पवित्र आत्मा सब कुछ हमारे लिये प्रगट करेंगे, और यही तो मेरे साथ हुआ था। प्रार्थना में सहायता के लिये जब आप पवित्र आत्मा को आमंत्रित करते हैं, तो आपकी स्वार्थपूर्ण जरुरतों और मांगों पर आत्मा अपना ध्यान केन्द्रित नहीं करते। नहीं। ध्यान बाह्योन्मुखी हैं, दूसरों की ओर है। उन्होने कुछ ऐसे लोंगों के नाम और – चेहरे मेरे सामने प्रगट किये हैं, जिनके बारे में सालों से सोचा तक नहीं था। और प्रार्थना में मैनें उनके लिये मध्यस्थता ली।

यहाँ मैं आपको चेतावनी देना चाहता हूँ। एक चुटकी बजते ही मध्यस्थता प्रार्थना में लीन होना मुमकिन नहीं है। यह जादू नहीं है कि छड़ी मारते ही आ जाये। यह ईश्वर के साथ एक साझेदारी है, जहाँ एक गहरे और प्रार्थना – जीवन को धीरे – धीरे, क्रमबद्ध रुप से आगे ले चलते हैं। मेरे साथ यह पहले दिन में नहीं हुआ, न दूसरे दिन में, और न तीसरे दिन में। इस चरण की अथाह गहराई तक पहुँचते – पहुँचते मेरे लिये कम – से – कम छहः महिने लग गये। बाइबल हमें सिखाती है कि यदि हम छोटी – छोटी बातों में ईमानदार रहें तो ईश्वर हमें और भी बड़ी

जिम्मेवारियाँ सौंप देंगे। वे श्रेष्ठतम आदर्श पिता हैं। श्रेष्ठतम आदर्श गुरु हैं।

उपर्युक्त चरण कठिन और कष्टदायी जरुर हैं, पर अगला चरण इसके योग्य है। छठा चरण है, धन्यवाद देना। पौलुस ने लिखा है, ''परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।'' (1 कुरि. 15:57)। पिता को, पुत्र को, और पवित्र आत्मा को धन्यवाद देते हुए मैं हमेशा समय बिताता हूँ।

अन्त में, हम इस प्रार्थना के सातवें चरण में आते हैं अर्थात स्तुति। कभी – कभी मैं गाता हूँ। कभी – कभी मैं आलौकिक भाषा में बात करता हूँ। किन्तु मैं अपने अन्तरतम की गहराई से सम्पूर्ण स्तुति में बोल उठता हूँ, झूम उठता हूँ। मेरे प्रार्थना – जीवन के अनुभव में यह चरण सर्वाधिक शुद्ध रुप है।

अब आपके मन में शायद यह प्रश्न उठ सकता है, बेन्नी, क्या आप हमेंशा सातों चरणों को शामिल करते हैं ? मेरा जवाब साफ है, जी हाँ। और आप पवित्र आत्मा के विषय में अद्वितीय बात है; अगर प्रार्थना आप अपने जीवन के द्वारा पवित्र आत्मा को कार्य करने दें, तो आप यह पायेंगें कि अधिकांश प्रार्थना आप नहीं कर रहे हैं। पूरी की पूरी वे ही कर रहे होंगे। यहाँ तक मध्यस्थता में भी, जो काफी कष्टदायी है, जब आपकी लगातार जारी है, आपको समय – समय पर मरते और ताजा करते हुए पवित्र आत्मा के हाथ ही आपको ऊपर की ओर उठा रहे हैं।

पौलुस ने ठीक ही लिखा है, ''हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना और बिनती करते रहो।'' (इफिसियों 6:18)। उसको मालूम था कि, एक नहीं अनेंक प्रकार की प्रार्थनायें होती हैं।

''वह यहीं है!''

पवित्र आत्मा की भरपूरी की प्रार्थना – जीवन से सीधा संबंध रखती है, इसलिये इसके स्थान पर किसी और बात की प्राथमिकता नहीं दी जा सकती है। पवि. आत्मा की यह शक्ति ही आपकी समस्त गतिविधियों को संचालित करती है।

कुछ दिन पहले, मैं दक्षिण अमेरिका के कोलम्बिया में प्रवचन के लिये निमंत्रित किया गया। यह एक तीन दिवसीय क्रूसेड रहा और दूसरे दिन, बुधवार शाम को मैं पवित्र आत्मा के विषय में बात कर रहा था। प्रवचन के बीच में ही मैनें पवित्र आत्मा की शक्ति को तमाम सभा पर असर डालते देखा। मैनें उनकी उपस्थिति को अनुभव किया, प्रवचन बन्द किया तथा लोंगो से कहा, ''वे यहीं हैं!'' मंच पर के अन्य सेवकों और आगे के श्रोताओं ने भी यही अनुभव किया – यह हवा का एक झोंका जैसा था, जो उस हाल में प्रवेश कर उसके भीतर एक भँवर बन कर रहा था।

एक प्राकृतिक विस्फोट सा, ईश्वर की स्तुति करते हुए लोग स्वतः अपने पैरों पर हो गये, और झूमते गये। लेकिन वे ज्यादा देर तक खड़े नहीं रहे। सब ठप्प, लोग एक – एक कर बैठने लगे और पवित्र आत्मा की शक्ति के वश में आकर जमीन पर गिरने लगे। वे पवित्र आत्मा में वध किये गये थे।

फिर क्या हुआ। यह ठीक ऐसा ही था जैसे संसार के कोने – कोने की अन्य सभाओं में भी मैनें बार – बार देखा है। लोग अपने व्यक्तिगत मुक्तिदाता के रुप में मसीह को अपनाने लगे, तथा सभा भवन में चारों ओर चंगाई ही चंगाई होती रही।

जब कभी मैं पवित्र आत्मा के संम्बन्ध में प्रवचन देता हूँ, तो उसके अन्त में साधारण तेल से अभिषेक हुआ करता है। हमेशा। पर, यहाँ ईश्वर

की उपस्थिति का एक अविश्वसनीय प्रगटीकरण हुआ। अन्य अवसरों पर होने वाले से भी भिन्न। चमत्कार अत्यधिक भावप्रवण रहे। दूसरी सभाओं की अपेक्षा अधिक संख्या में भी लोग मुक्त किये गये। लोंगों को बुलाना एकदम आसान होने लगा। अनुरोध और अनुनय – विनय की आवश्यकता ही नहीं रही। लोग मुक्ति पाने के लिये वेदी के पास यों ही जमा हो गये। जैसे प्रभु ने प्रतिज्ञा की, पवित्र आत्मा लोंगों को खीष्ट की ओर आकृष्ट करने लगे।

सभाओं के पश्चात् लोग सामने यह कहने आते हैं, मैनें जितनी भी सभाओं में भाग लिया है उन सभी में सर्वश्रेष्ठ बैठक आज की रही। यह ऐसा लगा कि पवित्र आत्मा ने इस सभा का बड़ा सम्मान किया, क्योंकि इसमें उनका दिल से स्वागत किया गया।

इसी क्रूसेड के दरमियान मेरे व्याख्याता, पास्टर कोलिन, जो इसके ठीक पहले सुबह में, लगभग जो हजार प्रचारकों को पवित्र आत्मा पर दो बैठकें पढ़ा रहे थे, मेरे पास आये। वह सिसकने लगा। तब अपनी हथेलियों में छिपाये सिर को ऊपर उठाया और गहरी भावुकता के साथ उसने कहा, मेरे प्रिय भाई, मैं तो पवित्र आत्मा के बारे में बहुत कम जानता हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि मैं के. जी. क्लास में हूँ। प्रवचन की सच्चाई में वह पवित्र आत्मा की शक्ति के अधीन हो गया।

दूसरे एक मौके पर मेरे प्रवचन के ठीक बीच में मैनें एक व्याख्याता को अचानक बेहद रोते देखा है। यही है पवित्र आत्मा की शक्ति।

एक प्रार्थना सभा में जो होता है, वह आपके साथ भी, ठीक जहाँ आप हैं, हो सकता है। इसलिये ही मैं आप से कह रहा हूँ कि आप पवित्र आत्मा के पास सम्पूर्ण आत्म समर्पण करें। तब आप समझ लेंगें कि पौलुस का क्या तात्पर्य है जब वह कहता है, आत्मा से परिपूर्ण हो जायें .... एक दूसरे के साथ भजन, स्त्रोत, और आध्यात्मिक गीत गायें ..... पूरे हृदय से

प्रभु के आदर में गाते – बजाते रहें ... पिता ईश्वर को सदा धन्यवाद दें। और आप जानेंगे कि क्यों पौलुस कहता है कि ''एक दूसरे के अधीन रहें'' (इफिसियों 5:18,21)।

एक दूसरी वायु

क्या आप अपने जहाजों को भरने के लिये ईश्वर की स्वर्गीय वायु लेने को तैय्यार हैं ? यह मुक्ति से प्रारम्भ होता है, जब आप पापों को स्वीकार करते हैं, यीशु को अपने मुक्तिदाता और प्रभु मानते, और उनका अनुसरण करने के लिये अपने जीवन को समर्पित करते हैं। यीशु मसीह ने भी इसी वायु के संबंध में बात की, जब उन्होने मुक्ति के बारे में बताया। उन्होने निकुदेमुस, जो यहूदियों की महासभा का एक सदस्य है, से कहा, अचम्भा न कर कि मैनें तुझ से कहा, ''तुझे नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है। हवा जिधर चाहती उधर चलती है और तू उसका शब्द सुनता है परन्तु नहीं जानता कि वह कहाँ से आती और किधर को जाती है ? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।'' (यूहन्ना 3:7–8)।

जिस तरह मुक्ति एक वायु की तरह चित्रित है, उसी तरह पवित्र आत्मा एक दूसरी वायु – आत्मा की शक्ति की वायु – की तरह चित्रित है। पेन्तिकुस्त के दिन अचानक स्वर्ग से आँधी जैसी एक आवाज सुनायी पड़ी, उस सारे घर में, जहाँ वे बैठे हुए थे, वह गूँज उठी (प्रेरितों 2:2)। आत्मा की वायु तेज बह रही है, तथा वह शक्तिशाली है। यह एक ऐसी शक्ति है जो आपके जीवन को गति प्रदान कर उसे कार्यरत प्रदान करती है। अब आपके जहाज को जल में उतारने का वक्त आ गया। हरी झण्डी दिखाइये, यात्रा आरम्भ कीजिये, और पवित्र आत्मा की वायु से पूरित होने दीजिये – लगातार पूरित होने दीजिये।

अध्याय 8

एक सामर्थी प्रवेश

यह कैस हो सका ? मैनें अपना जीवन हाल ही में प्रभु के लिये समर्पित किया था, और मैं अपना मसीही जीवन जीने का संघर्ष कर रहा था।

अब मुझको जो हो रहा है उसके बारे में सोचता हूँ, तो वह असम्भव सा लगता है। सन् 1972 में मेरे नये जन्म के अनुभव के बाद मुझे मालूम था कि मेरा हृदय शुद्ध किया गया था, किन्तु जिन मुश्किलों का मैनें सामना किया वे हल के परे थीं। घर में अन्तर्द्वन्द चल रहा था, भविष्य अनिश्चय था, मेरी आत्मछवि हीन भावना से ग्रसित और पतित थी।

ओह, मैंनें अपने जीवन के साथ कैसा संघर्ष किया। कभी – कभी मेरे सम्पूर्ण प्रेम को प्रभु को देना मुश्किल हो गया था। मेरे पास अनेक महत्वपूर्ण प्रश्न थे। तब दो हफ्ते बाद मैं पवित्र आत्मा से पूर्ण हो गया। उसी क्षण से मैनें इस धरती पर स्वर्ग की आशा की। पर मेरी आशा पर पानी फिर गया मेरे दैनिक जीवन में संघर्ष जारी रहा।

आनन्द और उल्लास के अवसर भी अवश्य थे। और मेरे इस अनमोल आध्यात्मिक अनुभवों को साऊदी अरब के तमाम तेल के लिये ही सही मैनें सौदा नहीं किया होता। किन्तु मेरी अन्तरआत्मा को परेशान करता हुआ एक प्रश्न महिनों से पीछा कर रहा था। क्या इस जीवन में यही सब कुछ है? मैनें प्रश्न किया, और मैं करता रहा। सवाल मेरा पीछा नहीं छोड़ता था। क्या प्रभु के पास मेरे लिये कुछ और नहीं है ?

और तब, करीब दो वर्षों के बाद, दिसम्बर की एक ठण्डी अर्धरात्रि में, मैं ख्रीष्ट से मिला। टोरंटो में, जैसे ही मैं अपने पलंग पर लेटा रहा मेरे

कमरे में पवित्र आत्मा का एक शानदार प्रवेश हुआ। मैनें सहसा बिजली का एक जोर का झटका और कम्बल की गरमी अनुभव किया।

मुझे जो हो रहा था उसका क्या मतलब है यह समझने में मुझे ज्यादा दिन नहीं लगा। मेरे सारे संघर्ष समाप्त। मैनें मसीही जीवन जीने का एक सरल उपाय पा लिया – पवित्र आत्मा के साथ एक व्यक्तिगत संबंध।

आज भी, मेरा हृदय काफी दुखी है, लेकिन बिल्कुल कुछ और बात के लिये। मुझे गहरा दुख है कि लाखों मसीहियों ने उस बड़े खजाने से, जो ईश्वर के पास उनके लिये जमा है, तिल भरा का भी कभी नहीं पाया है। वे अपने जीवन के सर्वोत्तम भाग से वंचित रह रहे हैं। और वे यह सच्चाई, कि यीशु के साथ चलना कितनी आश्चर्यजनक बात है, अब तक कभी नहीं जान पायेंगे जब तक कि वे पवित्र त्रिएकत्व के तीसरे व्यक्ति को पा नहीं लेंते हैं। यह तीसरा व्यक्ति ही हमें अपने संघर्ष में सहायता प्रदान करने वाला है।

संघर्ष का अन्त

जब से आत्मा मेरे जीवन में आया, तब से मुसीबतों के साथ मुझे संघर्ष करना नहीं पड़ा। संघर्ष तो थे ही। पर उनके साथ कुश्ती और चिन्ता सदा के लिये दूर हो गयी। मेरे साथ जो हुआ था वही इस्त्राएली जनता को सदियों पहले नबी यहेजकेल के द्वारा कहा गया था। राजनैतिक उथल – पुथल के हालात से गुजरते वक्त प्रभु ने उससे कहा था, ''मैं तुम को नया मन दूँगा, ...मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करुँगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मान कर उसके अनुसार करोगे।''(यहेजकेल 36:26–27)।

यह समस्या आज भी हमारे बीच में है। लाखों लोग ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के लिये प्रतिदिन घोर संघर्ष कर रहे हैं, और वे यह लड़ाई हारते जा रहे हैं, क्योंकि वे पिता की युद्ध – योजना नहीं समझते हैं। उनका युद्ध – कौशल इससे भी संक्षिप्त नहीं हो सकता है, मैं अपना आत्मा तुम में रख दूँगा, प्रभु कहता है। और उनकी कार्य प्रणाली क्या है ? वे अपनी आज्ञाओं पर आपको चलाना – आपके दिल की गहराई से – चाहते है। वे अपनी आज्ञाओं को आपके लिये सरल बनाना चाहते हैं।

क्या ईश्वर की आज्ञाओं का पालन आपको कठिन लगता है ? आप अकेले मत कीजिये। यह अकेले करना बिल्कुल असम्भव है, और न ही ईश्वर आपसे अकेले करने की अपेक्षा रखते हैं। आपको मदद जरुरी है। लेकिन आप किसके पास जायेंगे। पिता ईश्वर तो स्वर्ग में हैं और पुत्र ईश्वर भी वहीं हैं। आपको यहाँ, और इसी वक्त, एक मित्र की जरुरत है, और त्रिएक ईश्वर को तीसरा व्यक्ति, जो अब इस पृथ्वी पर निवास करते हैं, पवित्र आत्मा हैं। ये पवित्र आत्मा ही आपके मित्र हैं, और आपको उन्हे जानना बहुत जरुरी है।

अगर आपने एक सर्वे लिया और लोंगों से पूछ लिया होता कि ईश्वर की ओर से सब से ज्यादा उन्होने क्या चाहा, तो उत्तर शायद यही होता, मैं चाहता हूँ कि ईश्वर मुझ से खुश रहें।

और प्रभु ने नबी यहेजकेल से यही वादा किया। ईश्वर ने कहा, मैं इस्त्राएल के घराने पर अपना आत्मा भेज दूँगा, तब मैं फिर – कभी अपना मुँह उनसे नहीं छिपाऊँगा'' (यहेजकेल 39:29)।

जिस घड़ी पवित्र आत्मा आपके जीवन के एक भाग बन जाते हैं, तब से ईश्वर आपकी तरफ देखने लगेंगे। उनका चेहरा आप पर दमकने लगेगा। पिता की प्रबल इच्छा यह है कि आप पवित्र आत्मा को ग्रहण

करें, उनसे पूर्ण हो जायें, तथा उनके साथ साहचर्य करें। यह उनको अत्याधिक आनन्द प्रदान करता है।

प्रेरितो के काम की पुस्तक में आप यों ही पढ़ना शुरु कीजिये, और आप महसूस करेंगे कि ईश्वर ने क्या योजना बनाई है। पवित्र आत्मा के साथ प्रेरितों आ एक अद्वितीय अन्तरंग संबंध रहा है और इसका प्रमाण इस ग्रन्थ के हर एक पृष्ठ पर कूट – कूट कर भरा पड़ा है। किन्तु इससे भी प्रेरणात्मक तथ्य यह है कि ये कार्य आज भी लगातार चलते रहते हैं। अगर पवित्र आत्मा के सभी चमत्कारिक कार्य लिखित रख दिये होते, तो दुनिया भर का कोई भी पुस्तकालय इन तमाम किताबों को समा नहीं पाता।

यीशु मसीह के पुनरुत्थान के बाद उस ऊपरी कमरे में जो घटित हुआ था, वह कोई चौकाने वाली घटना नहीं होनी चाहिये। स्वर्ग में यीशु मसीह के उठालिये जाने के पूर्व उन्होने स्वयं अपने शिष्यों को बताया कि ''यरुशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो जिसकी चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो। क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।'' (प्रेरितों 1:4,5)

यीशु मसीह ने इसका स्पष्ट वर्णन भी किया कि यह किस प्रकार का होगा तथा उनका जीवन कैसे बदल जायेगा, परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा तब तुम सामर्थ पाओगे, और यरुशलेम, और सारे यहूदिया और सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।

पवित्र आत्मा का आगमन

एक प्रचण्ड आँधी

इस पृथ्वी पर यीशु का आगमन जितना वास्तविक था, उतना ही वास्तविक था पवित्र आत्मा का आगमन भी। जिस प्रकार नबियों नें मसीह के आगमन की भविष्यवाणी की, उसी प्रकार उन्होने पवित्र आत्मा के आगमन की भी भविष्यवाणी की। यीशु मसीह के आने के सैकड़ों वर्ष पूर्व, परमेश्वर ने योएल नबी से कहा,

> मैं अनना आत्मा तुम सभों पर भेज दूँगा,
> तुम्हारे बेटे बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगे,
> तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और
> तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे।
> तुम्हारे दास और दासियों पर भी
> मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूँगा। (यहेजकेल 2:28,29)।

पवित्र आत्मा आये। और कितना अद्‌भुत आगमन। एक प्रचण्ड आँधी की गूँज। अग्नि – जीभों की वर्षा। ईश्वर की शक्ति का प्रदर्शन। इस धरती पर उनका आगमन एक चमत्कारिक घटना से कदापि कम नहीं था।

> जब पिन्तेकुस्त का दिन आ चुका था, सब शिष्य एक स्थान पर एक साथ इकठ्ठे थे। अचानक स्वर्ग से एक प्रचण्ड आँधी – जैसी आवाज सुनायी पड़ी, और वह सारा घर, जहाँ वे बैठे हुऐ थे, गूँज उठा। तब उन्हें आग की सी फटती हुइ जीभें दिखाई पड़ीं, और उनमें से हर एक पर आकर ठहर गयीं। और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूरित हो गये और जैसे पवित्र आत्मा ने उन्हे वाणी का वरदान दिया, वे अन्य अन्य भाषाओं में बोलने लगे (प्रेरितों 2:1...4)। यह ठीक ऐसा था जैसा कि यशायाह नें नबूवत की थी; ''हकलाते

ओंठों के साथ और एक अपरिचित भाषा में वह बोलेंगा ..'' (यशा.28:11)।

अब जिस समय यीशु का जन्म हुआ था, उस समय सन्नाटा और शांति का माहौल था। वह बैथलेहम की एक सुनसान रात थी, सुनहली रात थी। इतनी स्पष्ट और अंधेरी रात थी कि चरवाहे उस तारे का अनुसरण कर उस चरनी तक पहुँच गये। इस सुनसान माहौल और पवित्र आत्मा के आगमन के उस प्रचण्ड आँधी के माहौल में कितना विरोध है। इससे यरुशलेम में इतना कोलाहल मचाया कि जब यह आवाज गूँज उठी, तब वहाँ भीड़ की भीड़ एकत्रित हो गयी, और दुविधा में पड़ गयी। (प्रेरितों 2:6)।

इस संदर्भ में मुझे एक अंग्रजी मुहावरा याद आ रहा है ''जब ढिंढोरा पीटा गया।'' इस अंग्रजी मुहावरे का अर्थ है कि शहर में कोई इधर – उधर घूम रहा था, यह कहते हुए, आइये और देखिये, क्या हो रहा है। लेकिन पवित्र आत्मा के सम्बन्ध में यह कोई छोटी – मोटी, ऐसी – वैसी, आवाज नहीं थी। यह इतना बड़ा कोलाहल था कि वस्तुतः सारे शहर में सुनाई पड़ा। यहाँ गौर करने की बात है, पृथ्वी भर के सब राष्ट्रों से आये हुए लोग यरुशलेम में रहते थे (पद 5)। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि उन लोंगो ने क्या सोच लिया होगा ?

वचन कहता है कि जब उन लोंगो ने यह आवाज सुनी तो वे घबराहट के साथ यह दृश्य देखने दौड़ पड़े, क्योंकि हर एक अपनी – अपनी भाषा में उनको बोलते हुए सुन रहा था (पद 6)।

बिल्कुल अचम्भे में पड़ कर चकित हो कर वे बोल उठे, क्या ये बोलने वाले सब के सब गलीली नहीं हैं ? तो फिर यह कैसे सम्भव है कि इनमें से हर एक अपनी – अपनी जन्म भूमि की भाषा सुन रहा है ? (पद 7 – 8)। और जब उन लोंगो ने उनको ईश्वर के महान कार्यों का बखान

करते हुए अपनी – अपनी भाषा में सुना, तो आपस में पूछा, इसका क्या मतलब हो सकता है ? (पद 12)।

120 क्यों ?

उनका यह बज्रपाती अप्रतीक्षित आगमन पत्थर से निर्मित एक मंदिर में स्थापित करने के लिये पूर्वनिर्धारित नहीं था। इसके बदले, पवित्र आत्मा 120 विश्वासियों पर उतर आये जो ईश्वर के नये मंदिर बन गये।

क्या आप को याद है कि जब सुलेमान ने अपना मन्दिर निर्माण खत्म किया तो उसके तुरहियाँ बजाते हुए ''120 याजक'' थे ? (2 इतिहास 5:12)।

बाइबल में लिखा है, प्रभु का घर एक बादल से भर गया था, और इस बादल के चलते याजक अपना सेवाकार्य पूरा करने में असमर्थ थे, क्योंकि प्रभु की महिमा से ईश्वर का मन्दिर भरा हुआ था (पद 13 – 14)।

उस ऊपरी कमरे में भी, पुनरुत्थान के बाद, फिर यही हुआ। एक सौ बीस एक साथ इकठ्ठे हो गये और ईश्वर के आत्मा से मन्दिर भर गया। क्यों 120? यह संख्या शरीर के युग का अन्त तथा आत्मा के युग के आरम्भ की सूचक है। उत्पत्ति में, जहाँ नूह 120 वर्षो तक नौका बना रहा था, वहाँ शरीर का युग समाप्त हो गया। ईश्वर ने कहा, ''मेरा आत्मा सदा के लिये मनुष्य के साथ संघर्ष नहीं करेगा, क्योंकि वह सच में मरणशील है, फिर भी उसका जीवन काल (120) एक सौ बीस वर्ष होगा।'' (उत्पत्ति 6:3)

ठीक इसी मतलब से ही प्रभु ने पेन्तिकुस्त के दिन 120 लोंगो को एकत्रित किया ताकि पवित्र आत्मा ईश्वर को सभी राष्ट्रों के बीच में भेज दिया जा सके। इस प्रेरणा के साथ ही आत्मा के एक नये युग की शुरुआत को अंकित किया गया।

दर्शकों की समझ में नहीं आया कि यह क्या हो रहा था। कुछ लोंगों ने इसका मजाक उड़ाया और कहा, ''इन्हे नयी अंगूरी का नशा चढ़ा है'' (प्रेरितों 12:12) परन्तु पतरस ग्यारहों के साथ खड़ा हो कर ऊँची आवाज में बोल उठा, यहूदी भाइयो, और यरुशलेम के सब निवासियो, आप यह जान लें और मेरी बात पर विश्वास करें। जैसा कि आप लोग सोचते हैं, ये लोग पी कर मतवाले नहीं हैं, अभी तो दिन के नौ ही बजे हैं। इसके अलावा इस विषय में भविष्यद्वक्ता योएल के द्वारा भी भविष्यद्वाणी की थी (पद 14 – 16)।

ये 120 जन आत्मा से इतने भर गये कि वे अपने ही बल – बूते खड़े नहीं हो सके। आत्मा इतने प्रभावशाली थे कि उन्होने विश्वासियों के कार्यो को अपने काबू में कर लिया। वे उनकी बोली, भावनाओं, तथा आचरण को बदलते हुए उनमें क्रियाशील थे। जो यरुशलेम वासियों ने देखा वह मतवाला पन नहीं था, पर वह पवित्र आत्मा के अधीन में होने पर होने वाला एक अविश्वसनीय आनन्द था। ऐसी कुछ बातों के लिये मुझ पर भी आरोप लगाया गया है।

डरपोक पतरस में क्या परिवर्तन आया। यह उसके भीतर के छिपे प्रचारक को बाहर लाया, जब वह ऊँची आवाज में बोल उठा, और उसने उस बड़ी उमड़ती भीड़ को निर्भीकता से सम्बोधित किया। किन्तु आपकी क्या राय है कि उसको बोलने के लिये शब्द किसने दिये ? लोंगो को मुग्ध करने वाले, भावप्रवण प्रेरणात्मक शब्द पवित्र आत्मा के थे। क्योंकि हमारा सुसमाचार आपको न केवल निरेशब्दों में मिला, बल्कि सामर्थ में, तथा पवित्र आत्मा के द्वारा ही सुसमाचार प्रचार किया जाता है। ध्यान दें, ईशवचन कहता है, आत्मा उनके साथ कार्य करते हुए। जो कार्य करता है, वह तो पवित्र आत्मा ही हैं।

अब जरा ध्यान से देखिये, प्रेरितो के कार्य कलाप में अचानक यह क्या होने जा रहा है। जिन लोंगों ने पवित्र आत्मा को ग्रहण किया उन सभों को आत्मा बहुत बड़ा अधिकार देते हैं। पतरस और युहन्ना मन्दिर की ओर जा रहे थे, तो दोपहर के तीन बज रहे थे, और लोग एक आदमी को, जो जन्म से ही लंगड़ा था, लिये जा रहे थे। इसको रोज – रोज वे सुन्दर नामक फाटक के पास, मन्दिर में जानेवालों से भीख मांगने के लिये, बैठाया करते थे (प्रेरितों 3:2)।

इस अस्त – व्यस्त बेसहारे भिखारी की ओर मुड़ कर उस पर आँखें गड़ा कर, यूहन्ना के साथ, पतरस ने कहा, ''हमारी ओर देख'' (पद 4)। परिपूर्ण रुप से पवित्र आत्मा के कब्जे में आये एक व्यक्ति को देखते ही आप दंग रह जायेंगे। ज्यों ही पतरस ने उस गरीब आदमी की आत्मा की गहराई में झांक कर देखा – ठीक उसकी आँखों में से होकर – त्योंहि पतरस अपने में एक अनोखी निर्भीकता तथा सामर्थ से ओत – प्रोत हो गया, जो उसने इसके पहले कभी भी अनुभव नहीं किया।

इस भिखारी को पक्का विश्वास हो गया कि पतरस और यूहन्ना इसे चिढ़ा नहीं रहे थे। एक आलौकिक निर्भीकता इन प्रेरितों में साफ झलक रही थी। जब पतरस ने कहा, ''हमारी ओर देख'' तो उस आदमी ने उनसे कुछ पाने की आशा में उनकी ओर ध्यान दिया (पद 5)।

तब पतरस ने कहा, ''सोना – चाँदी मेरे पास नहीं है, जो मरे पास है, वह मैं तुझे देता हूँ; यीशु नासरी के नाम से चल फिर (पद 6)। पतरस ने उसका दाहिना हाथ पकड़ कर उसको उठाने की मदद दी, और तुरन्त ही उसके पैर और टखने मजबूत हो गये। तब वह उछलते खड़ा हो गया और चलने फिरने लगा, और उनके साथ चल कर, उछलते – कूदते और ईश्वर की स्तुति गाते हुए मन्दिर गया (पद 7)।

क्या आप इस वक्त मन्दिर में हो रहे विस्मय की कल्पना कर सकते हैं ? उस मन्दिर में उस भिखारी का यह चमत्कारिक प्रवेश था। लोगों ने उसको जल्दी ही पहचान लिया ''और उस घटना से जो उसके साथ हुई थी वे बहुत अचंभित और चकित हुए।''

यह एक ''अतीत'' – अनुभव नहीं

प्रेरितों ने जो सामर्थ्य और अधिकार प्राप्त किया वह लोंगो की जिन्दगी के हर मोड़ पर जोरदार असर डालने लगा। उनके सेवाकार्यों में लोंगो के बीच में ..... अनेक चिन्ह एवं चमत्कार प्रगट होने लगे (प्रेरित 5:12)। और इसका क्या परिणाम हुआ ? विश्वासियों के समुदाय में, भीड़ की भीड़ स्त्रीयों और पुरुषों दोनो की संख्या बढ़ती गयी (पद 14)। पवित्र आत्मा के आगमन से विश्वासियों में काफी बदलाव आ गया। और इस बदलाव के लक्षण लोंगो को सीधे यीशु मसीह की ओर उन्मुख करने लगे। यह स्मरण करने लायक एक महत्वपूर्ण तथ्य है।

उस ऊपरी कमरे में जो घटना घटी थी, वह एक ही बार में घटित हो कर सदा के लिये समाप्त होने वाला अनुभव नहीं थाः और न ही रेखांकित की जाने वाली सिर्फ एक ऐतिहासिक घटना। आत्मापूरित विश्वासियों ने पवित्र आत्मा के साथ लगातार बना रहने वाला एक सम्बन्ध स्थापित किया। उनकी परिपूर्णता बार – बार लगातार होती रही। उस भिखारी की चंगाई के विषय में पूछ – ताछ करने हेतु पतरस महासभा के समक्ष बुलाया गया। उन्होने प्रश्न किया, कौन से अधिकार अथवा किस के नाम पर आपने यह काम किया है? पतरस ने उत्तर दिया, और जब पतरस ने कहा, तो वह पवित्र आत्मा से पूरित हो गया था (प्रेरितों 4:7 – 8)। यहाँ पूरित शब्द का प्रयोग भूतकाल में नहीं, वर्तमान काल में हुआ

है। अतः पूरित शब्द प्रेरितों की उस वर्तमान में हो रही स्थिति का वर्णन करता है।

बाइबल में बार – बार, जब मसीह के अनुयायी आत्मा से पूरित के रुप में चित्रित किये जाते है, तो यह एक नयी परिपूर्णता का संकेत है, और न कि घटना जो कल या बीते महिने में घट चुकी थी। मन्दिर में पतरस पवित्र आत्मा से इतना पूरित हो गया कि उसको अपने उन कटु आलोचकों पर भी अधिकार प्राप्त हुआ। निडर भाव से उनसे कहा, ''जनता के शासको एवं इस्त्राएल के नेताओ, आज हमने इस लंगड़े व्यक्ति की भलाई की और हमसे पूछताछ की जा रही है कि यह किस तरह भला चंगा हो गया है। आप लोग और इस्त्राएल की सारी जनता यह जान ले कि यीशु मसीह नासरी के नाम पर यह भला – चंगा होकर आपके सामने खड़ा है। आप लोंगो ने उनको क्रूस पर चढ़ा दिया, किन्तु ईश्वर ने उन्हे मृतकों में से जिलाया'' (प्रेरितों 4:8 – 10)।

क्या आप यह समझते हैं कि पवित्र आत्मा अपनी शक्ति और सामर्थ्य से आपको इतना पूर्ण कर सकते हैं कि आप कभी भी किसी से भी नहीं डरेंगें? उनके साथ एक ऐसा साहचर्य स्थापित करना इतना सम्भव है कि एक राष्ट्र के किसी नेता को सम्बोधित करते समय भी आपको किसी प्रकार की भी आशंका नहीं होगी। आत्मा आपका सिर उठायेंगे, आपका सीना तानेंगे, तथा आप में एक अप्रत्याशित आत्मविश्वास को भर देंगे।

जब मैनें पोप से मिलने के लिये रोम के वैटिकन की यात्रा की, तो मैनें सोचा कि मैं घबरा जाऊँगा। किन्तु ऐसा नहीं हुआ क्योंकि मैं अपने विषय (आत्मा) से इतना भरा हुआ था। मैनें वैटिकन के नेताओं में आत्मा की बातों के प्रति एक विशेष लालसा अनुभव की।

पराक्रमी पतरस

मन्दिर के याजकों से भी ज्यादा पतरस को कुछ और कठिनाईयाँ झेलनी पड़ी। वह वास्तव में इस्त्राएल के प्रशासकों के खिलाफ खड़ा हो गया। दरअसल, याजको को सम्बोधित करने की अनुमति पाने की एक रात पहले, पतरस और यूहन्ना बन्दीग्रह में डाल दिये गये। लेकिन जब पतरस बोला, उसके शब्द दोधारी तलवार की तरह धारदार थे। उसने उन लोंगो को कहा कि प्रभु वही पत्थर हैं जिसे कारीगरों ने त्याग दिया था, और जो नींव का पत्थर बन गया है (प्रेरितों 4:11)। यह पद सीधे भजन संहिता 188:22 से लिया गया है।

हम इस सोच में पड़ जाते हैं, क्या यह वही पतरस है, जो कुछ सप्ताह पहले, इसी जगह, इन्ही लोंगो के सामने, एक लड़की के उपहास मात्र से डर के सहम गया था, और अपने गुरु को इन्कार किया था ? अब उसको देखिये, वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, और बिल्कुल निडर हो कर यीशु के हत्यारों को विरोध करते और उनको तीखे शब्दों से फटकारते जा रहा है।

अब यह दब्बू पतरस नहीं रह गया। यह शक्ति और सामर्थ का पतरस हो गया। आत्मा क्या बदलाव लाया।

पवित्र आत्मा के साथ पतरस का साहचर्य इतना घनिष्ठ था कि पतरस ने हनन्याह पर सीधा वार किया। उसने कहा, हनन्याह, शैतान ने कैसे तुम्हारे दिल में प्रवेश कर पवित्र आत्मा से झूठ बोलने को विवश किया ? (प्रेरितों 5:3) पतरस के शब्द और ईश्वर के कार्य इतने प्रभावशाली थे कि, जिन लोंगो ने यह सब सुना, उनमें अत्याधिक भय छा गया (पद 5)।

हमसे उनकी घनिष्टता

मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर आपको बता सकता हूँ कि हमारे जीवन में एक ऐसी स्थिति आ जाती है जब हमारे साथ पवित्र आत्मा का साहचर्य इतना सच्चा, इतना गहरा और इतना महान बन जाता है कि हमारी सारी बातें और – कर्म उनकी बातों के और कर्मों के अनुरुप हो जाते हैं। उदाहरण के लिये, जब आप जानते हैं कि उनको कष्ट दिया गया, तो यह जानते हुए, कि इसी वक्त पवित्र आत्मा ही आप में बह रहे हैं, आप निडर होकर उनके नाम पर बोल सकते हैं। आप उनसे इतने नजदीक होंगे कि आपने जो कहा सच में उसके अनुकूल पवित्र आत्मा को जवाब देते हुए आप उन को महसूस करेंगे।

मुझे पूरा यकीन है कि वह दिन आ रहा है जब धर्मी स्त्री और पुरुष ईश्वर के आत्मा के इतने निकट आ जायेंगे कि चंगाइयों और – चमत्कारों से भी ज्यादा हम बहुत कुछ देख पायेंगे। अपने विरुद्ध खड़े होने का दुस्साहस करने वालों को तितर – बितर करते हुए पवित्र आत्मा को हम देखेंगे।

हनन्याह को अभी न भूलें। वह गिर पड़ा और उसके प्राण निकल गये (प्रेरितो 5:5)। और गेहजी को भी न भूलें। एलीशा के पास नामान द्वारा लाये गये उपहारों के बारे में गेहजी एलीशा से झूठ बोला। नामान चंगा किया गया, किन्तु आत्मा ने एलीशा को यह कहने के लिये प्रेरित किया, ''नामान के कोढ़ की बीमारी तुम पर और तुम्हारे वंशजों पर सदा के लिये फैल जायेगी (2 राजा 5:27)। और ठीक ऐसा ही हो गया।''

यीशु का कथन बहुत शक्तिशाली था जब उन्होने कहा, ''जेसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।'' और यह कहने के बाद उन्होने उस पर फूँक दिया और उनसे कहा, ''पवित्र आत्मा ग्रहण करो।

अगर तुम किसी के अपराध क्षमा करते हो, तो उसके अपराध क्षमा किये जाते हैं, अगर तुम किसी के अपराध क्षमा नहीं करते तो वह बन्धा रहता है'' (यूहन्ना 20:21–23)। यह बात गम्भीरता से ली जानी चाहिये और प्रेरितों के द्वारा तनिक भी हल्की – सी नहीं ली जानी चाहिये।

स्वर्गदूत का चेहरा

पतरस आत्मा से इतना नजदीक था कि उस पर अभियोग लगाने वालों को उसने कहा, ''इन सब बातों के लिये हम उनके साक्षी हैं, और इसी प्रकार पवित्र आत्मा भी जिनको ईश्वर ने उनकी आज्ञा माननेवालों के लिये प्रदान किया है'' (प्रेरितों 5:32)।

पवित्र आत्मा ने स्तेफनुस को अपने कब्जे में इतना कर लिया कि जब वह याजकों के सम्मुख लाया गया था, तब जो लोग महासभा में बैठकर स्तेफनुस को स्थिर दृष्टि से देख रहे थे, उन्होने उसके चेहरे को एक स्वर्गदूत के चेहरे के सदृश देखा (प्रेरितों 6:15)। परन्तु कमाल के हैं उसके सम्बोधन के शब्द ''तुम, हठधर्मियों ..... हृदय और कानों में। तुम हमेशा पवित्र आत्मा का विरोध करते हो; जैसा तुम्हारे पूर्वजों ने किया था, तुम भी ऐसा ही करते हो'' (प्रेरितों 7:51)। स्तेफनुस ने ऐसा क्यों कहा ? क्योंकि वह एक – सत्य से ओत – प्रोत था, किन्तु उसने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर दृष्टि कि और वहाँ ईश्वर के दाहिने विराजमान यीशु को देखा (पद 55)।

स्तेफनुस के जीवन में पवित्र आत्मा की उपस्थिति की शक्ति इतनी जबरदस्त थी कि वह स्वर्ग की ओर दृष्टि करने और ईश्वर की महिमा करने में समर्थ हो गया। इतना ही नहीं, बल्कि जैसे ही उसको पत्थरवाह किया जा रहा था, वैसे ही वह पवित्र आत्मा की भावनाओं, मनोवृत्तियों,

और गुणों से भर गया। स्तेफनुस ने कहा, प्रभु, इन पर इस अपराध का बोझ नहीं लाद देना (प्रेरितों 7:60)। क्या आप ऐसी प्रतिक्रिया की कल्पना कर सकते हैं ? उसने ईश्वर से यह नहीं कहा, इन्हें सजा दें, इन्हें नहीं छोड़ें, इन्हें मार डालें। इस बदलाव का कारण पवित्र आत्मा ही हैं।

मुझे पूरा विश्वास है कि आत्मा के साथ आपके सम्बन्ध में एक ऐसी अवस्था है जब अम्यंजन आपके जीवन में इतना असरदार हो जाता है – आत्मा की उपस्थिति आपकी इतनी निकट हो गयी – कि आप स्वर्ग की ओर दृष्टि कर सकते हैं, तथा आपको ईश्वर के दर्शन हो जाते हैं। और इस प्रकार आत्मा आपके जीवन में वास्तविक बन जाते हैं।

दमिश्क के उस नाटकीय हृदय परिवर्तन के दरमियान, शाऊल को पवित्र आत्मा की शक्ति का एक अभूतपूर्व सीधा अनुभव हुआ था। जैसे वह दमिश्क के रास्ते पर था, और यीशु ख्रीष्ट के अनुयायियों पर जान लेवा हमले कर रहा था, तब एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी, और वह जमीन पर गिर पड़ा, और एक वाणी उसको यह कहती हुई सुनायी पड़ी, शाऊल, शाऊल तू मुझे क्यों सताता है (प्रेरितों 9:3 –4)।

वह अत्यधिक भयभीत और विस्मित हो गया। ''आप कौन हैं, प्रभु?'' शाऊल ने पूछा। ''मैं यीशु हूँ, जिसे तू सताता है।'' उन्होने जवाब दिया। परन्तु अब उठकर नगर जा, और जो तुझे करना होगा, वह तुझे बता दिया जायेगा (प्रेरितों 9:5,6)। जो व्यक्ति शाऊल के साथ यात्रा कर रहा था, वह अचेत और आवाक रह गया। शाऊल तीन दिनों तक अंन्धा ही रहा। तब ईश्वर ने उसे चंगा किया और वह पवित्र आत्मा से परिपूरित हो गया (पद 17)।

फिर आत्मा का एक अद्‌भुत आगमन हुआ। उन्होने विरोधी शाऊल को एक प्रेरित पौलुस में परिणित किया। सच्चे अर्थ में शाऊल की एक

कायापलट। वस्तुतः चहुँ दिशा, सुदूर देशों में इसका प्रभाव पड़ गया था। सारी यहूदिया, गलीली, और सामरिया की कलीसियाओं में शांति थी और वे अत्याधिक प्रभावित हो गये। और प्रभु पर श्रद्धा रखती हुई और पवित्र आत्मा की सान्त्वना पाकर वे विकसित होती गयीं (प्रेरितों 9:31)।

मैं तो केवल कल्पना ही कर सकता हूँ कि अगर प्रत्येक सुसमाचार सेवक साष्टांग गिर जाये, और पवित्र आत्मा के साथ एक व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित कर ले, तो इस धरती पर क्या हो जाता। नवीनीकरण की बात। मुझे पक्का विश्वास है कि दुनिया भर की समस्त कलीसियाओं में इतनी बड़ी क्रांति हो जाती कि यहाँ के गिरजाघरों और प्रार्थनालयों में लोंगो के लिये जगह ही नहीं हो पाती।

उन पुरोहित और पादरियों के लिए ईश्पर को शुक्र है, जो आत्मा में जीवित हैं, पर कुछ ऐसे प्रचारकों के विषय में मैनें सुना है जिनको, सच कहूँ तो, एक अन्तयेष्टि निर्वाहर कहना बेहतर है। पवित्र आत्मा के साथ निरंतर बने रहने वाला साहचर्य ही इसकी सबसे बड़ी विशिष्टता है। और लोग इस सच्चाई के लिये लालायित है, तो सिर्फ पवित्र आत्मा ही इसे साकार एवं सार्थक बना सकते हैं।

वह कभी कार्य बंद नहीं करता

पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा ने अपना कार्य इस पृथ्वी पर शुरु किया, और वह कभी नहीं रुका है। कभी नहीं। यह तो अविश्वसनीय है कि कैसे पवित्र आत्मा ने पतरस के जीवन में दखल किया। जैसे वह छत पर प्रार्थना कर रहा था, ईश्वर ने उसको एक दर्शन दिया, और जब पतरस ने दर्शन के बारे में सोचा, तब आत्मा ने कहा, ''देख, तीन आदमी तुझको खोज रहे हैं। इस लिये उठ, नीचे जो और संदेह किये बिना उनके साथ हो ले। क्योंकि मैनें ही उनको भेजा है।'' (प्रेरितों 10:19,20)

पवित्र आत्मा के बताये गये ये तीन व्यक्ति इटालियन पलटन की रेजीमेंन्ट का सेनापति, कुरनेलियुस नामक एक धर्मी व्यक्ति, के द्वारा भेजे गये थे। ''उसको एक दर्शन हुआ, उसने स्पष्ट देखा .... अब आप कुछ व्यक्तियों को जोप्पा भेंज दें, और शिमोन को, जो पतरस कहलाता है, बुला ले,'' (प्रेरितों 10:3,5)। लेकिन यहाँ जो बोल रहा था, वह स्वर्गदूत नहीं था। वह पवित्र आत्मा थे, जो दूत के द्वारा बोल रहे थे। याद है ? आत्मा ने कहा ..... ''मैनें उन्हें भेजा है।''(पद 19,20)।

पवित्र एक सक्रिय व्यक्ति हैं। उनकी क्रिया कभी बन्द नहीं होती है। अगर आपको स्वर्गदूत की जरुरत हो, तो वे उसे भी आपके लिये भेजेगें। इस धरा पर जो होता है वह आत्मा की क्रिया से ही होता है। वे पिता और पुत्र के प्रतिनिधी हैं।

कुरनेलियुस के घर में पतरस ने यीशु ख्रीष्ट की मृत्यु, दफन, और पुनरुत्थान के बारे में प्रवचन दिया। और पतरस यह बोल ही रहा था कि पवित्र आत्मा सब सुनने वालो पर उतर आये (प्रेरितो 10:44)। उसके साथ आये विश्वासीगण चकित रह गये .... क्योंकि गैर यहूदीयों पर भी पवित्र आत्मा का वरदान बरसाया जा रहा था। और उन्होने उन लोगों को भिन्न – भिन्न भाषायें बोलते और ईश्वर की स्तुति गाते सुना (पद 45,46)। यह कभी न भूलें, सब से पहले ईश्वर का वचन है। यीशु ख्रीष्ट का सुसमाचार सर्वप्रथम है, सर्वोत्कृष्ट है। जिस कार्य के लिये पवित्र आत्मा ईश्वर भेजे गये, उस कार्य की आधारशिला यह वचन है।

पवित्र आत्मा आपके जीवन के सम्बन्ध में चिन्ता करते हैं – आपके भविष्य की भी। वे आपका मार्गदर्शन करना, आपकी सुरक्षा करना, यहाँ तक कि आपको आगामी बातों के विषय में सचेत भी करना चाहते हैं। आप पूछेंगे, क्या पवित्र आत्मा भावी बातों के बारे में भविष्यवाणी कर सकते हैं? क्यों नहीं। जरा देखिये,बरनबास अन्ताखिया नगर गया, तो क्या

हुआ। पाँच लाख से भी ज्यादा लोग उस समय वहाँ रह रहे थे। बरनबास और पौलुस ने पूरा एक साल तक उस बढ़ रही महाकलीसिया में बड़ी संख्या में लोंगो को सिखाया। और उन दिनों कुछ नबी यरुशलेम से अन्ताखिया पहुँचे। तब उन में से अगबुस नामक एक नबी खड़ा हो गया और उसने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से यह भविष्यवाणी की कि सारी पृथ्वी पर एक घोर अकाल पड़ने वाला है, जिस तरह का एक आकाल सम्राट क्लौदियुस के शासन काल में भी हुआ था। तब शिष्यों ने हर एक अपनी – अपनी शक्ति के अनुसार यहूदिया में रहने वाले अपने भाइयों की सहायता हेतु चन्दा भेजने का फैसला किया (प्रेरितों 11:27...29)।

ऐसे अन्तरंग और घनिष्ट रुप में ही पवित्र आत्मा उनके दैनिक जीवन से जुड़े हुए थे। उन्होने भावी सूखे के सम्बन्ध में उन्हे सचेत किया और इस तरह जब वस्तुतः आकाल पड़ा तो आत्मा ने उनको तैय्यारी कराई। आत्मा एक व्यक्ति हैं, तथा वे लोंगों के जीवन में गहराई से शामिल हैं। वे जानते है, कि आपके जीवन में क्या हो रहा है तथा आपके बारे में वे बड़ी चिन्ता करते हैं।

पवित्र आत्मा और जादूगर

क्या अब समय नहीं हुआ कि पवित्र आत्मा को आप अपने जीवन का मार्गदर्शन करने दें। जब पवित्र आत्मा आपके आगे के रास्ते का चप्पा – चप्पा, हर एक खतरनाक मोड़ और ऊबड़ – खाबड़ जमीन और सब कुछ जानते हैं, तो आपको अपने ही ढंग से योजना बनाने की कोशिश क्यों यही बात तो अंताकिया के मसीहीयों ने सीखी। जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे तो पवित्र आत्मा ने कहा ''मेरे लिये बरनबास और शाऊल को उस काम के लिये अलग करो जिसके लिये मैनें उन्हें बुलाया है।'' (प्रेरितों 13:2)। उन्होने तुरन्त उत्तर दियाः अतः

पवित्र आत्मा के द्वारा भेजे जाने पर, बरनाबास और शाऊल सिलूकिया गये, और वहाँ से वे नाव से कुप्रुस के लिये रवाना हुए (पद 4)।

शिष्य लोग पिता का कार्य कर रहे थे, पर उन्हें किसने भेजा ? पवित्र आत्मा से उन्हे प्रत्यक्ष आदेश मिले। और उनकी यात्रा के दौरान पवित्र आत्मा लगातार कार्यरत रहे, कभी नहीं रुके। यहाँ तक कि एक झूठे नबी पर भी आत्मा ने उनको अधिकार दिया एलमुस एक यहूदी ओझा और – जादूगर था। उसने उस ईश्वर की शक्ति को रोकने का प्रयास किया जो कुप्रुस में कार्य कर रही थी। लेकिन, शाऊल, जो पौलुस भी कहलाता है, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर, एकाग्र दृष्टि से एलमुस की ओर – देखा और – कहा, धूर्तता और छल – कपट कूट – कूट कर भरा हुआ, हे शैतान के बच्चे, तू सारी धार्मिकताओं का दुश्मन हैः क्या प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा करने का तेरा षड्यन्त्र तू बन्द नहीं करेगा ? (प्रेरित 13:9,10)।

क्या अभियोग और फटकार। दरअसल, पौलुस में पवित्र आत्मा इतने सशक्त थे कि उसने उस जादूगर को कहा कि वह अन्धा हो जायेगा। और वह ऐसा ही हो गया। लेकिन इसका सीधा परिणाम यह हुआ कि लोग ईसा मसीह की ओर मुड़ने लगे और प्रभु का वचन समस्त प्रान्तों में फैलता जा रहा था (प्रेरितों 13:49)। और शिष्य लोग आनन्द और पवित्र आत्मा से परिपूरित हो गये थे (पद 52)।

अब आपका सवाल यह होगा, क्या मैं अपने जीवन की सारी योजना बनाने और निर्णय लेने का पूरा अधिकार पवित्र आत्मा को दूँ ? तो क्या ईश्वर ने मुझको मेरा एक अपना मन नहीं दिया है ? जी हाँ, उसने जरुर दिया है। लेकिन आपको जो तर्क संगत लगता है वह पवित्र आत्मा के लिये भी तर्क संगत होना चाहिये। यरुशलेम की कलीसिया की परिषद ने लिखा, जो पवित्र आत्मा को उचित जान पड़ा और हमको भी....

(प्रेरितों 15:28)। जब कोई कार्य सही और उचित है, तो उसके लिये पवित्र आत्मा का समर्थन अवश्य मिल जायेगा, तथा आप यह जान जायेंगे कि आपको किस दिशा की ओर मुड़ना है।

सन्देश और सन्देशवाहक

यदि यीशु ख्रीष्ट के लिये पवित्र आत्मा अनिवार्य था, तो आपके जीवन में भी पग – पग पर, पल – पल में, उनका होना अनिवार्य हैं। यीशु के आत्मा के द्वारा जन्म लिया, आत्मा के द्वारा अभ्यिंजित हुए, यीशु ने आत्मा के द्वारा शैतान को निकाला, यीशु पवित्र आत्मा के द्वारा परिपूर्ण हो गये, और यीशु ने पवित्र आत्मा के द्वारा चमत्कार किये। और पवित्र आत्मा के द्वारा ही उन्होने शिक्षा दी, आज्ञायें दी, कलीसिया को सशक्त और संचालित किया, अपने को क्रूस पर अर्पित किया, तथा पुनरुत्थान पाया।

तो फिर मसीह का रक्त, जिसे उन्होने शाश्वत आत्मा के द्वारा निर्दोष बलि के रुप में, ईश्वर को अर्पित किया, हमारे अन्तः करण के पापों से क्यों नहीं शुद्ध करेगा और हमें जीवन्त ईश्वर की सेवा के योग्य बनायेगा ? (इब्रानियों 9:11)। यही आत्मा जो मसीह के इहलौकिक कार्य के लिये जरुरी थे, आपके लिये भी अनिवार्य हैं। ये अपरिहार्य है।

आपकी मुक्ति का अनुभव मसीह, क्रूस, और आपके पाप स्वीकार पर आधारित है। लेकिन आपने अपने पुनरुज्जीवन की सच्चाई कैसे पायी? आपने यह कैसे पहचाना कि आपका हृदय शुद्ध किया गया था ? मेरे दोस्त, यह तो पवित्र आत्मा का कार्य है। यह प्रभु के आत्मा हैं जो आपके दिल में यह संन्देश देते हैं। इस सच्चाई की व्याख्या का वर्णन करने के लिये आपके पास पर्याप्त शब्द नहीं होंगे, परन्तु आप जानते हैं कि यह उतनी ही प्रमाणिक है जितना कि आपका अपना जीवन।

अगर यह सच्चाई इतनी प्रभावशाली है, इतनी गहरी है, और इतनी व्यक्तिगत है, तो इसको प्रदान करने वाले कितने सच्चे होंगे ? यह एक अहम् सवाल है। यदि संन्देश इतना यथार्थ है, तो संन्देश वाहक कितने यथार्थ होंगे ?

पवित्र आत्मा आपके साथ एक दैनिक, निरंन्तर बरकरार रहने वाले, एक व्यक्तिगत सम्बन्ध के लिये लालायित हैं। वे आपके जीवन में एक प्रवेश चाहते हैं – एक महाप्रवेश।

अध्याय 9

आत्मा के लिये एक जगह

सदियों से लोंगों को यह विश्वास दिलाया गया है कि पवित्र आत्मा एक ''वस्तु'' है। हजारों और लाखों मौखिक बातों और लिखित ग्रन्थों के माध्यम से, तथा एक ऐसी कुण्ठित मनोवृत्ति से, जो तमाम मसीही विश्वास में फैल गयी है, हम लोंगो को यह सोचने को बाध्य किया है कि पवित्र आत्मा एक वस्तु हैं, व्यक्ति नहीं हैं।

फिलहाल में मैनें एक गानें का अन्तरा सुना जिसका बोल है, ''मुझे तेरा और दे।'' और मैनें सोचा, क्यों, ''यह तो बिल्कुल बाइबल के अनुकूल नहीं है।'' आप उनका एक अंग नहीं ले सकते हैं। आप उनके छोटे – छोटे टुकड़ों में काट कर बांट नहीं सकते हैं, जैसा कि उनके हाथ, पैर आदि। यह मुझे तेरा और दे नहीं है। इसके ठीक विपरीत आपको आत्मा से ऐसे कहना चाहिये, कृपया, ''मेरा और ले लीजिये।'' वे अपने को आपके लिये समर्पित नहीं करते हैं। आप अपने को समर्पित कीजिये।

उनके लिये एक जगह

इसमें कोई शक नहीं कि आज कलीसिया का सर्वाधिक उपेक्षित सत्य यह है कि पवित्र शास्त्र यथार्थ है और हमें उनके लिये एक जगह बनाना होगी।

बड़े खेद की बात है, है कि नहीं। हजारों – हजारों सुसमाचार सेवक इस धरती पर पवित्र आत्मा के कार्य को समझ नहीं पाते हैं। मुझे डर इस बात का है कि कहीं वे भी अपने को उन तमाम लोगों के समान सोचने को विवश हो गये हैं। रविवारीय धर्म शिक्षा क्लास से लेकर सेमिनरी के धर्मशास्त्र अध्ययन सहित उन्हें यह विश्वास दिलाया जा रहा है कि ईश्वरत्व में पवित्र आत्मा एक गौण व्यक्ति हैं जो पेन्तिकुस्त के दिन

आये और उसी दिन यहाँ से ओझल हो कर बादलों में बह रहे हैं। वास्तव में, बहुत लोग पवित्र आत्मा से बात करने में कतराते हैं ताकि करिश्माई लोंगों से दूर या खिन्न रहने वाले लोग उन्हे बेकार बहस में न उलझायें।

ईश्वर ने चाहा कि कलीसिया जीवन्त और बुलन्द हो। स्वर्ग जाने के ठीक पहले, यीशु यह अविस्मरणीय बात बोले, जो विश्वास करते हैं, वे ये चमत्कार दिखाया करेंगें ..... (मरकुस 16:17)। एक सुसमाचार सेवक होने की हैसियत से मेरा सब से ज्यादा चौकानें वाला प्रश्न शायद यह है अगर पवित्र आत्मा मसीहियों को एक सफल जीवन जीने की शक्ति तथा सामर्थ देने के लिये भेजे गये हैं, तो क्यों इतने अधिक लोग विफल और निराश हुए हैं।

जब मैं एक धर्मप्रचारक था, मैं गिरजा जाया करता था, रैलियों का आयोजन किया करता था, लोंगो की आवश्यकताओं के लिये प्रार्थना किया करता था, और घर वापस जाया करता था। किन्तु अब मैं एक पास्टर हूँ, मेरा दृष्टिकोण बिल्कुल बदल गया है। और मेरे चारों ओर जो हो रहा है, उसको देख कर मैं काफी चिन्तित हूँ।

अब मैं समझ रहा हूँ कि लोगों के जीवन में इतनी ढेर सारी समस्यायें हैं कि मैंनें कभी सपने में भी नहीं सोचा था। बिल्कुल इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है कि कितने विश्वासीगण उदास, हताश हो कर आध्यात्मिक जीवन के स्तर पर दीवालिया हो गये हैं। मैं बार बार देखता हूँ कि छोटी – छोटी समस्यायें लोंगों के जीवन को घेर लेती हैं और ये धीरे – धीरे बढ़ कर गोलियात जैसा खूँखार या हिमालय पर्वत जैसा भयानक रुप ले लेती है।

हे पिता ईश्वर, मैं पूछता हूँ, विजय कहाँ है ? आनन्द कहाँ है ?

बीते सप्ताह, रविवार की रात को हम लोंगो ने पवित्र आत्मा के भावोन्मत आगमन का एक एक बहुत बड़ा अनुभव किया। जैसे मैनें लोंगों

की सेवा की वहाँ एक विशेष अभ्यंजन हुआ। मैं घर लौटा, तो रास्ते पर हाल्लेलूया गाते जा रहा था। मैनें अपनी पत्नी सुजेन से कहा, क्या कमाल की सभा है, ईश्वर ने बहुत बड़ा कार्य किया। जैसे ही मैने अपने कमरे में पैर रखा, वैसे ही फोन की घन्टी बजी। और अगले आधे घन्टे तक उस आदमी की हृदयविदारक कहानी सुनता रहा, जो हमारी प्रार्थना सभा में शामिल था, वह रोते – रोते मुझको बता रहा था, मैं असमंजस में पड़ गया हूँ: मुझे पता नहीं कि मैं किस के पास जाऊँ।

और फिर, यह बार – बार होता रहा है।

सामर्थ्य किसमें है ?

समस्या क्या है। ऐसा क्यों है कि प्रारम्भिक कलीसिया इतनी प्रभावशाली थी और हम इतने कमजोर हैं ? एक शब्द मात्र में शैतान भाग निकलता था, और अब हम इतने डरे और सहमें हुए हैं। शैतान के बारे में इशारा ही बहुत हैं, बस मसीही दुम दबा कर भागे। बहुत – से ऐसे पास्टर लोग हैं जो उसके बारे में चर्चा तक नहीं करते हैं: ऐसा लगता है मानों इस विषय की उपेक्षा करने से ही शैतान भाग जाता है।

यह समझना मुश्किल है। लोगों की मुक्ति का सन्देश देने के लिये ही पास्टर भेजे गये हैं। इसके बदले ऐसे अनेक पास्टर हैं जो इस विषय में मौन साधे रहते हैं। यीशु मसीह के इस वचन से वे शैतानों को निकाला करेंगे (मरकुस 16:17) का अनुपालन करने के बजाय, वे लोंगो को कहते फिरते हैं, यह जो हो रहा है वह वास्तव में ऐसा होता नहीं है – यह सब आपके मन का भ्रम है। और लोग भुनभुनाते हैं, हे प्रभु, मैं क्या करूँ, मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं है। कौन मेरी मदद करेगा।

क्या यहाँ कोई आश्चर्य की बात है कि इस मामले में कुछ कट्टर पन्थी मसीहियों की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली हैं। हमें क्यों चौंकना है जब

शैतान के अनुसरण करने वाले लोग यीशु के अनुयायीयों से भी ज्यादा आलौकिक शक्तियों का प्रदर्शन करते हैं ? यह कैसे सम्भव है ? अगर ईश्वर सर्वशक्तिमान् है, और शैतान ईश्वर के सामने कुछ नहीं है, तो एक शैतान का शिष्य इतने अधिकार के साथ कैसे काम कर सकता है ?

यह तो एकदम आसान है जो व्यक्ति अपनी लघुतम शक्ति का 100 प्रतिशत उपयोग करता है, वह व्यक्ति उस से भी अधिक शक्तिशाली है जिसमें दुनिया भर की शक्ति समाहित है, पर उसका तिल भर का भी इस्तेमाल करने की कोशिश नहीं करता है। मुझे इन दोनो किस्म के लोगों को देख कर बहुत गहरा दुख होता है : पहली किस्म, वह पापी जो शैतान की तरफ से ज्यादा पाता है; और दूसरी, एक ऐसा विश्वासी जो ईश्वर से कुछ नहीं मांगता है, जबकि मांगने पर पूरा पा सकता है।

अब समय हो चुका है कि आप सर्वशक्तिमान् की शक्ति और सामर्थ का प्रयोग करना आरम्भ करें। आपको यह समझना जरुरी है कि ईश्वर उन सारे शैतानों से भी महान है जो यीशु मसीह के एक शब्द मात्र से नष्ट किये जाते हैं। शैतान को अगाध गर्त में बन्द रखने के लिये यीशु मसीह का एक दूत ही पर्याप्त है। ईश्वर शक्तिहीन नहीं है – उनकी प्रजा ही कमजोर है।

मैं तो केवल इस निश्कर्ष पर ही पहुँच सका।

सारांश में मेरे विचार से इस समस्या का एक ही मूल कारण है। समस्त कलीसिया एवं एवं उसके विश्वासियों का पतन और पराजित होने का मूल कारण यह है कि उन्होने विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली व्यक्ति की उपेक्षा की है– पवित्र आत्मा की। फिर किसी शक्ति या सामर्थ से नहीं, पर मेरे आत्मा के द्वारा, विश्वमण्डल का प्रभु कहता है (जकर्याह 4:6)। और इसके बाद के शब्द भी उतने ही उत्तेजित करने वाले हैं;

''मलवे का विशाल ढ़ेर। तू क्या चीज है ?.....तू सपाट हो जायेगा'' (पद 7)।

आपको अपने सामने जमी इन चट्टानों के ढ़ेर को हटाने के लिये एक बड़े ट्रैक्टर से भी विशालकाय एक बुलडोजर चाहिये। यह व्यर्थता और भय का एक भीमकाय पर्वत है। और इसके लिये आपके जीवन में एक खुदाई जरुरी है जो सिर्फ पवित्र आत्मा की ऊर्जित करने वाली शक्ति के द्वारा ही सम्भव हो सकता है।

असली, नकली नहीं

ईश्वर अपने वचन के माध्यम से इस दासता का जुआं उतार फंकने का नुस्का बताते हैं। उन्हे अच्छी तरह मालूम है कि आपके इस भारी बोझ को कैसे उतारना है। इसे अभिषेक कहते हैं।

उस समय ऐसा होगा कि
उसका बोझ तेरे कंधे पर
और उसका जुआ तेरी गर्दन पर से उठा लिया जायेगा
और अभिषेक के कारण वह जुआ तोड़ डाला जायेगा। (यशायाह 10:27)।

जिस प्रकार ईश्वर ने इस्त्राएल के बोझ को उतार दिया, उसी प्रकार आपके जीवन का जुआ भी कन्धे से उतार फेंकेंगे। फिर तो, शैतान ही है वह धोखेबाज जिसने आपके कंधे पर यह भारी जुआ रखा दिया है। परन्तु यीशु ने, जिन्होने इस बन्धन को तोड़ने की घोषणा की है, कहा, मेरा जुआ सहज है और मेरा बोझ हलका है (मत्ती 11:30)।

सदा कसे रहने वाला कितना भी भारी जुआ क्यों न हो पवित्र आत्मा द्वारा आसानी से उतार दिया जा सकता है। और यह सिर्फ उस क्षण के लिये ही नहीं है। यह कोई तत्कालिक समाधान भी नहीं है। वे

आपके साथ रहते हैं, आपके बोझ को लगातार उतारते रहते हैं, तथा आपको एक बिल्कुल नयी राह से आगे ले चलते हैं। प्रेरित यूहन्ना ने आत्मा के सम्बन्ध में कहते हुए लिखा है;

''और संसार और उसकी अभिलाषा दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा'' (1 यूहन्ना 2:27)

यहाँ एक डाक्टर की उपाधि की आवश्यकता नहीं है यह परखने के लिये कि कौन अभिषिक्त है और नहीं है। यहाँ तक एक मामूली पापी जो पुनः जन्मा नहीं है, जिसको रविवारीय पूजा – प्रार्थना से कोई मतलब ही नहीं है, और जो टी. वी. के सामने बैठकर रिमोट कन्ट्रोल पहचाना जाता है कि यह एक कीमती हीरे की तरह दमकदार और दुर्लभ है।

यह बड़े अफसोस की बात है के ऐसे बहुत लोग हैं जिन्हें अभिषेक नहीं मिला है, लेकिन वे उसे उत्पन्न करने की चेष्टा करते हैं। वे जबरदस्ती करने की कोशिश करते हैं, पर प्रभु का संस्पर्श उनमें है ही नहीं कितनी बार आप आजस्वी वक्ताओं या बाइबल के व्याख्याताओं के पास यह देखने गये कि सच में वे अभिषिक्त हैं, या केवल हवा भरे खोखले खिलौने के समान इनके भीतर ज्ञान के सिवा कुछ भी नहीं। ये तथ्यों और सूचनाओं से बाज आयें, पर बिल्कुल बेजान, वे चलते – फिरते ज्ञान की बातें हैं, पर इनके शब्द निर्जीव व खोखले हैं।

वेस्ट कोस्ट के सम्मेलन में जो घटना घटी वह भूलने पर भी भुलाई नहीं जा सकती। दोपहर की एक बैठक में एक युवक को गाने को कहा गया। एक कमाल की मीठी आवाज में निपुणता के साथ उसने गाया, राजा आ रहे हैं। सभी लोग आनन्द व उल्लास में मंत्रमुग्ध हो गये, तालियों की गड़गड़ाहट से सभा ने भारी अपनी खुशी इजहार की।

मुझे नहीं मालूम कि यह कैसे हुआ, पर शाम की सभा में एक महिला ने भी ठीक यही गाना गाया। सच तो यह है कि वह एक गायिका

के समान नहीं लगी, वह नाक से गा रही थी, – कहीं बेताल थीं, और कहीं – कहीं बेसुर थीं। परन्तु उसके पास कुछ और था, जो इन खामियों से भी हजारों गुना ज्यादा असरदार रहा। दूसरी कड़ी पहुँचते – पहुँचते, एक – एक कर लोग अपने पैरों पर हो गये। अपने हाथों को ऊपर की ओर उठाते हुए। उस माहौल का असर एक बिजली – सा था। और उसका गाना तो बन्द हो गया, पर लोग नहीं रुके। हम लोगों ने ईश्वर की स्तुति की और हम लगातार करते रहे। तब तालियाँ शुरु हो गयीं – बजती रहीं, और बजती रहीं, आज तक कभी इतनी देर तक नहीं बजीं थीं। लेकिन हम लोग तो उस गायिका को शाबासी नहीं दे रहे थे। हम लोग उस गाने के दानकर्ता को बधाई दे रहे थे।

इन दोनों में फर्क क्या है ? मेरे दोस्त, बस, फर्क तो अभिषेक का है। उस महिला में अभिषेक था, पवित्र आत्मा की शक्ति थी।

कैनेडा में बिली ग्राहम की एक प्रार्थना सभा की तैय्यारियाँ इतनी सुगठित थीं कि ऐसी तैय्यारियाँ मैनें कभी देखी ही नहीं थीं। और सभा के सारे कार्यक्रम बाकी स्थानों की अपेक्षा सुचारु एवं सुव्यवस्थित थे। जब ग्राहम ने प्रवचन देना शुरु किया, तो उनके संन्देश में पवित्र आत्मा का संस्पर्श अचूक और सुस्पष्ट था। उनकी विषय वस्तु यीशु थे। पर यह सच है कि मैं एक ऐसे व्यक्ति के सामने था जिनके अपने जीवन में पवित्र आत्मा के साथ गहरा व्यक्तिगत साहचर्य था।

उन शब्दों ने मन्दिर को निस्तब्ध किया

सृष्टि की शुरुआत से ही आत्मा के अभिषेक के प्रभाव को देखकर लोग विस्मित होते आ रहे हैं। उस पर आश्चर्य किया जा रहा है, इसका प्रकटन हुआ जा रहा है, तथा इसका अनुकरण किया जा रहा है। परन्तु

एक सच्चा अभिषेक हमेशा पवित्र आत्मा ईश्वर का ही कार्य रहते आया है – अब भी ऐसा ही रहता है, और रहेगा भी।

इसका उद्देश्य क्या है ? ताकि आप शक्ति तथा सामर्थ्य के साथ ईश्वर का संन्देश घोषित कर सकें।

प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है,
क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार
सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया
और मुझे इसलिये भेजा है कि
संबंधित मन के लोंगों को शान्ति दूँ,
कि बन्दियों के लिये स्वतंत्रता का और
कैदियों के लिये छुटकारे का प्रचार करुँ।(यशा. 61:1–2)।

लेकिन ये शब्द पुराने नियम के एक नबी के यों ही कुछ सन्देश नहीं हैं। यीशु ख्रीष्ट ने नबी के इन शब्दों को उद्धरित करते हुए यरुशलेम मन्दिर में प्रवचन दिया, तो श्रोतागण अचम्भे में पड़ गये (लूका 4:18,19)।

यह आपको कतई नहीं भूलना चाहिये कि पवित्र आत्मा को समझने के लिये यह एक अनिवार्य शर्त है कि वे ईश्वर हैं। यह सच्चाई की व्याख्या शायद आपको नयी लगेगी और शायद आपके गले के नीचे नहीं उतरेगी। पर यह तथ्य उतना ही सत्य है। क्या आपको याद है कि इस प्रसंग में अय्यूब की पुस्तक में क्या लिखा है। ''मुझे परमेश्वर के आत्मा ने बनाया है, और सर्वशक्तिमान की साँस से मुझे जीवन मिलता है।'' (अय्यूब 33:4)।

जब पिता ईश्वर अपने सिंहासन पर विराजित हो कर कह रहे थे, हम मनुष्य को बनायें तब पवित्र आत्मा इस पृथ्वी पर अपना कार्य कर रहे थे। इसके दूसरे पद में कहता है कि सृष्टि करते समय परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डलाता था (उत्पत्ति 1:2)। इस पृथ्वी के जीव –

जन्तुओं के सम्बद्ध चर्चा करते समय भजन संहिता के लेखक ने लिखा, तू अपना आत्मा भेज देता है, और पृथ्वी का रुप नया कर देता है (भजन 104:30)।

अध्यात्मिक विकास

अगर आप अपने जीवन में पवित्र आत्मा का अभिषेक प्रत्यक्ष एवं सुस्पष्ट देखना चाहते हैं, तो सब से पहले आपको अनिवार्यतः यह समझना होगा कि पवित्र आत्मा आपके लिये कौन हैं, वे आपके जीवन में किस प्रकार कार्य करते हैं, और किस तरह आप उनके साहचर्य में आ सकते हैं। आपको यों ही खुश करने के उद्देश्य से पवित्र आत्मा नहीं भेजे गये हैं। वह तो वो करेंगे ही, पर उनका कार्य इससे भी परे है। उनको ईश्वरत्व में समानाधिकार है तथा वे हमारी स्तुति और आराधना के उतने ही पात्र हैं जितने कि पिता ईश्वर और पुत्र ईश्वर। लेकिन यह तो सिर्फ एक शुरुआत है। आपका आध्यात्मिक विकास एक विशाल सागवान के समान है जिसका खाद – जल से पालन – पोषण तथा अप्राकृतिक शक्तियों से संरक्षण भी अति आवश्यक तत्व है।

तो इसके बाद मैं क्या करुँ ?

हाल ही में एक आदमी ने मुझसे कहा, बेन्नी, ''मैं आापका शुक्रगुजार हूँ, आपने सन् 1978 में पवित्र आत्मा से मेरा परिचय कराया था।''

मैनें कहा, ''यह तो बड़ी अच्छी बात है। तो बताइये, तब से सब कुछ कैसा चल रहा है ?''

उसका चेहरा सुन्न पड़ गया।''हाँ, सच में, कुछ खास नहीं यों ही याद आ गया, उस दिन जब मैं उनसे मिला था,वह मुझे अच्छा लगा था।''

आप ऐसे क्यों सोचते हैं कि कुछ भी नहीं हुआ है ? मैनें पूछा।

उसका यह जवाब मैं कैसे भूल सकता हूँ : मै सोचता हूँ कि शायद मुझे नहीं मालूम था कि मैं क्या करुँ।

पवित्र आत्मा से परिचय कराये गये हर एक व्यक्ति से शायद मैं यही आशा रखता हूँ कि वह पवित्र आत्मा के साथ ऐसा पेश आये, जैसे मैंने किया। अक्षरशः मैं पवित्र आत्मा और ईश – वचन से इतना अबद्ध और आत्मसात हो गया कि मैं एक स्पंज के समान, उनके पास मेरे लिये जो कुछ भी था, पूरा का पूरा सोखने लगा। इसके लिये समय तो लगा ही, सैकड़ों और सैकड़ों घन्टें पवित्र आत्मा के साथ।

मैं देखता हूँ कि ईश्वर के वचन की गहरी खोज करने के लिये समय निकालना बहुत लोंगों के लिये असम्भव सा लगता है, क्योंकि वे अत्याधिक व्यस्त हैं। केवल यह पुस्तक पढने से आपको उस तथ्य की एक संक्षिप्त सूचना प्राप्त होती है जो तथ्य पवित्र आत्मा को मेरे साथ बांटने में वर्षों लग गये। किन्तु एक काम मैं आपके लिये नहीं कर सकता हूँ। आपके सिर पर जादू की छड़ी मार कर आपको मैं एक अभिषेक नहीं दे पाऊँगा। यह तो पवित्र आत्मा के साथ सिर्फ एक गहरी व्यक्तिगत मुलाकात से ही प्राप्त होता है। तथा यह मुलाकात आपके द्वारा स्थापित किये जाते अन्तरंग सम्बन्ध एवं साहचर्य के साथ पनपती और बढ़ती रहती है।

जिस क्षण आप यह अनुभव करने लगते हैं कि पवित्र आत्मा ईश्वर वास्तव में ईश्वर हैं, उसी क्षण से पवित्र आत्मा में आपका विकास प्रारम्भ होता है। इसको मैं बार – बार दुहरा कर आपको इससे भी ज्यादा समझा नहीं पाऊँगा क्योंकि बचपन से ले कर आज तक हमारे अन्तः मन में पवित्र आत्मा के कमजोर व्यक्तित्व का एक धुँधला – सा अस्पष्ट रुप ही बैठाया गया है।

मैनें कहीं एक पुस्तक में पढ़ा जिसमें लिखा है, पवित्र आत्मा यीशु के शरीर का सेवक है। मैं इस तरह की गलतियों और गलतफहमियों के बारे में ही बता रहा हूँ। वे एक सेवक नहीं हैं, वे तो इसके प्रभारी हैं। वे यीशु के शरीर के अग्रगामी हैं।

मैं आपको कुछ और नयी बात बताना चाहता हूँ जो मैनें जाना है। पवित्र आत्मा ईश्वर ही नहीं हैं, बल्कि वे प्रभु यीशु मसीह के पिता भी हैं। ठहरिये आपको यह कहने के पहले, अब, बस कीजिये, स्वाहा, मैं आपको ईश्वर के वचन की ओर ले जाना चाहता हूँ।

आप कहना यह चाहते हैं, ''मैनें सोचा कि पिता ईश्वर यीशु के पिता थे।'' जी हाँ, बिल्कुल सही है, पर आप गलत भी हैं। मैं आपको प्रमाणित करने जा रहा हूँ यह कैसे। सुसमाचारों के प्रथम अध्याय में हम पढ़ते हैं कि पवित्र आत्मा यीशु के पिता हैं; ''अब यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ, उनकी माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हुई थी, परन्तु उनके एक साथ रहने से पहले ही मरियम पवित्र आत्मा से गर्भवती हो गयी।'' (मत्ती 1:18)।

मरियम भी काफी चिन्तित हो गयी। मरियम ने स्वर्गदूत से कहा यह कैसे हो सकता है ? मेरा तो पुरुष से संसर्ग ही नहीं है। स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, कि पवित्र आत्मा तुम पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुम पर छाया करेगी इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलायेगा (लूका 1:34,35)। बस, यही तो है। ये ईश्वर के पुत्र कहलाते हैं, लेकिन ये पवित्र आत्मा थे जो यीशु की माँ पर उतर आये। यही है पवित्र त्रिएकत्व का सामीप्य – एक ही साथ पिता ईश्वर के पुत्र तथा पवित्र आत्मा ईश्वर के पुत्र।

यीशु मसीह की विशिष्टतायें भी उनका पवित्र आत्मा के द्वारा दी गयी थी। यीशु के आगमन के विषय में यशायाह ने लिखा है :–

यिशै के ठूँठ में से एक डाली फूट निकलेगी;
उसकी जड़ में से एक शाखा निकल कर फलवन्त होगी
यहोवा का आत्मा,
बुद्धि और समझ का आत्मा,
मुक्ति और पराक्रम का आत्मा
और ज्ञान और यहोवा के भय का आत्मा
उस पर ठहरा रहेगा। (यशायाह 11:1,2)।

पिता कौन हैं ?

यीशु मसीह पवित्र आत्मा के पुत्र हैं। जिस प्रकार इस जगत में माता पिता अपने नन्हे – मुन्ने को प्यार करते हैं, ठीक उसी प्रकार पवित्र आत्मा ने भी यीशु को प्यार किया। क्या आपने कभी एक गर्वित पिता को उसके नवजात शिशु को उसकी बाँहों में लिये, उसे कस कर भींचते, उसे पुकारते और प्यार करते हुए देखा है ? मुझे लगता है कि हम लोग यह भूल जाते हैं कि पवित्र आत्मा की भी अपनी भावनायें हैं। वे उसे प्यार करते है, जिसे उन्होने बनाया है, यही कारण है कि वे अपनी बाँहों में आपको लेना चाहते है।

क्या स्वर्ग में पिता ईश्वर को पवित्र आत्मा से यह कहते हुए आप सुन सकते हैं, मेरे पुत्र को ले लीजिये और उन्हे एक मानव रुप दे दीजिये? जी हाँ, यह तो चमत्कारों का चमत्कार था। पवित्र आत्मा ने इसी बीज को ले जाकर मरियम के गर्भ में उसका रोपण किया। परन्तु पवित्र आत्मा यीशु के पिता ही नहीं, बल्कि उनका अभिषेक करने वाले भी पवित्र आत्मा ही थे।

हो सके तो यह तस्वीर आप अपने मन में देखिये, पिता ईश्वर स्वर्ग में अपने सिंहासन पर विराजित हुए तथा यीशु इस पृथ्वी पर रोगियों को

चंगा करते हुए। तो पवित्र आत्मा ? वे माध्यम हैं दोनों व्यक्तियों के बीच की कड़ी। मान लिया जाये कि पिता अपने फोन का नम्बर घुमाते हैं और पूछते हैं, कौन, पवित्र आत्मा ?

जी हाँ फोन उठाते हुए पवित्र आत्मा जवाब देते हैं। ईश्वर कहते हैं, मैं चाहता हूँ कि आप यीशु को उजाड़ प्रदेश की ओर ले चलें क्योंकि मैं उनकी परीक्षा लेने के लिये शैतान को भेज रहा हूँ।

पवित्र आत्मा कहते हैं, जी हाँ, तथा यीशु मसीह की ओर दौड़ पड़ते हैं। यीशु, मेरे साथ चलिये, वे कहते हैं।

क्या यहाँ इन दोनो व्यक्तियों के बीच में पवित्र आत्मा को एक कड़ी के रुप में आप देखते हैं ?

अथवा ऐसे एक चित्र की कल्पना कीजिये। यीशु एक बीमार व्यक्ति के बगल से होकर गुजर ही रहे थे कि पिता फिर फोन करते हैं, और पूछते हैं, पवित्र आत्मा ? यीशु को रोकिये। उनको ठीक वहीं खड़े रहने को कहिये।

आत्मा कहते हैं, यीशु, रुक जाइये।

वे फोन से पूछते हैं, पिता, अब इनको क्या करना होगा ?

उनको उस आदमी को चंगा करने को बोलिये, ईश्वर की आवाज कहती है।

तुरन्त यीशु अपना हाथ उस आदमी पर रखते हैं, ईश्वर की शक्ति उनके द्वारा प्रवाहित होती है और वह आदमी चंगा हो जाता है।

यहाँ आपके लिये याद करने लायक अनिवार्य बात यह है – और जब आप इसे समझ पायेंगे कि पवित्र आत्मा की भूमिका क्या है इसके सम्बन्ध में आपकी आँख का पर्दा उठ जायेगाः इस पृथ्वी पर यीशु एक सम्पूर्ण मनुष्य से थोड़े भी कम नहीं थे। और वे तब तक चल नहीं सके जब तक कि पवित्र आत्मा ने उनको नहीं चलाया।

क्या आपने कभी सोचा है कि क्यों, जब यीशु गुजर रहे थे, कुछ लोग चंगे हुए ? यीशु ने उनके लिये प्रार्थना क्यों नहीं की ? यीशु उनके प्रति उदार क्यों नहीं रहे और उन्होने उनका स्पर्श नहीं किया। यह इसलिये कि पिता ने पवित्र आत्मा से आग्रह नहीं किया कि यीशु यह करें। यीशु मसीह ने कहा, कि संसार यह जान पाये कि मैं पिता से प्यार करता हूँ, और जैसे पिता ने मुझे आज्ञा दी है, वैसे मैं भी देता हूँ, (यूहन्ना 14:31)। यीशु आत्मा पर आश्रित थे, पवित्र आत्मा यीशु और पिता के बीच की संयोजन – कड़ी थे।

क्या यीशु मसीह पाप करने में सक्षम थे ?

यीशु मसीह ने गोलगोता की प्राण पीड़ा सहने से पहले ही अपने को पवित्र आत्मा के द्वारा पिता को समर्पित किया। यीशु मसीह के रक्त को पशुओं के बलि से तुलना करते हुए इब्रानियों की पत्री में लिखा गया हैः ''तो फिर मसीह का रक्त, जिसे उन्होने शाश्वत आत्मा के द्वारा निर्दोष बलि के रुप में ईश्वर को अर्पित किया, हमारे अन्तःकरण को पापों से क्यों नहीं शुद्ध करेगा और हमें जीवन्त ईश्वर की सेवा के योग्य बनायेगा?'' (इब्रानियों 9:14)।

यदि उन्होने स्वयं को पवित्र आत्मा के द्वारा अर्पित नहीं किया होता, तो वे पिता की दृष्टि में स्वीकृत नहीं हुए होते। और न ही उन्होने क्रूस पर इतने कष्ट सह लिये होते। अगर उन्होने पवित्र आत्मा के द्वारा अपने को नहीं चढ़ाया होता, उनका रक्त भी शुद्ध और निर्दोष नहीं रह गया होता।

और मैं अपनी तरफ से यह भी जोड़ना चाहता हूँ, यदि पवित्र आत्मा यीशु के साथ नहीं होते, तो शायद उन्होने पाप किया होता। यह बिल्कुल सही है। वह अपार शक्ति पवित्र आत्मा ही थे जिन्होने यीशु को

शुद्ध और निर्दोष रखा। वे न केवल स्वर्ग से भेजे गये, बल्कि वे मानव पुत्र भी कहलाते हैं – और यही कारण है कि वे पाप करने में सक्षम थे। यह तथ्य कि उन्होने पाप नहीं किया, इसका यह मतलब नहीं कि वे पाप नहीं कर सके।

अगर आप मानते हैं कि यीशु पाप करने में सक्षम नहीं थे, तो उनको परीक्षा करने के लिये शैतान अपना समय क्यों बर्बाद करता ? शैतान ने यह अच्छी तरह जाना कि वह क्या कर रहा था, यीशु पवित्र आत्मा के बिना कभी कामयाब नहीं होते।

वास्तव में यीशु ने निर्दोष रहने के लिये ही अपने को पवित्र आत्मा के द्वारा अर्पित किया। यहाँ तक कि कब्र में से मृत्यु के चंगुल से छूटकर जी उठने के लिये भी वे पवित्र आत्मा पर निर्भर थे। याद है, पौलुस ने क्या कहा ? यीशु ख्रीष्ट, मृतकों में से जी उठने के कारण पवित्र आत्मा के द्वारा सामर्थ्य के साथ ईश्वर के पुत्र प्रमाणित हुए (रोमियों 1:4)।

पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा ही यीशु मसीह मृतकों में से जिलाये गये, ''यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है; तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी नश्वर देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है, जिलायेगा (रोमियों 8:11)। न केवल आत्मा ने यीशु को जिलाया, लेकिन ये आप लोंगों को भी जिलायेंगे। हम अपनी पूरी आशा उन पर रख सकते हैं।

ईश्वर की उत्कृष्ट योजना

खाली कब्र से बाहर निकलकर एक नया इतिहास रचने वाली ऐसी एक अद्‌भुत घटना के बावजूद, यीशु मसीह पवित्र आत्मा पर निरन्तर निर्भर होते रहे। वस्तुतः उन्होने अपने शिष्यों से कहा कि वे यरुशलेम छोड़ कर न जायें, तथा स्वर्ग से प्रतिज्ञात वरदान से सम्पन्न होने तक

वहीं रहें। उन्होने कहा कि उनको पिता की प्रतिज्ञा की प्रतीक्षा में, जो ..... आप लोंगो ने मुझसे सुनी है, युहन्ना ने वास्तव में जल से बपतिस्मा दिया परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।(प्रेरितों 1:4,5)।

इन शब्दों को बोलते समय यीशु मसीह ईश्वर के नियन्त्रण में थे। वे तो उन शब्दों को दुहरा रहे थे जिन्हे पिता ने पवित्र आत्मा से कहा था।

यीशु मसीह आत्मा पर इतने आश्रित रहे कि उन्होने अपने अनुयायियों को आदेश देने से पहले पवित्र आत्मा से सलाह ली। बाइबल कहती है कि वे पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरितों को आदेश देने के पश्चात् स्वर्ग में आरोहित कर लिये गये (प्रेरितों 1:2)।

मुझे गलत मत समझियेगा। मैं यह कभी नहीं कह रहा हूँ कि यीशु ख्रीष्ट पवित्र आत्मा से भी निचले दर्जे के हैं। कदापि नहीं। यीशु मसीह पवित्र आत्मा से निचले तबके के नहीं हैं, और न ही पवित्र आत्मा यीशु मसीह से निम्न स्तर के। पवित्र त्रिएकत्व में सम्पूर्ण समानता है। प्रत्येक सदस्य की अपनी अपनी विशिष्टतायें हैं एवं विशेष उद्‌देश्य है।

मैं आपको बताना चाहता हूँ, कि पवित्र आत्मा न कम हैं, न कमजोर हैं। वे अपने को पूर्ण रुपेण अभिव्यक्त करने में न अनपढ़ हैं, न अक्षम हैं। पवित्र आत्मा सम्पूर्ण हैं, समर्थ हैं, प्रतापी हैं।

पवित्र आत्मा हमारी आराधना के योग्य हैं। हम पीढ़ियों से जो गाते आ रहे हैं उसको अमल में लाना होगा : ''ईश्वर की स्तुति गायें जिनसे सारी कृपायें प्रवाहित होती हैं ..... पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा की स्तुती गायें।''

''आप उनको कैसे पहचानते हैं ?'' बस, यह उतना ही सहज है जितना कि आप सोने के लिये लेटते वक्त आपकी अन्तरात्मा में एक

आवाज को गूँजते आप सुनते हैं और वह आपको स्मरण दिलाती है, आज तूने प्रार्थना नहीं किया है। अथवा वह आवाज कहती है, तूने आज ईश्वर का वचन नहीं पढ़ा है। आपकी अन्तरात्मा की खट – खट की आवाज, यह गूँज और यह वाणी पवित्र आत्मा की है। आप उनको जानते ही हैं, लेकिन वे आपके लिये तरस रहे हैं कि आप उनको और गहराई से जानें।

प्रभु आगे ही कह चुके हैं कि जब आपने पवित्र आत्मा के लिये जगह बनायी, तो उसका क्या नतीजा होने वाला है। उन्होने कहाः ''जो मुझमें विश्वास करता है, जैसा कि बाइबल में लिखा है, उसके अन्तस्तल से संजीवन जल की धारायें बह निकलेंगीं'' (यूहन्ना 7:38)। और अभिषेक, जिसके विषय में वे कह रहे थे, किस प्रकार का है ? लेकिन यह बात उन्होने ''उस आत्मा के विषय में कही, जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे'' (पद 39)।

आपके जीवन की एक उत्कृष्ट विस्तृत योजना ईश्वर के पास है। उनके आत्मा तथा अभ्यंजन भी इसकी अंतिम रुप – रेखा में शामिल किये गये हैंः ''और जो हमें तुम्हारे साथ मसीह में दृढ़ करता है, और जिस ने हमें अभिषेक किया वही परमेश्वर है। जिस ने हम पर छाप करा दी और बयाने में आत्मा को हमारे मनों में दिया'' (2 कुरि. 1:21,22)।

क्या आपने पवित्र आत्मा के लिये स्थान तैयार किया है ? बस, वे इतना ही मांगते हैं कि आपके दिल में उनके लिये एक जगह बन जाये।

अध्याय 10

''केवल एक साँस दूर।''

''ईश्वर मेरी प्रार्थना का उत्तर क्यों नहीं देते हैं ?
मैं अपनी चंगाई और मुक्ति क्यों नहीं पा सकता हूँ ?

आपके इस सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर निकट है आपकी कल्पना से भी परे एक निकटतम समीप्य। आपके अन्स्तल से उच्चरित एक शब्द ही काफी है कि आपकी जिन्दगी की काली घटायें तुरन्त ही छँट जायेंगी। ऐसे सोचने का समय तो पार हो चुका है कि ईश्वर एक आत्मा है जो हमारी पहुँच से परे लाखों मील दूर वास करते हैं। पिता इतने नजदीक हैं कि आप किसी भी वक्त उनसे बात कर सकते हैं, और उनके आत्मा इतने निकट हैं कि आपको विश्राम, और शांति दे सकते हैं, तथा आपका पथ प्रदर्शन कर सकते हैं। बस, आपको इतना ही करना है कि आप उनसे मांगें और यह भरोसा रखें कि वे यह कार्य अवश्य करेंगें।

मैनें आत्मा में जे अनुभव किया है वह कोई गोपनीय अभेध्य रहस्य नहीं है। यह आपका जीवन जितना वास्तविक है उतना ही यह वास्तविक है, और आपके दिल की धड़कन आपके जितने करीब है उतने करीब भी है। और यह कारण है कि इसे मैं आपके साथ बांटना चाहता हूँ।

ईश्वरत्व का कार्य

''दुर्बलता?'' या ''इच्छाशक्ति?''

ईश्वरत्व के विषय में इस तथ्य से हम आरम्भ करें, एक के विषय में जो सत्य है कोई जरुरी नहीं है कि यह तीनों के लिये एक समान लागू हों। वे कभी कभी भिन्न हैं, यहाँ तक कि उनके कार्य तथा बात करने के तरीके भी,हम लोग इसके पूर्व इस तथ्य पर चर्चा कर चुके हैं कि ईश्वरत्व

ईश्वरत्व के सदस्य तीनों अलग अलग हैं – बावजूद इसके कि वे एक हैं। परन्तु ईश्वर के साथ हमारे व्यक्तिगत सम्बन्ध एवं सम्पर्क के सन्दर्भ में पिता, पुत्र तथा पवित्र आत्मा की एक सही समझ और पहचान हमारे लिये अनिवार्य है।

जब भी आप ईश्वर को कार्य करते देखते हैं, तो आप उनको एक ही ईश्वर के रुप में अनुभव करते है। लेकिन धीरे – धीरे आप उनके सोचने के ढ़ंग में और कार्य करने के ढ़ग में अन्तर देखने लगते हैं।

एक उदाहरण लें। जब यहूदी जनता ईश्वर के साथ बनाये गये विधान को पिता की उपस्थिति में ज्ञान पूर्वक एवं स्वेच्छा से प्रतिज्ञा – भंग करे, तो क्या आपको मालूम है कि क्या हुआ ? बाइबल बताती है कि उन्हे या तो मार डाला गया था दण्ड दिया गया।

लेकिन पुत्र ईश्वर ऐसे जानबूझ कर और अपराध करने वालों के साथ एक अलग ढ़ंग से पेश आये। उदाहरणार्थ फरीसियों के मामले लीजिये। क्या यीशु ने उन्हे मार डाला ? जी नहीं। उन्होने कठोर शब्दों में उनकी निन्दा की।

आप कहेंगे, बेन्नी, मैनें हमेशा यही विश्वास किया कि यीशु मसीह ने सबको क्षमा किया। बाइबल में इसका कोई जिक्र नहीं है कि यीशु मसीह ने यहूदियों को उनके पापों के लिये क्षमा दी। फिर भी यीशु ने उस अपराधी को जिसने क्रूस पर से हृदय से पश्चाताप करते हुए कहा, मैं एक पापी हूँ, माफ किया।

यहाँ गलत मत समझें। पिता ईश्वर ने अवश्य क्षमा की, पर उन्होने अपने विरुद्ध विद्रोह करने वालों को चाहे मार डाला या दण्ड दिया। हालांकि पुत्र ईश्वर ने अपने एक अलग तरीके से इनका सामना किया। जानबूझ कर और खुशी से गुनाह करने वालों का कत्ल करने या सजा देने के बजाय, उन्होने उन लोंगो की तीखी भर्त्सना की।

अब आपका यह प्रश्न होगा, तो बेन्नी, पवित्र आत्मा का कौन सा तरीका है ? स्वेच्छा से ज्ञान पूर्वक पाप करने वालों को वे कैसे उत्तर देते हैं ? उनकी प्रतिक्रिया पिता और पुत्र की प्रतिक्रिया से भिन्न है। पवित्र आत्मा उन्हे न तो समाप्त करते हैं और न भर्त्सना करते हैं – वे उन्हें दोषी सिद्ध करते हैं और अपने सान्निध्य की शक्ति को उनसे वापस लेते हैं।

मुझे किसकी ओर ताकना चाहिये ?

जैसे हम देखते हैं कि त्रिएक परमेश्वर तीन पृथक और अनन्य व्यक्तियों के समावेश हैं। किन्तु आपको उनका एकत्व – उनकी एकता समझना होगा। आप अनिवार्यतः यह पहचान लें कि सर्वस्व समाविष्ट करने वाले के एकत्व, जिनके विषय में हम चर्चा कर रहे हैं, ईश्वरत्व के तत्व एवं कार्य से सीधा संम्बन्ध रखते हैं।

ईश्वरत्व में संचालन के इन विविधताओं – ईश्वर का वचन स्पष्ट रुप से प्रमाणित करता है, तब भी ये एक हैं पौलुस ने इस तथ्य को कुरिन्थि. की कलीसिया के लिये इस प्रकार स्पष्ट कियाः सेवा भी कई प्रकार की हैं परन्तु प्रभु एक ही हैं, और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं परन्तु परमेश्वर एक ही है जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है। (1 कुरि. 12:5,6)। और वह आगे लिखता है, किन्तु सब के लाभ पहुचाने के लिये हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है। (पद 7)।

पौलुस ईश्वरत्व के परिचालन के मर्म का वर्णन कर रहा था। उसने स्पष्टतः वर्णन किया कि प्रभु यीशु मसीह संचालक हैं, पिता परिचालक हैं, तथा पवित्र आत्मा प्रगटक हैं। अक्सर बाइबल में ईश्वरत्व का क्रम इस प्रकार अंकित किया गया हैःपिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। किन्तु कुछ ऐसे भी स्थल हैं जहाँ इस क्रम में परिवर्तन आ गया है। उनमें

से एक प्रसंग है उपर्यक्त पद,जहाँ यीशु मसीह को इस क्रम में द्वितीय स्थान पर न रख कर प्रथम स्थान पर और पिता को द्वितीय स्थान पर रखा गया है।

परन्तु हम आगे की चर्चा हेतु बाइबल में दिये गये इस साधारण क्रम को लेंगे। पिता का प्रथमिक कार्य क्या है ? वे परिचालन करते हैं। और पुत्र क्या करते हैं ? वे पिता के इस परिचालन का संचालन करते हैं। तथा पवित्र आत्मा इस परिचालन के संचालन को प्रगट करते हैं।

अगर आप जीवन चाहते हैं, तो किसके पास जाते हैं ? आप पिता के पास जाते हैं, क्योंकि जीवन तथा, अच्छे और उत्तम दानों के दानकर्ता पिता हैं। आप कहेंगे, बेन्नी, मेरा विचार था कि हम यीशु के पास जाते हैं। जी नहीं। स्त्रोत तो पिता हैं। वह स्त्रोत आपको प्रदान करनेवाले ख्रीष्ट हैं। और पवित्र आत्मा उस स्त्रोत की शक्ति हैं।

अतः आपको जीवन जरुरी है, तो इसकी प्रक्रिया इस प्रकार होती है। आप पिता ईश्वर की ओर उन्मुख हो कर कहते हैं, हे पिता, मुझे जीवन दीजिये। अथवा चंगाई। अथवा मुक्ति। क्योंकि ईश्वर इसके स्त्रोत हैं।

यीशु ने कहा, ''मेरे नाम पर पिता से कुछ भी मांगो'' यद्यपि आप पिता के पास उनके पुत्र के माध्यम से जाते हैं, तथापि आप पिता से ही वरदान मांग रहे हैं। और आपकी मांग पुत्र के द्वारा पिता के पास पहुँचती है।

आपको अपनी मांग का जवाब कैसे प्राप्त होता है ? मान लें कि आपकी मांग चंगाई है। पिता ईश्वर – आप गौर करें कि ईश्वर तीन व्यक्ति हैं – पुत्र की ओर देखते हैं और कहते हैं, कृपया उनको चंगा कीजियेगा।

यीशु मसीह चंगाई प्रदान करते हैं। क्यों ? क्योंकि संचालक की तो यही भूमिका है – कार्य संम्पादन – लतीनी शब्द का अर्थ है कार्य करना

या सेवा करना तो पिता पुत्र के हाथों में चंगाई देते हैं और पुत्र उस चंगाई से आपकी सेवा करते हैं।

क्या आप ऐसी एक कल्पना कर सकते हैं जहाँ आप एक चंगाई का उपहार लेने के लिये अपने हाथों को बढ़ाये हुए है और आप देख रहे हैं कि आप किसी तरह से भी पहुँच नहीं रहे हैं। आप अपनी बाहों को यथासम्भव आगे बढ़ा रहे हैं, और भी आगे, पर अब आपको लगता है कि वह आपकी पहुँच के बाहर है। इतना निकट और तब भी इतना दूर। क्या हो गया है ? क्या कमी है ?

बस, यहीं है पवित्र आत्मा की भूमिका। पिता के द्वारा उपलब्ध और पुत्र के द्वारा प्रदत्त इस चंगाई को प्रगट करने के लिये पवित्र आत्मा स्वयं को उपस्थित करते हैं। आपकी चंगाई की प्रक्रिया को पूरा करने वाले पवित्र आत्मा हैं।

वे आपके बगल में हैं

यह पेन्तिकुस्त से शुरु हुआ। पवित्र आत्मा ईश्वरत्व के वचन को प्रगट करने के लिये स्वर्ग से उतर आये। और आज पवित्र आत्मा ठीक कहाँ हैं ? वे अपना आवास कहाँ बनाते हैं ? पवित्र आत्मा यीशु के बगल में खड़े नहीं रहते हैं जैसा कि बहुत नेकी करने वाले सोचते हैं। और वे पिता के बगल में भी खड़े नहीं रहते वे आपके और मेरे सान्त्वनादाता अथवा हमारी बगल में रहने वाले के रुप में भेजे गये थे।

पवित्र आत्मा आपके सहायक हैं। जी, हाँ, वे आपको जीवन, चंगाई, या मुक्ति जिसकी आपको बुरी तरह जरुरत है, प्राप्त करने में आपके मददगार हैं।

प्रायः कोई पूछा करता है, बेन्नी, मैं किनके पास प्रार्थना करुँ ?

मेरा जवाब है, मेहरबानी करके आप इस मुद्दे को गड़बड़ मत कीजिये। आप पिता से प्रार्थना कीजिये।

ठीक है, तो प्रश्नकर्ता फिर पूछता है, आपने कहा कि हमें आत्मा से बात करनी है।

मुझको उससे यह कहना पड़ता है, प्रार्थना करने और बात करने में बहुत बड़ा फर्क है। मैनें आज तक पवित्र आत्मा से प्रार्थना कभी नहीं की है।

क्या आप जानते हैं कि प्रार्थना शब्द का क्या मतलब होता है ? प्रार्थना का मतलब है मांगना। दूसरे शब्दों में, आप अपनी जरुरत को ले कर आते हैं और उसका जवाब मांगते हैं। आप पिता की ओर से कुछ पाने की आशा लेकर आते हैं। आप आत्मा की ओर कभी नहीं देखते हैं – वे तो आपको पिता के अभिमुख होने में सहायता करने वाले हैं।

आज की इस घड़ी तक मैनें कभी नहीं कहा है, हे पवित्र आत्मा मुझे दीजिये। लेकिन ऐसे अवसर असंख्य आये हैं, जब मैनें कहा है, हे परम प्रिय पवित्र आत्मा, मुझे मांगने में मदद कीजिये।

क्या आप यह समझने लगे हैं कि आपका जवाब ठीक आपकी नाक के नीचे ही है ? बस, आपको अपने दिल से केवल एक शब्द निकालने की देर है। यह आपकी कोई गड़बड़ी हो सकती है, जो सालों से आपको परेशान करती आ रही है। अथवा वह आपकी कोई बुरी आदत हो सकती है, जिससे छुटकारा पाने की आपको कोई गुंजाईश नहीं लगती है। इसके लिये जरुरी जवाब ठीक आपके सामने हैं।

क्या ईश्वर के आत्मा की और फिरने और – उनसे यह कहने का वक्त नहीं हुआ है, हे पवित्र आत्मा, आप ही मेरे सहायक हैं। मुझे आपकी आवश्यकता है। अब आप मेरी सहायता कीजियेगा ? जिस क्षण आप अपने दिल की गहराई से ये शब्द कहेंगे, उसी क्षण पवित्र आत्मा अपना हाथ

आप पर रखेंगे और कुछ कल्पनातीत अवश्य होगा। तुरन्त आप अपने को सचमुच में पवित्र आत्मा में पायेंगे – उनके उपस्थिति एवं व्यक्तित्व में पूर्ण रुपेण तन्मय पायेंगे।

तीन लघुतम शब्द

जब पिता आपको कुछ देते हैं, तो वह पिता से आता है। और जब पुत्र आपको कुछ देते हैं, तो साधारणतः इस प्रकार वर्णित किया जाता है यीशु के द्वारा आता है। किन्तु जब पवित्र आत्मा देते हैं, तो कहते हैं, पवित्र आत्मा में दिया गया; से; द्वारा, में – मात्र तीन लघुतम शब्द हैं, पर इनका प्रभाव तथा सामर्थ अकथनीय है।

बाइबल में इनके अद्वितीय नमूने दिये गये हैं। जब पिता के बारे में कोई वर्णन देखते हैं, तो वह ऐसे शब्दों में होता है, जैसे ईश्वर का प्यार, ईश्वर की शक्ति, ईश्वर की कृपा। पिता के विषय में ऐसी शब्दावली प्रयुक्त है।

किन्तु यीशु मसीह कैसे चित्रित किये गये हैं ? अक्सर बाइबल में हमें सिखाया गया है कि हम पुत्र के द्वारा स्तुति करते हैं, पुत्र के द्वारा प्राप्त करते हैं इत्यादि।

जब पवित्र आत्मा के विषय में कहने की पारी आती है, तो शब्द चयन बदल जाता है। ''में'' शब्द का प्रयोग हुआ है। आत्मा में चलोगे तो आप शरीर की विषय वासनाओं को तृप्त नहीं करेंगे (गलातियों 5:16)। और यदि हम आत्मा में जीयेंगे तो हम आत्मा में चलेंगे भी (पद 25)।

यीशु मसीह ने सामरी स्त्री से उस कुएँ के पास कहा, वह समय आ रहा है, और आ चुका है, जब सच्चे आराधक आत्मा और सच्चाई में पिता की आराधना करेंगे, क्योंकि पिता अपनी आराधना के लिये ऐसे आराधकों की खोज कर रहे हैं (यूहन्ना 4:23)। यहाँ में शब्द का सीधा

अर्थ है के साथ एकता। अर्थात् यीशु मसीह ने कहा कि पिता उनको खोजते हैं जो आत्मा के साथ एक होकर आराधना करते हैं तथा आत्मा के साथ एक हैं।

क्या आप आत्मा के साथ एकता में चल रहे हैं ? ऐसा एक सम्बन्ध स्थापित करना कोई कठिन बात नहीं है। यह इतना सहज है कि इस महान सहायक से सिर्फ तीन शब्द ही कहना पर्याप्त है, मेरी मदद कीजिये। यह तब होता है जब ईश्वर के आत्मा आपकी मदद करेंगे, जब ईश्वर आपको जो दे रहे हैं उसे लेने के लिये आप अपने हाथ आगे बढ़ाकर कोशिश करेंगे।

यहाँ सब से महत्वपूर्ण बात तो यह है कि आप यह समझ लें कि पवित्र त्रिएकत्व वास्तव में एक ही लक्ष्य – प्राप्ति के, लिये एक साथ एक होकर ताल – मेल से कार्य कर रहे हैं – आपकी जरुरत पूरी करने के लिये। वे पिता हैं, पुत्र हैं, तथा पवित्र आत्मा हैं, पर वे एक हैं। वे व्यक्तियों का एक समूह हैं, जो एक प्रकृति में संयुक्त हैं। एक साथ संम्पूर्ण संमपूरना से काम करते हैं और अनन्त सुसंगत के लिये।

एक ''वाचा'' सम्बन्ध

पवित्र आत्मा के, यहाँ, इस पृथ्वी पर और आपकी बगल में रहने के कारण ही आपको प्राप्त चंगाई और मोचन को आप में कायम रखते हैं। इसीलिये ही यीशु स्वर्ग लौट सके, और फिर भी आपको इस पृथ्वी पर उनके द्वारा प्राप्त वरदान को आप अपने पास सुरक्षित रख सकते हैं। अगर आप जानना चाहते हैं कि पवित्र आत्मा के साथ एक घनिष्ट सम्बन्ध कैसे स्थापित करना है, तो महान नबी हाग्गै के इस वचन को ध्यान से पढ़िये ''मिस्त्र से बाहर निकल आने पर मैनें तुम लोंगों के साथ

जो प्रतिज्ञा की थी उसके अनुसार मेरा आत्मा तुम लोंगों के बीच निवास करेगा, डरो मत'' (हाग्गै 2:5)।

जब आप अपने हृदय में ईश्वर के पुत्र को आने के लिये कहते हैं, तब आप ईश्वर के साथ एक व्यक्तिगत इकरार करते हैं। और यह एक तरफा बातचीत नहीं है। ईश्वर भी आपके साथ सहमति देते हैं या प्रतिज्ञा करते हैं। उनका करने का तरीका भी हमेशा यही रहा है।

पिता ने आदम, नूह, इब्राहिम, इसहाक, दाऊद तथा अनेक के साथ वाचा स्थापित करने की पहल की। मानव जाति भी ईश्वर के साथ वाचा स्थापित करने को आगे बढ़ी। यही तो हम याकूब, यहोशू, एलिय्याह, और इस्त्राएली जनता के साथ भी पाते हैं।

जैसे इस्त्राएली जनता ने अपने अपराध स्वीकार करते हुए कहा,
''अब हे हमारे परमेश्वर। हे महान्
पराक्रमी और भययोग्य ईश्वर।
जो अपनी वाचा पालता और करुणा करता रहा है।
जो बड़ा कष्ट..... (नहेम्याह 9:32,37)।
तब नहेम्याह ने प्रभु से कहा,
इस सब के कारण, हम सच्चाई
के साथ वाचा बाँधते और लिख भी देते हैं,
और हमारे हाकिम, लेवीय
और याजक उस पर छाप लगाते हैं। (पद 38)

इस प्रतिज्ञा – पत्र पर चौरासी नेताओं ने अपने हस्ताक्षर किये और शपथ ली हम शपथ लेते हैं कि हम अपने प्रभु ईश्वर के इस विधान के अनुसार चलेंगे, जो ईश्वर के सेवक मूसा के द्वारा हमें दिया गया था, और इस विधान की सभी आज्ञाओं का पालन करेंगे और ईश्वर के सारे आदेशों को मानेंगे (10:29)।

ईश्वर के इस विधान का नाना प्रकार के कार्यों से अनुसमर्थन किया गया था, जैसे खड़ा होना (एज्रा 10:14), जूते उतारना(रुत 4:7–11), भोज देना (उत्पत्ति 26:30), स्मारक खड़ा करना (उत्पत्ति 31:45–53), तथा शपथ लेना (यहोशू 2:12–14) इत्यादि।

शायद इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण विधान वह है जो ईश्वर ने अपने पुत्र के द्वारा आपके साथ स्थापित किया जब उन्होने .....शाश्वत विधान के रक्त के द्वारा हमारे प्रभु यीशु मसीह को मृतकों में से पुनर्जीवित किया ..... (इब्रानियों 13:20)।

चेतावनी का वचन!

जिस तरह आपके उद्धार के सम्बन्ध में ईश्वर का एक विधान है, उसी तरह आपको भी अपने व्यक्तिगत जरुरतों के मामले में एक विधान बनाना या प्रतिज्ञा करनी होती है। मैनें ईश्वर के साथ ऐसे अनेकों समर्पण किये हैं, और मैं यकीन करता हूँ कि ईश्वर एक समर्पण की ईमानदारी को तब पहचानते हैं, जब आप सुनिश्चित रुप से यह बताते हैं कि आप उनसे प्राप्त वरदान के अनुकूल कैसे जवाब देने जा रहे हैं।

यह तथ्य स्पष्ट है, पुराना नियम विधानों से भरा पड़ा है, जिनसे ईश्वर प्रसन्न है। और यह आपके लिये क्यों महत्वपूर्ण है ? क्योंकि ईश्वर विधानों के अनुसार और – और द्वारा कार्य करते हैं, और आप अपनी किसी भी खास जरुरत लेकर उनके साथ एक विधान स्थापित कर सकते हैं। आप अनुभव करेंगे कि पिता अपने वचन के धनी हैं और उनका पालन करने में वे अत्याधिक इच्छुक हैं।

मैं इस विश्वास पर पहुँच गया हूँ कि आपकी मुक्ति के लिये ईश्वर ने आपके साथ जो शाश्वत विधान बनाया है, उसके परिणाम स्वरुप ही पवित्र आत्मा आप के जीवन में प्रवेश करते हैं। वे उसी समय से आपके

लिये ईश्वर के संन्देश वाहक हैं – और ख्रीष्ट के भी। और उस प्रतिज्ञा और सहमति को बड़ी गम्भीरता से लिया जाना होगा। याद है कि शिमशोन, के साथ क्या हुआ। शिमशोन के सोते समय उसकी पत्नी दलीला द्वारा उसके सिर की सातों लटों को मुंडवाने के पश्चात् वह चिल्लायी, शिमशोन, फिलिस्ती तुम पर टूटने ही वाले हैं। इसलिये वह नीन्द से जाग गया, और बोला, मैं पहले की तरह ही झटक कर बच जाऊँगा। लेकिन उसे यह नहीं मालूम था कि प्रभु उसे त्याग चुके थे (न्यायियों 16:20)। जिन्होने उसे त्याग दिया, वे वही प्रभु के आत्मा थे, जो इसके पहले बड़े जबर्दस्त ढ़ंग से उस के ऊपर आ गये थे। (15:14)।

क्या आप अपने को शिमशोन के स्थान पर कल्पना कर सकते हैं? आप सोच रहे हैं कि आप आत्मा से भर गये हैं, किन्तु आप नहीं भरे हैं। आप विश्वास करते हैं कि आप अभिषक्त हुए हैं, लेकिन आत्मा तो आपसे विदा हो चुके हैं। शिमशोन को यह जानकारी बिल्कुल नहीं थी। उसने अपने बुलावे और ईश्वर के साथ गद्दारी की थी। उसको यह पक्का विश्वास था कि उसमें अब भी शक्ति थी, पर आत्मा तो उसके जीवन से कब के ओझल हो चुके थे।

शाऊल के साथ भी ऐसा ही हुआ। प्रभु ने शाऊल से उसकी सत्ता और शक्ति छीन ली, ''क्योंकि मेरा अनुसरण करने के बदले उसने मेरी तरफ पीठ कर दी, तथा मेरी आज्ञाओं के अनुकूल कार्य नहीं किया।'' (1 शमुएल 15:11)। न केवल आत्मा ने उसे त्याग दिया, बल्कि इससे भी घातक घटना घटी, प्रभु के आत्मा ने शाऊल से विदा लिया, तथा प्रभु की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसको सताने लगा। (1 शमुएल 16:14)।

रिक्त स्थान भर दिया जायेगा क्या आपको ज्ञात है कि प्रत्येक अविश्वासी अपदूतों के चंगुल में बुरी तरह फँसा हुआ है ? यहाँ तो आपको एक धक्का – सा लगता होगा,

पर यह हकीकत है, जैसा कि बाईबल स्पष्ट कहती है ''और उस ने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे। जिन में तुम पहिले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न मानने वालो में कार्य करता है।'' (इफिसियों 2:1,2)।

आप सोचते होंगे, पर मेरे साथ तो ऐसा कभी नहीं होगा। मैं तो पवित्र आत्मा से भरपूर हूँ। जी हाँ, यह सच हो सकता है, लेकिन अगर किसी भी कारण वश पवित्र आत्मा की उपस्थिति आपको छोड़ देती हो, तो आप में एक खाली जगह बन जाती है, और शैतान तो ठीक ऐसी जगह की तलाश में छटपटा रहा है। एक बार उसने इस खाली जगह पर कब्जा कर लिया, तो उसका वह प्रभाव उत्पीड़न में बदल जाता है, और धीरे – धीरे आपकी जिन्दगी बर्बादी के कगार पर से होकर गुजरने लगती है।

अपदूतों की बातें करना कोई नहीं चाहता है। वचन के प्रचारक उनके विषय में प्रवचन देते ही नहीं। मसीही विश्वासी उनके सम्बन्ध में चर्चा ही नहीं करते। और पापी लोग इस भयानक विषय को अपने मन से ही मिटा देते हैं। यह तो उन राजनीतिज्ञों के सदृश्य हैं जो नशे और अपराध के मुद्दे को उठाते भी नहीं यह सोच कर कि किसी न किसी तरह समस्या अपने आप ही हल हो जायेगी। परन्तु यीशु मसीह ने इस मुद्दे को बिना डर के उठाया। उन्होने यह स्पष्ट बताया है कि अपदूत हमारे जीवन पर हमला करने के लिये कितने व्यग्र हैं।

यीशु ने फरीसियों से कहा, जब एक अशुद्ध आत्मा एक आदमी से निकल जाता है, तो वह आराम की खोज में निकलता है, और नहीं मिलने पर वह निर्जन स्थानों पर भटकता – फिरता है। तब वह कहता है, मैं जिस घर से आया, उस घर वापस जाऊँगा। और उसके लौटने पर वह

उस घर को खाली, झाड़ा – बुहारा, और सजा सजाया हुआ पाता है। तब वह जाकर अपने से भी बुरे सात और आत्माओं को ले आता है और वे उस घर में घुस कर वहीं बस जाते हैं (मत्ती 12:43 –45)। और प्रभु इसके लिये जो कहते हैं कान खोल कर सुनियेगा। इस आदमी की पिछली दशा पहले से भी बुरी हो जाती है (पद 45)।

शैतान की आक्रमण – प्रणाली इस प्रकार है। हर एक शैतान जो छोड़ कर चला गया है, वह फिर से एक भेंट करने लौट आयेगा – यह देखने के लिये कि फिर से कहीं कोई मौका मिलेगा कि नहीं। और अगर उसको पुनः एक अवसर दिया गया, तो वह दूसरों को भी साथ ले आयेगा। यह एक बिल्कुल एक डरावनी स्थिति है, पर आप इससे आराम से बच सकते हैं, बशर्ते कि आप पवित्र आत्मा से पूरी तरह भर जायें और ईश्वर के साथ की गयीं प्रतिज्ञाओं को कभी भंग न करें।

क्या आप शिष्यों की उस घटना का स्मरण करते हैं, जहाँ वे एक छोटे बालक को चंगा करने की चेष्टा में नाकाम रहे ? यह तब हुआ था, जब तबोर पर्वत पर यीशु रुपांन्तरित होकर महिमान्वित हो गये थे। और जब रुपान्तरण के पश्चात् यीशु जैसे पर्वत से नीचे चले आये उस बालक के पिता ने कहा, हे प्रभु, मेरे बेटे पर दया कीजिये, क्योंकि उसको मिरगी के दौरे हुआ करते हैं। उसकी हालत बहुत नाजुक है, और वह अक्सर आग या पानी में गिरा करता है। इसलिये उसको मैं आपके शिष्यों के पास ले गया, पर वे उसे ठीक – नहीं कर सके। (मत्ती 17:15,16)।

लेकिन वहाँ एक शरीरिक चंगाई से भी ज्यादा कुछ और जरुरी था। प्रभु यीशु ने कहा, उसको यहाँ मेरे पास ले आओ। और यीशु ने उस शैतान की भर्त्सना की, और वह लडके से बाहर निकल गया। उसी घड़ी वह लड़का स्वस्थ हो गया। (पद 17 – 18)।

प्रभु आपके जीवन से न केवल शैतान और उसके अपदूतों को निकालना चाहते हैं – और वे चीजें भी जो इस चंगाई और मोचन के लिये एक बाधक हैं – बल्कि वे आपके उस रिक्त स्थान को भरना भी चाहते हैं। यही कारण है कि उन्होने हमारे लिये सान्त्वना दाता भेजा। वे चाहते हैं कि आप पवित्र आत्मा से पूरित हो जायें।

अभी, इसी वक्त, पवित्र आत्मा इस घरती पर हैं। दसअसल वे धीरज के साथ आपके न्योते का इन्तजार कर रहे हैं।

बस, आपको इतना ही खर्च पड़ता है, दिल की गहराई से मात्र एक शब्द, एक फुसफुसाहट – हे पवित्र आत्मा, कृपया मेरी सहायता कीजिये।

आपकी इस प्रार्थना का जवाब केवल एक सांस दूर है।

अध्याय 11

''आप क्यों रो रहे हैं ?''

बैन्नी, पिता के विरुद्ध निन्दा करने में क्षमा मिल सकती है ? फिलहाल एक नये मसीही ने मुझ से पूछा।

जी हाँ, मैनें उत्तर दिया।

तो पुत्र के विरुद्ध निन्दा करने पर ?

उसकी भी क्षमा हो जायेगी, मैनें कहा।

तो क्या आप बता सकते हैं कि पवित्र आत्मा के खिलाफ निन्दा करने पर क्षमा क्यों नहीं दी जा सकती ?

भय से मुक्ति

बहुत लोंगों के लिये यह विषय एक पेचीदा मामला है। लेकिन पवित्र आत्मा ने उस अक्षम्य अपराध करने के डर से भी मुझे मुक्त किया है। उनकी एक ऐसे प्रकाशन ने मेरा दिमाग खोल दिया कि मुझे इस विषय के सम्बन्ध में डरने की कोई बात ही नहीं रही।

वे चुपचाप रो रहे थे

1974 के जाड़े के एक दिन, ईश्वर ने एक अद्‌भुत सत्य की ओर मेरी आँखें खोल दीं। यह सत्य पवित्र आत्मा की प्रकृति, तथा पिता और पुत्र ने पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप करने वालों को क्यों एक आखिरी चेतावनी दी इससे सम्बन्धित था।

जब मैं प्रार्थना में लीन था, तब मैनें अचानक अनुभव किया कि ईश्वर के आत्मा मेरे कमरे में थे, और मैनें देखा कि वे रो रहे थे। मुझे मालूम है कि यह अजीब – सा लगता है, और मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मैं इसे अच्छी तरह समझ नहीं पा रहा हूँ। लेकिन मुझे पूरी तरह याद

है कि ज्यों ही मैनें उनकी उपस्थिति महसूस की और यह देखा कि वे चुपचाप रो रहे थे, त्यों ही मैं अपने घुटनों पर हो गया।

आप पूछते हैं, ठीक है, लेकिन आपको कैसे पता चला कि यह आत्मा थे ? मेरे लिये तो इस अनुभव की सच्चाई पर प्रश्न उठाना ही मेरी अपनी मुक्ति पर शक करने के बाराबर होगा, उतना ही घनीभूत एवं वास्तविक था यह अनुभव। इसे मैं शब्दों में आबद्ध नहीं कर सकता हूँ, और न ही पूरी तरह समझ सकता हूँ, लेकिन मुझे पूरा ज्ञात है कि यह ऐसा हुआ।

यह अनुभव इतना वास्तविक और ठोस था कि अचानक मैनें अपना चेहरा बाईं तरफ मोड़ लिया, और पूछा, ''प्रभु के आत्मा आप क्यों रो रहे हैं ?''

इसका कोई जवाब नहीं मिला। और उसी घड़ी मेरे गालों से होकर आँसू बहने लगे। आँसू भरे नयनों से फिर से मैनें उनसे पूछा, ''प्रभु के आत्मा, आप रो क्यों रहे हैं ?''

तब सहसा, मैं पूरी तरह जोरों से रोने लगा। अब यों ही आँसू बह नहीं रहे थे। मैनें जो अनुभव किया वह इतना यथार्थ था कि मैं आहें भर – भर भावुक होकर जोरों से कराह रहा था। मेरे अन्तस्तल के अथाह से यह अनुभव हुआ। यह ऐसा लगा मानों मेरे हृदय में विस्फोट हो गया हो, मेरी धड़कनें रुक गयी हों – एक ऐसे व्यक्ति की भाँति जिसका ऐकलौता बेटा या बेटी चल बसे हों।

ये गहरी सिसकियाँ रुकने का नाम ही नहीं ले रहीं थी। रात भर मैं कराहता रहा, और नीन्द नहीं आयी। और यह क्रन्दन जारी रहा – कुछ घन्टों के लिये नहीं, पर बहुत दिनों तक। यह कोई सुनिश्चित योजना नहीं थी, मैं पूरी ईमानदारी से कहता हूँ कि यह बात मेरी समझ में नहीं आ रही थी कि मेरी आँखों से ये आँसू बेरोक क्यों बह रहे थे।

अन्ततः तीन हफ्तों से भी ज्यादा लगातार यह अनुभव होता रहा। यह बोझ और भी भारी होता गया। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि किसी ने सौ मन का एक बोझ लाकर मेरी पीठ पर लाद दिया, बेल्ट से उसे कस कर बाँध दिया, उस पर ताला मार दिया, और मुझे उसके साथ अकेले छोड़ दिया था। वह कुछ भी रहा हो, पर मुझे ऐसे महसूस हुआ कि मैं एक अति कष्टकर असहाय दुख के बोझ के अधिभार से दबा हुआ था, छटपटा रहा था। बस, मैं तो इसे इतना ही वर्णित कर सकता हूँ – तकलीफों का एक भारी बोझ।

सच्चाई का सामना

मैनें ऐसा महसूस किया, जैसा कि भजन संहिता का लिखने वाला कहता है

मैं कराहते कराहते थक गया

मैं अपनी खाट आँसुओं से भिगोता हूँ

प्रति रात मेरा बिछौना ..... भीगता है। भजन संहिता 6:6

इस तरह मैं बिना कारण जाने कराहता रहा, कारण खोजते – खोजते बेचैन सा रहा।

मैनें ऊपर की ओर देखा, और – कहा, प्रभु, क्यों ? मैनें अपने कन्धों के इस अवर्ण्य असहाय भार से मुक्त होने के लिये प्रार्थना की। उस समय सर्वशक्तिमान् ईश्वर ने मेरे इस कष्टदायी भार को भटकी हुई आत्माओं के लिये एक बोझ के रुप में बदल दिया, जिनको मैनें इसके पहले कभी नहीं जाना था।

मैनें पवित्र आत्मा की ओर मुड़ कर जो पूछा आप क्यों कराह रहे हैं ? आप वही प्रश्न मेरी तरफ मुड़ गया और वह बोझ भटके हुओं के नाम पर मुझ पर आ गया, जो आज तक मुझमें से कभी नहीं उतरा है – एक बार भी नहीं।

मैं इस अनुभव के इस विश्वास पर आ गया (हालांकि अभि भी मैं पूरी तरह समझ नहीं पाता हूँ) कि पवित्र आत्मा इस संसार के लिये रो रहे हैं। मुझे यह बात बढ़िया रीति से समझाई गयी कि पवित्र आत्मा अपनी आँखों में आँसू लिये ईश्वर के प्यार का प्रचार करने हेतु सेवकों की तलाश कर रहे हैं। मुझे यकीन है कि मानव जाति की जरुरतों और हालात को देख कर पवित्र आत्मा का दिल दो – टूक हो रहा है। शायद उन सप्ताहों में पवित्र आत्मा ने मुझे जो अनुभव होने दिया वह भटके हुओं के कारण पवित्र आत्मा को हो रही घोर व्यथा की एक झलक मात्र थी।

बैन्नी हिन्न का भविष्य किस प्रकार का होना है इसका कोई प्रश्न ही नहीं है। मुझे यह पक्का मालूम हो गया कि मुझको पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के शुभसन्देश का प्रचार करना ही होगा। और तब से मैं यह कार्य करते आ रहा हूँ, और यह रुकने का नाम ही नहीं लेता।

पवित्र आत्मा इतने विचित्र हैं कि जब वे अपने कार्य में आने लायक एक सटीक व्यक्ति को देखते हैं, तो वे उसको अपने दिल की धड़कन अनुभव करने का अवसर देते हैं। जब आपने वह दर्द महसूस किया है, जो पवित्र आत्मा को होता है, तब वह दर्द आपके अन्तरतम से इतना चिपक जाता है कि वह आपसे कभी अलग नहीं होगा। तब आप मानव जाति की आवश्यकताओं को न केवल देखते हैं, बल्कि उन अत्यन्त आवश्यक बातों को आप महसूस भी करेंगे जिनका इसके पूर्व आपने कभी उतना ध्यान नहीं दिया था।

इसके अतिरिक्त एक दूसरा कारण भी मैं मानता हूँ जिसके चलते ईश्वर ने मुझे यह कष्ट सहने दिया। इस कारण ने यह स्पष्ट रुप से त्रिएक के सदस्य हैं तथा इसके बावजूद वे पिता और पुत्र से भिन्न हैं। और – इसने मेरे मन में उलझी पड़ी सारी पहेलियों को समेट कर एक रुप में बांधने में सहायता दी, जिसे अक्षम्य अपराध कहते हैं।

अपमान और निन्दा

इस बारे में बाइबल क्या कहती है ?

यीशु ने फरीसियों को सम्बोधित करते हुए कहा, ''जो मेरे साथ नहीं है, वह मेरे विरुद्ध है, और जो मेरे साथ नहीं बटोरता है, वह बिखेरता है। इसलिये मैं तुम लोंगो से कहता हूँ, मनुष्यों को हर पाप और निन्दा की क्षमा मिल जायेगी, परन्तु पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा करनेवालों को क्षमा नहीं दी जायेगी, किन्तु जो पवित्र आत्मा के खिलाफ कुछ बोलता है, उसे न तो इस लोक में क्षमा मिलेगी और न परलोक में।'' पद 32।

निन्दा शब्द में क्या – क्या अर्थ सम्मिलित हैं ? इस शब्द के अनेक अर्थ हैं, जैसे –

बुराई करना,

हँसी उड़ाना (निन्दा करना)

गाली – गलौच करना – अथवा खरी – खोटी सुनाना,

मानहानी करना – चोट पहुँचाने वाली बात करना,

झूठी निन्दा करना – गलत इल्जाम लगाना,

अपमान करना।

कुछ लोग पूछेंगे, आप पवित्र आत्मा की मानहानी कैसे करते हैं ? अथवा हम उनका अपमान कैसे करते हैं ? यह जान बूझ कर किया गया एक कार्य है। इब्रानियों कि किताब इस मुद्दे का सीधा जवाब देती है।

> क्योंकि सच्चाई की पहचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जानबूझकर पाप करते रहें तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकि नहीं रहा। हाँ दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा। जब मूसा की व्यवस्था का न मानने वाला दो या तीन जनों की गवाही पर

बिना दया मार डाला जाता है, तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा जिसने परमेंश्वर के पुत्र को पाँवों से रौंदा और वाचा के लहु को जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था अपवित्र जाना है और अनुग्रह के आत्मा का अपमान किया। (इब्रानियों 10: 26 – 29)।

क्योंकि हम उसे जानते हैं जिसने कहा ''पलटा लेना मेरा काम है मैं ही बदला दूँगा। और फिर यह कि प्रभु अपने लोंगों का न्याय करेगा। जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।'' (पद 30 – 31)।

कितना अन्तर है

यह ऐसा क्यों है कि पवित्र आत्मा के खिलाफ निन्दा करने की क्षमा नहीं होती है? इस किताब के शुरु से लेकर आखिर तक बाइबल के हवाले देते हुए मैनें आपसे यह बात कही है कि पवित्र आत्मा में एक अन्यता अन्तर है। वे तो पिता या पुत्र से न निम्नतर हैं, न उच्चतर हैं, पर हमें उनकी विशिष्टताओं से अवगत होना ही है।

सर्वशक्तिमान् पिता ईश्वर स्वर्ग के सर्वोच्च ईश्वर हैं, और उनकी आराधना, स्तुति, प्रशंसा और महिमा की जानी चाहिये। उनके पुत्र यीशु महिमा के प्रभु हैं जिनको देखने स्वर्गदूत भी भयभीत होते हैं। मैं यह भी महसूस करता हूँ, कि पवित्र आत्मा में मानवीय भावनाएँ – जैसे शोक, कष्ट, वेदना आदि – भी हैं जिन्हें गहराई के साथ अनुभव कर सकते हैं, और यह आत्मा की एक अलग पहचान है।

आप सोच रहे हैं, क्या आप यह कहना चाहते हैं कि पिता और पुत्र से भी एक भिन्न प्रकार से पवित्र आत्मा अपने दिल में दर्द महसूस कर सकते हैं ? बाइबल यह नहीं कहती है, पिता को दुख न दें या पुत्र को। यह हमेशा इस प्रकार है, पवित्र आत्मा को दु:ख न दें। क्यों ? मेरे

विश्वास में यह इसलिये है कि ईश्वरत्व के अन्य सदस्यों की अपेक्षा पवित्र आत्मा एक आत्मीय, घनिष्ट और गहरे रुप में स्पर्शित होते हैं।

यीशु का कथन कि मानव पुत्र के विरुद्ध जो कहेगा, वह माफ किया जायेगा, किन्तु पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा का एक शब्द भी माफ नहीं किया जायेगा, इसका स्पष्ट संकेत हैं कि पवित्र आत्मा घायल हो सकते हैं।

ऐसा क्यों है कि पिता कहेंगे, तुमने मेरे आत्मा को व्याकुल किया है? दूसरे शब्दों में, ईश्वर के आत्मा दुखित या पीड़ित किये गये। और बाइबल इस बात का उल्लेख करती है कि वे एक शत्रु के समान उनके विरुद्ध हो गये, और उनके विरुद्ध युद्ध किया (यशायाह 63:10)। ऐसा क्यों है कि पवित्र आत्मा को इतना बचाते हैं ? शायद यह इसलिये कि पिता ईश्वर जानते हैं कि पवित्र आत्मा कितने कोमल हैं। यहाँ ऐसा लगता है मानो पिता ईश्वर कह रहे हैं, अगर तुम उनको छुओगे, तो मैं तुम्हे कभी माफ नहीं करुँगा।

क्यों यीशु मसीह के द्वारा भी पवित्र आत्मा इतना बचाव किया गया है कि यीशु कहते हैं, मेरा रक्त वह पाप छोड़ कर हर पाप धो डालेगा। उन्होने यह भी कहा, परन्तु पवित्र आत्मा की निन्दा करने वाले को कभी भी क्षमा नहीं मिलेगी, पर वह अनन्त दण्ड का भागी होगा (मरकुस 3:29)। क्यों ? क्योंकि पवित्र आत्मा भिन्न हैं तथा उनका हृदय कोमल है कि वे आसानी से स्पर्शित हो जाते हैं।

लेकिन क्या मैं आपको दिलासे की एक बात कहूँ ? निन्दा के बारे में कहने से भी पहले यीशु ने एक महत्वपूर्ण बात कही, जिसे आपको फिर से पढ़ना चाहिये। उन्होने कहा, ''जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरुद्ध है, और जो मेरे साथ बटोरता नहीं है, वह बिखेरता है'' (मत्ती 12:30)।

अगर आप यीशु मसीह के लिये कार्य कर रहे हैं, तो आप उनकी चेतावनी की श्रेणी के लोंगों में नहीं आते हैं। जब प्रभु ने निन्दा के विषय के प्रसंग में बात की, तो उन्होने यह बिल्कुल स्पष्ट किया कि वे उन लोंगों की भर्त्सना कर रहे थे जो उनके साथ कार्य नहीं कर रहे थे।

आप स्वयं से पूछिये, क्या मैं उनके साथ हूँ ? यदि आपका उत्तर हाँ है, तो आगे पूछिये, क्या मैं आत्माओं को उनके पास लाता हूँ ? और अगर अब भी आपका उत्तर हाँ है, तब आप कह सकते हैं, तब मैं पवित्र आत्मा की निन्दा कभी नहीं कर सकता।

''क्या आप चिन्तित हैं ?''

एक दिन एक किशोरी मेरे पास आयी, जिसको यह विश्वास था कि उसने पवित्र आत्मा की निन्दा की थी।

क्या आप चिन्तित हैं ? मैंनें पूछा।

जी हाँ, बड़ी घबराहट के साथ उसने जवाब दिया।

मेरी बहन, मैंनें कहा, यह तथ्य कि आप काफी चिन्तित हैं इस बात का सूचक है कि आपने आत्मा की निन्दा नहीं की है।

आप ध्यान दीजिये, निन्दा इच्छा शक्ति का ऐसा कार्य है जिसके पीछे कोई चिन्ता जुड़ी नहीं रहती है।

निन्दा यीशु को अभिशाप देना, और यह कहना है, कि उन्होने जो किया मुझे उसकी कोई परवाह नहीं। दूसरे शब्दों में यह कह रहा है किसको परवाह है कि रक्त कितना मूल्यवान है ? निन्दा ईश्वर ने जो किया उसका अपमान करना है, और जानबूझ कर उसकी अवहेलना करना है।

आप कहेंगे, बैन्नी, यह तो ठीक है, पर इसका क्या भरोसा है कि मैं यह पाप नहीं करुँगा ? आप यह पाप तब तक नहीं करेंगे जब तक की आप उसे कभी नहीं करना चाहते हैं।

यीशु मसीह ने जो कहा उसे गहराई से देखिये। उन्होने कहा कि कोई भी पवित्र आत्मा के विरुद्ध बोलता है उसे क्षमा नहीं मिलेगी। यह शब्द यीशु मसीह के संन्देश के मूल में है। यह बोलना जानबूझ कर किये जाने वाले कार्य का घातक है। यह एक व्यर्थ विचार से भी कहीं ज्यादा है। इस एक शब्द को व्यक्ति करने की प्रक्रिया में आपका सम्पूर्ण व्यक्ति शामिल है।

अगर आत्मा की निन्दा हुई है, तो यह निन्दा उसके द्वारा की गई है, जिसने ऐसी निन्दा करने का निर्णय लिया है। यह एक संकल्प – शक्ति का कार्य है, एक विकल्प है जो आपको चुनने का फैसला करना होता है।

इस संन्दर्भ में शैतान कहाँ है ? एक वचन सेवक होने की हैसियत से लोंगों के बीच में सेवा करते समय मैं यह जानता हूँ कि शैतान उनके पास कैसे जाता है और उनके मन में पवित्र आत्मा के सम्बन्ध में गलत और बुरी धारणाएँ भरने की कोशिश करता है। और क्या आप उससे कुछ कम आशा करेंगे ? शायद आपके साथ यही हुआ है।

क्या आपके मन में कभी ऐसा कोई ''अशोभनीय'' विचार आया था, जिससे आप पूछते रहते हैं कि ऐसा विचार कभी नहीं आया होता ? किसने उस बुरे विचार को आपकी परिवर्तित किया ? बेशक, यह तो शैतान ही था। लेकिन क्या आपने उस विचार को शब्दों में बांध कर बाहर प्रगट किया ? जी नहीं। आपका मौन साधने का मतलब था कि वह विचार आपका नहीं था।

जिस व्यक्ति ने निन्दा करने का फैसला किया है, वही पवित्र आत्मा के खिलाफ बोलता है। यह वह व्यक्ति है जो कहता है, मैं निन्दा करने जा रहा हूँ, और मैं इसकी परवाह ही नहीं करता कि ईश्वर क्या सोचते हैं।

शाऊल ने निन्दा की जब उसने ईश्वर के वचन की उपेक्षा की। पौलुस के साथी देमास ने निन्दा की जब उसने वचन का पालन नहीं किया और विषय वासनाओं में डूबा रहा। पौलुस ने लिखा, ...देमास ने इस वर्तमान संसार में आसक्त होकर मुझे त्याग दिया और – वह थिस्सलुनीके के लिये प्रस्थान किया। (2 तीमुथियुस 4:10)।

उनको मत जाने दीजिये

आप यह कहते हैं, आप हमको बोलते आ रहे हैं कि हम निन्दा नहीं कर सकते हैं। तो शाऊल और देमास की निन्दा ? जो बात मैं आपको बताने की कोशिश कर रहा हूँ वह यह है कि आप निन्दा तब तक नहीं कर सकते हैं जब तक आप यीशु के लिये जीवन बिताने और उस जीवन में अडिग रहने का फैसला करते हैं।

अनन्त जीवन की ओर जाने का मार्ग उन लोंगों के द्वारा कूड़ा – कचरा बना दिया गया है, जो लोग अपना जीवन यीशु मसीह के साथ प्रारम्भ करते हैं और शैतान के साथ अन्त करते हैं। कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो गलियारे पर चलते समय एक प्रचारक से हाथ मिलाते हैं मानों वे स्वर्ग में एक हवेली की बीमा – पॉलिसी ले रहे हैं। लेकिन करनी और कथनी में कोई ताल – मेल नहीं था। कुछ ही दिनों में आप उन लोंगों को विषय – वासना, धन – दौलत, या इहलौकिक ज्ञान – शौकत से हाथ मिलाते पाते हैं। और वे कहते हैं, प्रभु, मैं जा रहा हूँ।

आप अक्सर यह सवाल किया करते हैं, यह मैं कैसे जान सकता हूँ कि पवित्र आत्मा अब भी मेरे साथ हैं ? और यह कैसे जानूँगा कि उन्होने मुझे छोड़ दिया है या नहीं और – कब ?

यह तो आप पर हमला करने की शैतान की एक चाल है और आपके मन में ये शब्द भर देता हैं, पवित्र आत्मा ने आपको छोड़ दिया है। वे सदा के लिये विदा हुए हैं। अब आप उन्हें कभी नहीं पायेंगें।

परन्तु आप उसके जाल में मत फँसिंये। उसकी बात पर विश्वास मत कीजिये। यहाँ एक उपाय है यह जानने के लिये कि अब भी पवित्र आत्मा आपके साथ हैं या नहीं। यह मेरे लिये बड़ा फायदेमन्द रहा है और में यकीन करता हूँ कि यह आपके लिये भी ऐसा होगा।

पहली बात, बाइबल हमें कहती है कि पवित्र आत्मा एक परामर्शदाता और शांति के साधन के रुप में प्रत्येक विश्वासी के साथ या निवास करते हैं।

दूसरी बात, क्या आप अपने जीवन में यीशु की उपस्थिति अनुभव करते हैं ? तब पवित्र आत्मा ने आपको त्यागा नहीं है। क्या आप ईश्वर का वचन नहीं पढ़ने पर आपको गलती महसूस होती है ? वे विदा नहीं हुए हैं। वस्तुतः वे आपके विश्वास को मजबूत कर रहे हैं और आपको बेगुनाह साबित कर रहे हैं। क्या आप ऐसे किसी से मिले हैं जिसे यीशु के बारे में बात करने की एक बड़ी लालसा आप में जागी है ? वे अब भी वहीं हैं।

यीशु की इस बात में कोई विरोधाभास नहीं था जब उन्होने कहा कि पवित्र आत्मा सदा के लिये आपके साथ रहेंगे। वे इस तथ्य की पुष्टि कर रहे थे कि पवित्र आत्मा की भूमिका चिरस्थाई है – और शाश्व भी है, अगर आप उनकी निन्दा करेंगे, तो आत्मा आपको छोड़ जायेंगे। लेकिन अगर आप उनको दुखित करेंगे, तो वे आपको छोड़ते नहीं हैं। वे रहेंगे,

आपके घायल करने के बावजूद वे आपके साथ रहेंगे। मैं यह मानता हूँ कि मसीही लोग रोज – रोज आत्मा को दुख देते हैं। और उनमें से एक पापी मैं भी हूँ।

पवित्र आत्मा को दुःख देना कलीसिया की एक आम बात है, यह एक बड़ा पाप है। यही वजह है कि पौलुस ने कलीसिया से कहा, आत्मा को दुखित न करें। वह यह बात अविश्वासियों को सम्बोधित करते नहीं कह रहा था।

अगर मैनें गलती की, तो क्या करना चाहिये ?

अब आपका सवाल यह है, हम लोग उनको कैसे दुखित करते हैं? जब आप क्षमा नहीं करते हैं, तब आप उनको दुखित करते हैं। जब आप गन्दी और गलत बातें करते हैं, तब आप उनको दुखित करते हैं, इसलिये आपकी दैनिक प्रार्थना ऐसी होनी चाहिये; ''हे ईश्वर के धन्य आत्मा, कृपया मुझे मदद कीजिए कि आज मैं आपको दुःख न दूँ।''

और अगर आपने गलती की, तो क्या करना चाहिये? वे आपसे यह सुनने के लिये अत्यधिक इच्छुक है; ''कृपया मुझे माफ कीजिए।'' और वे आपको सत्तर गुना सात बार तक क्षमा कर शुद्ध करेंगे।

पवित्र आत्मा इतने कोमल हैं कि एक लघुतम चोट ही सही उनको दर्द देगी। और जितनी लम्बी अवधि तक आपने उन्हें जाना है उतना अधिक आप उनके भावों को जानेंगे। कितनी बार आँखों में आँसु लिये मैं कहता हूँ, पवित्र आत्मा मुझे अफसोस है कि मैनें आपको दुःख दिया। लेकिन कृपया मेरे पास ही रहना।

ऐसे भी बार – बार मौके आये हैं, जब मैंनें उनसे कहा आप मुझे सजा जरुर दीजिये, पर मुझे दूर जाने नहीं देना। क्योंकि प्रभु जिसे प्यार करते हैं उसे सजा देते हैं। यह इस तरह कहने के समान है, मैं तुम से प्यार करता हूँ।

मेरा यह मानना है कि यदि एक व्यक्ति अक्षम्यता की स्थिति में रहता है, तो प्रभु के आत्मा दुरात्माओं को उसमें प्रवेश करने नहीं देंगे। यही तो यीशु ने पतरस से कहा, जब उसने पूछा, प्रभु अगर मेरा भाई मेरे विरुद्ध पाप करता जाये, मैं कितनी बार उसको क्षमा करुँ, सात बार तक? (मत्ती 18:21)।

प्रभु ने उत्तर दिया, मैं तुम से यह नहीं कहता, सात बार पर सत्तर गुना सात बार तक (पद 22)। इसके पश्चात् उन्होने निर्दय सेवक का दृष्टान्त सुनाया, जो एक चेतावनी के साथ अन्त होता है, तो जिस प्रकार मैनें तुम पर दया की थी, क्या उसी प्रकार तुम्हे भी अपने सह – सेवक पर दया नहीं करनी चाहिये थी ? और उसका स्वामी क्रुद्ध हो गया, और उसने उसे तब तक के लिये जल्लादों के हवाले कर दिया, जब तक कि कौड़ी – कौड़ी न चुका दे। (मत्ती पद 33 – 34)।

और यीशु ने यह चेतावनी देते हुए दृष्टान्त दियाः ''यदि तुम में हर एक अपने भाई को मन से क्षमा नहीं करेगा, तो मेरे स्वर्गिक पिता भी तुम्हारे साथ ऐसा ही करेगा।'' पद 35

क्या इसका यह मतलब है कि पवित्र आत्मा सदा – सदा के लिये विदा हुए हैं ? जी नहीं। इसका सीधा अर्थ है कि जो क्षमा नहीं करेंगे उनके जीवन से ईश्वर अपने संरक्षण के हाथ हटायेंगे।

जिस व्यक्ति ने पूर्ण रुप से पवित्र आत्मा की निन्दा की है, वह शैतान के अपदूंतों से भर जाता है। लेकिन अगर आप पूछेंगे, बैन्नी, क्या आप यह विश्वास करते हैं कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण एक मसीही को क्या अपदूत अपने अधीन में कर सकता है ? बिल्कुल नहीं।

हालांकि मैं यह अवश्य विश्वास करता हूँ जिन व्यक्तियों ने यीशु मसीह में अपने विश्वास की घोषणा की है, किन्तु प्रभु के लिये जीवन नहीं बिता रहे हैं – जो अक्षम्यता में जी रहे हैं – वे

अपदूतों के द्वारा प्रभावित हो सकते हैं। अन्धकार की शक्तियों के द्वारा उनको तंग किया जा सकता है, और यहाँ तक उन्हे उत्पीड़ित भी किया जा सकता है, परन्तु उन्हें अधीन में नहीं किया जा सकता है।

उदाहरण के लिये, पतरस ने कहा, ''प्रभु, आपको मरने नहीं देंगे।'' और यीशु ने जवाब दिया, हट जाओ शैतान। यहाँ पतरस शैतान के अधीन में नहीं था। वह शैतान से प्रभावित था। दोनों में बहुत बड़ा फर्क है।

यीशु ने आत्मा के द्वारा कहा, मैं तुम्हें कभी परित्याग नहीं करुँगा। और मेरे मित्रों, यही तो हमारे लिये खुशखबरी है। और चूँकि पवित्र आत्मा हमारे यहाँ वास कर रहे हैं, इसलिये हमें यह जानना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है कि आत्मा हमारे लिये क्या करेंगे, और न कि शैतान हमारे विरुद्ध क्या करेगा।

यह कार्य आप अकेले नहीं कर पायेंगे

मुझे पूरा यकीन है कि आपकी अन्तरात्मा की यह अभिलाषा है कि आप अपने तन, मन, और आत्मा से ईश्वर को प्यार करें। किन्तु आपकी यह अभिलाषा कितनी भी तीक्ष्ण क्यों न हो, आपके इस लक्ष्य को अकेले पूरा करना बिल्कुल असम्भव है। यह अनिवार्य है कि आप कहें, पवित्र आत्मा, मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि आप मेरी सहायता करें।

पौलुस ने रोम की कलीसिया को लिखा, ''और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।'' (रोमियों 5:5)।

इस में कोई शक नहीं है कि हम प्रभु यीशु को प्यार करना चाहते हैं, पर यह असम्भव नहीं है जब तक कि पवित्र आत्मा हमें एक आलौकिक प्यार नहीं देते हैं। और आप इसे कैसे स्वीकार करते हैं ? आप यों ही

कहिये, ईश्वर के आत्मा, मैं खुद को आपके लिये समर्पित करता हूँ। बस, आपको इतना ही कार्य पर्याप्त है कि कि वे आपकी आत्मा को जानते हैं, उतनी ही गहराई से आप यीशु को भी जानेंगे। यह एक स्वचलित प्रक्रिया है। क्यों ? क्योंकि जब पवित्र आत्मा उपस्थित होते हैं, तो यीशु ख्रीष्ट उन्नत होते हैं। यीशु ने कहा, वे मुझे महिमामण्डित करेंगे। प्रभु को कभी भी दर – किनार नहीं किया जाता है, बल्कि और भी नजदीक खींचे जाते हैं।

पौलुस ने लिखा, ''सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं; क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।'' (रोमियों 8:1)।

क्या आप जानते हैं कि आत्मा का अनुगमन करने का सच्चा अर्थ क्या है ? जब वे कहते हैं ''प्रार्थना कीजिये,'' तो आप वही करेंगे। जब वे कहते हैं ''गवाही दें,'' तो आप वही करेंगे। बस, आप आत्मा का अनुगमन ही कर रहे हैं।

आत्मा में स्वतंत्रता का आनन्द

आज्ञाउल्लंघन का मतलब है दण्डाज्ञा का अनुभव होना, और तब अपराध बोध होना। लेकिन अगर आप उनकी पुकार ध्यान से सुनेंगे, तो आत्मा में मुक्ति का आनन्द आप महसूस करेंगे, क्योंकि आत्मा के विधान, जो यीशु ख्रीष्ट के द्वारा जीवन प्रदान करता है, ने मुझको पाप मृत्यु के बन्धन, से मुक्त कर दिया है (रोमियों 8:2)। पुरानें विधानों में आज्ञा देने वाले पिता थे, किन्तु नये विधान के आज्ञाकर्ता पवित्र आत्मा हैं। यीशु ने आत्मा के द्वारा आज्ञायें दीं। (प्रेरितों 1:2)। जिस प्रकार पुराने विधान में ईश्वर ने मूसा के द्वारा आज्ञायें दी।

सात प्रकाशन

रोमियों के पुस्तक के आठवें अध्याय में पौलुस के द्वारा वर्णित सात उपलब्धियों पर ध्यान – मनन करना कितने बड़े आनन्द और सौभाग्य की बात है। दरअसल पौलुस अपने पत्र के प्रारम्भिक सोलह पदों से सात विशिष्ट प्रकाशन हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं :–

शायद आत्मा का कार्य इतने सुस्पष्ट रुप से बाइबल में कहीं भी परिभाषित नहीं है।

1. पाप को अधीन में करने वाली शक्ति है। पहला प्रकाशन यह है कि जीवन के आत्मा का विधान आपको पाप और मृत्यु से मुक्त करता है (पद 1–2)।आपको पाप को अधीन में करने की शक्ति होगी।
2. वे व्यवस्था का पालन करेंगे। मानव स्वभाव की कमजोरी के कारण व्यवस्था जो कार्य करने में असमर्थ थी, वह कार्य ईश्वर ने अपने पुत्र को, पापी मनुष्य के सदृश, भेज कर, किया ... जिससे हम शरीर वासनाओं के अनुसार नहीं, बल्कि आत्मा के अनुसार – आचरण करते हैं, और हम में संहिता की धार्मिकता पूरी हो जाये (पद 3–4)। आत्मा में अब तो मुक्ति हमें मिली है, वह मूसा की संहिता के पूर्तीकरण के फलस्वरुप ही सम्भव हो सकी है।
3. वे आपको ईश्वर का सा मन प्रदान करेंगे। क्योंकि शरीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं। शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शांति है। क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन हैं और न हो सकता है। और जो शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। (5 – 8)।

4. परन्तु जब की परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है तो तुम शारीरिक दशा में नहीं परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नही ंतो वह उसका जन नहीं। और यदि मसीह तुम में है, तो देह पाप के कारण मरी हुई है परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीवित है। (पद 9 – 10)।
5. वे आपके शरीर को जीवन प्रदान करेंगे। और यदि उसी का आत्मा जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है; तो जिस ने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया , वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलायेगा। (पद 11)। यदि आप पवित्र आत्मा के पदचिन्हों पर चलेंगे, तो आप स्वस्थ जीवन बितायेंगे। आपका शरीर फुर्तीला होगा। जैसे नबी यशायाह ने कहा; ''जो लोग प्रभु के साथ रहते हैं, उनको नयी स्फूर्ती मिलती रहेगी।'' (यशायाह 40:31)। मेरे दोस्तो, आप पवित्र आत्मा के बिना अपनी शक्ति नवीन नहीं कर सकते, क्योंकि आपके अन्दर शरीर को फुर्तीला करने वाले पवित्र आत्मा ही हैं।
6. वे अहम (स्वार्थ) का अन्त करेंगे। सो हे भाईयो, हम शरीर के कर्जदार नहीं, ताकि शरीर के अनुसार दिन काटें। क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मारेगे, यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे। इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाये चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं। (पद 12 – 14)।
7. वे आपके उद्धार प्राप्ती की साक्षी देंगे। क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली, कि फिर भयभीत हो परन्तु लेपालकपन की

आत्मा मिली है, जिस से हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं। आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की संतान हैं। (पद 15 – 16)।

पद पर पौलुस आपको यह बताते आ रहे हैं कि पिता और पुत्र का कार्य करनेवाले पवित्र आत्मा ही हैं। और हर एक बार जब मैं ये अविश्वसनीय शब्द पढ़ता हूँ तो मैं उत्तेजित हो जाता हूँ, ''क्योंकि जो लोग पवित्र आत्मा से संचालित होते हैं, वे सब ईश्वर के पुत्र हैं।''

यह नहीं चाहते कि जो मार्ग आपको चलने के लिये ईश्वर द्वारा निर्धारित है उस मार्ग से आप भटक जायें। ईश्वर ने आपको पाप करते देखने के लिये नहीं बनाया। यही वजह है कि पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा, जो अक्षम्य पाप है, करने की सम्भावना को लेकर आपको जरुरत से ज्यादा चिन्तित नहीं होना है।

यीशु मसीह के प्रति आपका प्यार शैतान के प्रभाव से भी इतना अधिक प्रभावशाली है कि आपने यह लड़ाई जीत ही ली है। पवित्र आत्मा आपके साथ एक गहरा, व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित करने को लालायित हैं।

जब मेरी आत्मा निरंन्तर हृदयविदारक सिसकियाँ भर जोरों से कराह रही थी, तब पवित्र आत्मा धैर्य के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे। उनका बोझ मेरा बोझ बन गया, और इस अनुभव ने आत्माओं के प्रति मुझ में एक अनुराग भर दिया जो कभी खत्म नहीं हुआ है, और न ही कम हुआ है।

मुझको सामर्थ्य, परिपूर्णता, धार्मिकता, एक आत्मा – संचालित जीवन, और ऐसे अनेक वरदान देने के लिये इन्तजार कर रहे थे।

और अब वे आप का इन्तजार कर रहे हैं।

अध्याय 12

पृथ्वी पर स्वर्ग

1974 और 1975 के पूर्वाध में मेरे प्रारम्भिक ''प्रवचनो'' में कोई खास अर्न्वस्त नहीं था। वे मुख्य रुप से पवित्र आत्मा के कार्य के मेरे साक्षी थे उन्होने अपने को मेरे जीवन में कैसे वास्तविक बनाया। उन दिनों मैं ज्यादा जानता नहीं था और मुझे बहुत कुछ सीखने को बाकी था।

आत्मा की आवाज का अनुसरण

लेकिन 1975 में पवित्र आत्मा को सुस्पष्ट आवाज में यह कहते हुए मैनें सुना कि टोरन्टो में साप्ताहिक प्रार्थना सभा शुरु करने के अब आप योग्य हैं। उन्होने कहा, मेरा अनुसरण कीजिये, मेरी आवाज सुनिए, और बहुतों को आप अवश्य मसीह की ओर ले चलेंगे।

और इस प्रकार मैनें शुरु किया। हम लोंगो ने आगामी पाँच सालों के लिये हर सोमवार रात को नियमित रुप से प्रार्थना सभायें चलानें की योजना निर्धारित की। हम लोंगों ने एक हाईस्कूल हॉल में शुरु किया, और क्रमशः भीड़ इतनी ज्यादा हो गई कि हमें इससे भी ज्यादा सुविधाजनक एक जगह में बदलना पड़ा। सैकड़ों और सैकड़ों की संख्या में लोंगों ने भाग लिया।

सभायें पूर्णतः पवित्र आत्मा से संचालित थीं और मैनें पहले की अपेक्षा और भी गहराई से उनकी आवाज सुनी। लोग बड़ी बड़ी बुरी आदतों से मुक्त किये गये। परिवारों को पुनः मिलाया गया। चंगाई के लिये पँक्तियाँ ही पँक्तियाँ लगी हुईं थी और करामातों की सैकड़ों गवाहियाँ थीं। पर सभायें हमेशा ही भटकी आत्माओं की मुक्ति के लिये समाप्त होती थीं।

तब कुछ हो गया। लोग अपनी सीटों पर ही रह कर चमत्कार, मुक्ति, चंगाई पाने लगे। हाथ रख कर प्रार्थना करने के लिये अब पँक्तियाँ नहीं रहीं। तमाम सभा भवन में ईश्वर ने अपना कार्य शुरु किया – इतने मुक्त रुप कि अब गवाहियाँ – सुनने के लिये समय ही नहीं बच रहा था।

प्रेस और प्रसार माध्यम भी आकर्षित हुए। टोरंटो टाइम्स, द टोरंटो ग्लोब एन्ड मेल, तथा कैनडा के अन्य अखबारों में भी यहाँ हो रहीं चमत्कार रैलियों की कहानियाँ विस्तार से प्रकाशित थीं।

1976, दिसम्बर महिने की एक सभा में यहाँ हो रही सारी घटनाओं की रिपोर्ट लेने के लिये टोरंटों ग्लोब एण्ड मेल का एक संवाददाता भेजा गया। उसने चमत्कारों और साक्ष्यों का विस्तृत वर्णन किया और लेख के निष्कर्ष के तौर – पर बैन्नी की एक बात को उद्धत किया, मुझे बैन्नी हिन्न के निर्माण में कोई दिलचस्पी नहीं। मुझे बिल्कुल नहीं, और न ही कहीं होगी। यह यीशु हैं ..... जिनका निर्माण होना है और जिनकी स्तुति होनी है। हम लोग तो आत्माओं को प्रभु के पास पहुँचाना चाहते हैं। मैं आत्माओं, अत्माओं, आत्माओं, आत्माओं, आत्माओं को देखना चाहता हूँ। भाइयो और बहनों, क्या आप यह समझ रहें हैं ?

इस शीर्षक पर क्या विश्वास में चंगाई सच में सम्भव है ? टोरंटो स्टार ने हमारी सभाओं में हुए चमत्कारों के चार उदाहरणों के अध्ययन किये। उसने ओशावा के एक बड़े कारखाने में पाली पर कार्यरत एक कर्मी के गला – कैन्सर की रिपोर्ट की, इसी सप्ताह में, एक कैन्सर क्लीनिक की जांच के अनुसार उसे बताया गया कि उसमें कैन्सर का कोई रोग लक्षण नहीं रह गया है।

उसने एक ट्रक चालक बीवर्टन की चंगाई – घटना बतायी, वह चर्च का दरवाजा तक नहीं देखा था। यह सात सालों से रक्त संकुलन से दिल के दौरे और फेफड़ों की वातर फीत से पीड़ित था। इस चंगाई सभा

में आने के लिये उसके मित्रों ने इसे मजबूर किया। इसके तीन दिन बाद मैं डाक्टर के पास गया और डाक्टर ने मुझ से कहा, उसमें कोई गड़बड़ी नहीं दिखती है, यह ईश्वर ने ही ठीक – किया होगा। उसके डाक्टरों का क्या विचार है ? रिपोर्टर ने एक डाक्टर का हवाला देते हुए कहा, देखिये, इस दुनिया में बहुत कुछ हो रहा है, जिन्हें हम जानते ही नहीं हैं और जो हमारे ज्ञान से परे भी है।

टी. वी. विभाग की ओर से यहाँ होने वाली घटनाओं पर वृत – चित्र निर्मित किये जाने लगे। द कैनेडियन ब्राड कस्टिंग कार्पोरेशसन, ग्लोबल टी. वी. चैनल – 9 (टोरंटो की सब से बड़ी निजी टी. वी.) भी विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत करने लगे। हम लोगों ने भी टी. वी. में एक घंन्टे का अपना एक – सप्ताहिक प्रोग्राम प्राइम टाईम चैनल में डेढ़ सालों तक प्रस्तुत किया।

पिट्सबर्ग में एक पीली टैक्सी

1979 में टोरंटो महानगर छोड़ जाना मेरे लिये बहुत ही दर्दनाक बात थी। यह वही जगह थी जहां मुझे ईश्वर के अतिशक्तिशाली आत्मा के द्वारा मुक्ति, चंगाई और प्रेरणा मिली थी। प्रेस ने तो मेरी अच्छाईयाँ ही अच्छाईयाँ प्रकाशित की थीं। इस पर भी मैनें पवित्र आत्मा के पद चिन्हों का अनुगमन करने का ही संकल्प लिया।

उन्होने चाहा कि मैं एक कलीसिया का निर्माण तथा एक अन्तर्राष्ट्रीय सेवा कार्य की स्थापना करुँ। यह तो बहुत वर्षो पहले ही, 1977 में, उन्होने मुझे कहा था। मुझे अच्छी तरह याद है कि यह कहाँ हुआ। मैं एक पीली टैक्सी में पवित्र आत्मा के साथ बातचीत करते हुए पिट्सबर्ग की ओर वापसी सैर कर रहा था। इस सेवा कार्य के सम्बन्ध में उन्होने मुझसे कहा, यह समस्त संसार को स्पर्श करेगा।

मैनें मन ही मन पूछा, यहाँ कहाँ होगा ? न्यूयार्क में ? लासएन्जल्स में ? किन्तु आप जानते हैं, आपको संचालित करने का पवित्र आत्मा का एक अद्‌भुत तरीका है।

1978 की जुलाई में पास्टर रॉय हार्थर्न के निमंत्ररण पर मैं फ्लोरिडा के ओरलैण्डो शहर में प्रवचन देने गया। उसने अपनी बेटी सुसन्न, जो स्प्रिंगफील्ड, मिस्सूरी, में इवान्जेल कॉलेज में अध्ययनरत थी, के बारे में बताया। अविवाहित होने के नाते मेरे कान खड़े हो गये।

उनके साथ क्रिसमस मनाने का मैं खुद को न्योता देकर फिर वहाँ पहुँच गया और सुसन्न छुट्‌टी बिताने घर आ चुकीं थी। पहली बार मैनें उसको देखा, प्रभु नें मुझ से कहा, यही तुम्हारी पत्नी है। बस, यों ही मैनें अनुभव किया। और उसको भी ऐसा ही हुआ।

लेकिन मैनें इसको पक्का जानना चाहा, इसलिये, मैं ईश्वर से इसके कुछ चिन्ह मांगने लगा। मैनें उनके सामने कई प्रश्न किये और एक – एक प्रश्न का एक ही जवाब मुझे दिया गया। मैनें सोचा क्या यह मात्र एक संयोग है ? अथवा क्या ईश्वर सचमुच चाहते हैं कि मैं इस युवती से शादी करुँ ?

तब मैनें एक आखिरी निशान से कोशिश करने को सोचा – यह और भी मुश्किल था।

जनवरी पहली तारीख, 1979, को मैं कैलीफोर्निया के सानजोस से ओरलैण्डो की ओर वापसी उड़ान भर रहा था। यह नये साल की शाम की सभा में प्रवचन देने एक त्वरित यात्रा थी। विमान में ईश्वर के साथ बातचीत में मैनें एक शर्त लगाई। मैनें कहा, अगर वास्तव में आप चाहते हैं कि वह मेरी पत्नी हो जाए, तो मेरे वहाँ पहुँचने पर उसको मुझसे बोलने दीजिये, मैनें तुम्हारे लिये पनीर केक बनाया है। इससे भी एक कठिन चिन्ह में सोच ही नहीं सका।

सुसन्न मुझसे मिलने ओरलैण्डो हवाई अड्‌डे आ पहुँची, और सर्वप्रथम उसके मुँह से निकले शब्द ये थे, बैन्नी, मैनें आपके लिये एक पनीर केक बनाया है। तब वह आगे बोली, मुझसे चमत्कार की उम्मीद मत रखियेगा। पनीर केक तो मैं अपनी जिन्दगी में पहली दफा बना रही हूँ।

दो ही हफ्तों में हमारी सगाई हो गयी, और उसी वर्ष के अन्त तक शादी भी हो गयी।

जैसे वक्त गुजरता गया हमने देखा कि ये सारे संकेत फ्लोरिडा के ओरलैण्डो के उस केन्द्र बिन्दु की ओर अभिमुख थे जहाँ से हमने संसार भर फैल जाने वाले उस सेवा कार्य की शुरुआत की थी। 1983 में मात्र एक मुठठ्ी भर लोंगों के साथ ओरलैण्डो मसीही केन्द्र का शुभारंम्भ हुआ। अब वह हर सप्ताह हजारो – हजारों लोगों के जीवन को स्पर्श कर रहा है, साथ ही टी. वी. में एक राष्ट्रीय कार्यक्रम भी।

वे आत्म स्तुति नहीं चाहते हैं

आप सच मानिये, जब मैनें आत्मा के साथ यह रिश्ता शुरु किया, तब मुझे इसकी जानकारी नहीं थी कि आत्मा मुझे किस ओर ले जायेंगे। बस मैनें इतना ही जाना कि वे वास्तविक थे, और वे मेरे साहचर्य के लिये लालायित थे। उन्होने मेरा गुरु और मार्ग दर्शक होना चाहा।

लेकिन मैं यह जान चुका हूँ कि पवित्र आत्मा अपना ही उन्नयन नहीं करते हैं, वे यीशु का उन्नयन करते है। वे सिर्फ अपनी ही गरिमा – महिमा के लिये मौके की तलाश में कभी नहीं रहते, वे प्रभु की ही स्तुति चाहते हैं और करते हैं।

मैनें यह भी जान लिया है कि ईश्वर के कृपा दानो का स्त्रोत पवित्र आत्मा नहीं हैं। स्त्रोत तो पिता हैं, और इस स्त्रोत से पाने में मदद

करने वाले हैं पवित्र आत्मा। तथा ये आत्मा ही पुत्र ईश्वर को मुक्ति दाता प्रभु के रुप में स्वीकार करने में हमारी मदद करते हैं।

आत्मा पर आपका अधिकार

एक अविश्वासी को भी पवित्र आत्मा की शक्ति का बोध होता है। मैनें सैकड़ों लोंगो से उनके हृदय परिवर्तन के अनुभव के विषय में बातचीत की है, और बहुतों ने मुझ से कहा हैं, कुछ तो जरुर हो रहा था, जिसका मैं वर्णन नहीं कर सका। जो मैं कर रहा था उस पर मुझे जरा असहज महसूस हो रहा था। यही है आपके विश्वास को सुदृढ़ करने की पवित्र आत्मा की सामर्थ।

प्रभु ने कहा, मेरी आत्मा मनुष्य में सदा के लिये बने नहीं रहेंगे। (उत्पत्ती 6:3)। जैसे ही पवित्र आत्मा आपको यह जताने की कोशिश करते हैं कि आपको प्रभु की जरुरत हैं, वैसे ही आपके भीतर एक कुश्ती होने लगती है। यही कारण है कि लोंगों की मुक्ति के पहले ईश्वर के सानिध्य में उनको इतनी तकलीफ हो रही है।

आत्मा यीशु के लिये वास्तव में एक साक्ष्य है। ''परन्तु जब वह सहायक आयेगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा, अर्थात सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा।'' (यहून्ना 15:26)। आत्मा का मौलिक उद्‌दंश्य लोगों को ख्रीष्ट की ओर ले जाना है। आत्मा विश्वास दिलाते और उसे सुदृढ़ करते हैं। मैं ऐसे भी लोंगों से मिला हूँ जो एक सुसमाचार सभा छोड़ कर गये हैं ओर पवित्र आत्मा के द्वारा बुरी तरह शिकार हुए हैं। उन्हे अपनी पाप मय स्थिति बहुत खराब लगी। उन्हे अपने दिलों में एक अन्तहीन कसाव महसूस हुआ आत्मा ने उन्हे तब तक नहीं छोड़ा जब तक उन्होने ईश्वर के साथ उनके पुत्र के द्वारा मेल और शांति नहीं की।

वे आपके मन में प्रवेश करेंगे और आपको बाइबल की प्रमाणिकता का विश्वास दिलाते हुए बाइबल के सत्य को आपके समक्ष पेश करेंगे।

और आपका हृदय यीशु मसीह को समर्पित करने के बाद भी प्रभु के लिये आपकी गवाही में मदद करने के लिये वे ठीक नहीं रहते हैं।

मीका नबी ने लिखाः

परन्तु मैं तो यहोवा की आत्मा की शक्ति
न्याय और पराक्रम पा कर परिपूर्ण हूँ कि मैं
याकूब को उसका अपराध और इस्त्राएल
को उसका पाप जता सकूं। (मीका 3:8)।

वे आपको बोलने की शक्ति देतें हैं। दरअसल, पवित्र आत्मा के बगैर – ईश्वर के वचन की घोषणा करने की कोशिशें बेकार ही है।

''मेरी मदद कीजिये!''

जब आप कहते हैं, ''पवित्र आत्मा, यीशु को जानने के लिये मेरी मदद कीजिए,'' वे आपकी आशा पर नहीं फेरने देंगे। वे सदा आपकी सहायता करने को तत्पर हैं। भजन का लिखने वाला जो कहता हैं उसे ध्यान से सुनिये, आपके सान्निध्य से मुझे दूर न करें, और अपने पवित्र आत्मा से मुझे वंचित न करें। (भजन संहिता 51:11)। तब इसके तुरन्त बाद वह कहता है, आपकी युक्ति का आनन्द मुझे पुनः लौटा दें आपके उदार आत्मा के साथ मुझे सुदृढ़ कर दें (पद 12)। पवित्र आत्मा तैय्यार हैं।

किसी भी वक्त जब आप कहते हैं ''मेरी मदद कीजिये,'' तब वे कहते हैं ''मैं अवश्य करुँगा।''

जब आप कहते हैं, ''मुझे सिखाइये'' तब वे कहते हैं, ''मैं तैय्यार हूँ।''

और जब आप कहते हैं, ''प्रार्थना करने में मेरी मदद कीजिये'' तब वे कहते हैं, ''हम शुरु करें।''

वे बिल्कुल वहीं हैं, और आपमें प्रार्थना करने की इच्छा जगा रहे हैं। पिता और पुत्र से बातचीत करने की आपकी अन्तरआत्मा की लालसा की मुलभूत प्रेरणा ये पवित्र आत्मा हैं। पौलुस के प्रभावशाली शब्द देखने लायक हैं, इसलिये मैं आप लोंगों को अवगत कराता हूँ कि कोई भाई ईश्वर के आत्मा से प्रेरित हो की यीशु को श्रापित नहीं कहता, और न कोई पवित्र आत्मा की प्रेरणा बिना यह कह सकता है कि प्रभु यीशु हैं। (1 कुरि. 12:3)। जब आप गाते हैं, वे प्रभु हैं और दिल से आप मानतें है, तो यह इस बात का सबूत है कि पवित्र आत्मा आप में हैं। और वे आपको घोषणा करने के लिये इस्तेमाल कर रहे हैं कि यीशु मसीह ही समस्त विश्व के प्रभु हैं।

जिस घड़ी आप यीशु की मृत्यु, दफन, और पुनरुत्थान का एलान करते हैं, उसी घड़ी आप पवित्र आत्मा के इम्तहान में पार हो गये। बाइबल कहती है, आप ईश्वर के आत्मा को इससे पहचान लेते हैं: प्रत्येक आत्मा जो यह स्वीकार करता है कि यीशु मसीह मनुष्य रुप में आये, वह ईश्वर का है. तथा प्रत्येक आत्मा जो यह स्वीकार नहीं करता है कि यीशु मसीह मनुष्य रुप में आये, वह ईश्वर का नहीं है (1 यूहन्ना 4:2,3)। वह कहता है इसी से हम सत्य के आत्मा और भ्रम के आत्मा की पहचान कर सकते हैं। (पद 6)।

आप की मुक्ति पवित्र आत्मा के कार्य के केन्द्र में ही है। सच में पवित्र आत्मा ही आपको ईश्वर के परिवार में गोद लेते हैं। पौलुस लिखते हैं, ''इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाये चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र है। क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली, कि

फिर भयभीत हो परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कह कर पुकारते हैं।'' (रोमियों 8:14,15)।

और इसे आप इस प्रकार व्यक्त करते है। इसके द्वारा हम पुकार कर कहते हैं, अब्बा, हे पिता। पवित्र आत्मा हमारी आत्माओं के साथ साक्ष्य देते हैं कि हम ईश्वर की सन्तान हैं, तो विरासत के हकदार – ईश्वर के हकदार और यीशु के साथ अधिकार के भागी, और यदि हम वास्तव में उनके साथ दुख भोगते हैं, तो निश्चित रुप से महिमान्वित भी होंगे। (पद 15 – 17)।

दत्तक लेने को तैय्यार

आत्मा ने आपकी ओर देखा और आपको अनाथ पाया। उन्होने कहा, ''मैं आपको गोद लूँगा''। वे आपके पिता हैं। कैसे? क्योंकि वे पिता के आत्म हैं क्या आपको डोट्टी रैम्बो का गाना याद है, ''पवित्र आत्मा, आपका इस जगह में स्वागत है?'' उसको ऐसे लिखने की प्रेरणा मिली, दया और कृपा के सर्वशक्तिमान् पिता। ये ही हैं पवित्र आत्मा।

इनके सिवाय पिता के पास पहुँचने की कोई संम्भावना ही नहीं। पौलुस आपसे कहते हैं, क्योंकि उनके द्वारा हम दोनों एक ही आत्मा के साथ पिता तक पहुँच सकते हैं। (इफिसियों 2:18)। किसके द्वारा ? यीशु के द्वारा, यहूदी और गैर यहूदी दोनों पवित्र आत्मा के साथ पिता तक पहुँच सकते हैं।

लेकिन सबसे ज्यादा उत्तेजित करने वाला भाग यहाँ है। बाइबल कहती है कि पवित्र आत्मा अनन्त जीवन की जमानत के रुप में आपके लिये दिये गये हैं। ''और उसी ने तुम पर भी जब तुम ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर तुमने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किये हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी। वह उसके मोल

लिये हुओं के छुटकारे के लिये हमारी मीरास का बयाना है, कि उसकी महिमा की स्तुति हो।'' (इफिसियों 1:13 – 14)।

यहाँ दो मत नहीं हैं। पवित्र आत्मा स्वर्ग के लिये आपकी तैय्यारी कर रहे हैं। अगर आपको यकीन हैं कि आपके भीतर हैं, तो आपको यह सवाल कभी नहीं उठाना चाहिये कि आपने फिर से जन्म लिया है या नहीं। आपको यह प्रश्न कभी नहीं करना चाहिये कि आपका घर स्वर्ग है या नहीं। और आपको यह सवाल कभी नहीं करना है कि आपको अनन्त जीवन प्राप्त होगा या नहीं।

इसको मैं दूसरे शब्दों में कह रहा हूँ। मान लें कि कल सुबह आप एक दूकान में जाते और कुछ कपड़े और एक जोड़े जूते आदि खरीदते, पर बिल का भुगतान करने पर देखते हैं कि कुछ पैसा घट रहा है, तुरन्त आप वापस जा कर कुछ समान छोड़ देते हैं, और उतने का भुगतान करते है जितना खरीदा जा सकता है। तब आप कहते हैं, उसको लेने के लिये अगले सप्ताह आऊँगा। बिल पर आपका नाम है, और रसीद घर ले जाते हैं।। तब अगले सप्ताह आकर आपका खरीदा हुआ, छोड़ा हुआ, समान ले जाते हैं।

यीशु ने भी यही किया जब उन्होने इस घरती पर आकर हमें पवित्र आत्मा दिये। यहाँ एक ही अन्तर है – उन्होने कलवरी पर हमारे लिये तमाम कीमत चुकाई। वे कहते हैं मैं आप लोंगो के जीवन के लिये भी एक अग्रिम भुगतान कर रहा हूँ जो इस बात की गारंटी है कि यह मेरी अमानत है। उन्होनें पवित्र आत्मा को भेज दिया और वे आप में हैं और आपके साथ हैं, तो आप अपनी महिमा के मार्ग में हैं।

जब यीशु लौट आते हैं, तो वे आपको, जो छोड़ गये थे, भी अपने घर – ले जायेंगे। यह तो हमें हर्षोल्लासित करने लायक बात है। आप प्रभु की एक खरीदी गई सम्पत्ति हैं। इसलिये ही आप शैतान के गन्दे मुख

पर सीधे कह सकते हैं, खबरदार, अगर मुझे छुआ, मैं, प्रभु की सम्पत्ति हूँ। और वचन कहने से डरना भी नहीं है। उसको लात मारिये, वह आपसे कोसों दूर भाग जायेगा।

आपके तो अपने पवित्र आत्मा हैं। आपकी विरासत की एक अमानत। क्यों वे एक अग्रिम भुगतान के रुप में दिये गये थे। पौलुस उत्तर देता है, हमारे लिये एक श्रापित बन कर मसीह ने हमें व्यवस्था के अभिषाप से मुक्त कर दिया (क्योंकि यह लिखा गया है, एक काठ पर लटकाया जाने वाला हर एक व्यक्ति श्रापित है) (गलातियों 3:13)। और तब उसने यह महान सत्य लिखा, उन्होने हमें मुक्त किया ताकि इब्राहिम का आशिर्वाद यीशु मसीह के द्वारा गैर यहूदियों के लिये भी प्राप्त हो सके, जिससे हमें भी अपने विश्वास के द्वारा वह आत्मा मिल सके, जिनकी प्रतिज्ञा की गई थी। (पद 14)।

मसीह श्रापित होने के कारण प्रतिज्ञा के अनुसार हमें पवित्र आत्मा दिये गये।

आपको कुछ मदद की जरुरत है

जिस क्षण यीशु को आप अपने मुक्तिदाता के रुप में स्वीकार करते हैं, उसी क्षण से पवित्र आत्मा आपको इच्छाशक्ति, सामर्थ, ईश्वर के आज्ञापालन की उत्सुकता और एक उत्तम मसीही जीवन बिताने की अभिलाषा प्रदान करते हैं। और इनके बिना यह कार्य असम्भव है।

प्रेरित पौलुस यह लिखता है, सो जब कि तुम ने भाई चारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो। (1 पतरस 1:22)।

लोंगों का – मसीहियों का भी – हताश और असफल होने का कारण यह है कि वे अपनी ही शक्ति पर आश्रित रहते हैं। आप यह कहते हुए, ''यह मैं अपने आप ही करने जा रहा हूँ,'' ईश्वर की आज्ञापालन नहीं कर सकते हैं। कितनी बार आपने यह कहा है ''मैं प्रार्थना करने जा रहा हूँ, और आपने की नहीं।'' अथवा मैं वचन पढूगां, और आप भूल गये। क्यो ? क्योंकि आप अपने ही मन पर निर्भर रहे। आप इस शारीरिक क्षमता पर आश्रित रहे, और यह आपको लगातार विफलता एवं पतन की ओर ले जायेगी।

वे आपको शक्ति और जीवन प्रदान करेंगे, इतना ही नहीं, बल्कि वे आपको कुछ और भी देंगे जो उतना ही महत्वपूर्ण है। वे आपको विश्राम देंगे।

यशायाह कहते हैं।।

जैसे घरेलु पशु तराई में उतर जाता है
वैसे ही यहोवा के आत्मा ने उनको विश्राम दिया।
इसी प्रकार से तूने अपनी प्रजा की अगुवाई
की ताकि अपना नाम महिमा युक्त बनाये। (यशा. 63:14)।

सुसमाचार प्रचार शुरु करने के तुरन्त बाद में ड्यूप्लेसिस से मिला। वे विश्व के धार्मिक नेताओं को पवित्र आत्मा के विषय में इतनी ओजस्वी प्रस्तुत करते थे कि वे ''पेन्तिकुस्त महोदय'' कहलाने लगे। लोंगों के करिश्माई शब्द सुनने के पहले से ही वे एक करिश्माई प्रेमी बन चुके थे।

ओन्टारियो के ब्रोकविल्ले में एक प्रार्थना सभा के दरमियान उसी प्रार्थना – भवन से होकर इन अभिषिक्त व्यक्ति के साथ मैं चल रहा था और एक प्रश्न करने के वास्ते उनको रोकने का मैनें साहस किया। मैनें हिचकिचाते हुए पूछा, डा0 ड्यूप्लेसिस, ''मैं ईश्वर को कैसे खुश कर सकता हूँ ?''

वे बुजुर्ग आदमी, जो अब परलोक में हैं, रुक गये और उन्होने अपना सूटकेस नीचे रख कर उनकी उंगली मेंरी छाती पर ठोंकते हुए मुझे दीवार की ओर धक्का दिया। ऐसे एक नामी प्रचारक से मुझको इसकी अपेक्षा बिल्कुल नहीं थी। मैंनें इतना ही तो कहा था मैं ईश्वर को कैसे खुश कर सकता हूँ ? और उन्होने मुझको दीवार से जकड़े रखा। तब उन्होने मात्र तीन शब्द कहे, जो मैं जिन्दगी भर भूल नहीं पाऊँगा। उन्होने कहा, ''कोशिश मत करो!'' उन्होने अपना छोटा सूटकेस उठा लिया और वे प्रार्थना भवन की ओर चलते बने।

मैनें उनके साथ – साथ चलकर फिर कहा, ''डाक्टर ड्यूप्लेसिस, मैनें समझा नहीं।''

उन्होने मेरी ओर मुड़ कर शांत भाव से कहा, ''हे मेरे भाई, यह आपकी क्षमता नही है। यह उनकी क्षमता आप में है।'' तब उन्होने कहा, गुडनाईट और अपने कमरे में चले गये।

उस समय मैं शायद ही जाना कि किस बात की प्रार्थना करनी है लेकिन आत्मा इन शब्दों में निहित सत्य के मर्म का खुलासा करने लगे। कैसे मैं ईश्वर को खुश कर सकता हूँ ? इसकी क्षमता उत्पन्न करके। इसकी कोशिश तक नहीं करनी है। यह जैसे पेन्तिकुस्त महोदय ने कहा, ठीक ऐसा ही होना था, अन्यथा मैं अपनी ही उपलब्धियों के बारे में डींग मारता रहूँगा।

ईश्वर का संस्पर्श

जब आप यीशु को आमने – सामने देखते हैं, तो आप यह नहीं कहते, प्रभु देखिए मैनें क्या किया। ऐसे बोलने का अभ्यास कीजिए। आपकी बाँहे फैला कर, ऊपर की ओर उठाते हुऐ कहिए, ''जीवन्त ईश्वर के आत्मा, आज मैं यीशु के लिये जीवन बिताना चाहता हूँ। मैं अपना मन,

अपनी भावनाएँ, अपनी इच्छा – शक्ति, अपनी बुद्धि, अपना मुँह, अपने ओंठ, अपने कान और अपनी आँखे आपको चढ़ाता हूँ – इनको ईश्वर की परम महिमा के लिये उपयोग करें।''

जब मैं जाग जाता हूँ और इस प्रकार की प्रार्थना करता हूँ, तब अभिषेक का एक दरिया उमड़ पड़ता है। जब मैं पूर्ण रुपेण अपने आप को आत्मा को समर्पित करता हूँ, तब ईश्वर ही मेरे सेवाकार्य के द्वारा प्रवाहित होने लगते हैं। इससे ज्यादा मुझे और क्या चाहिये।

मैं अक्सर चकित हुआ करता हूँ कि क्यों ईश्वर मेरी अपनी सभाओं में बार – बार मुझे चंगाई के लिये प्रार्थना करने को संचालित करते हैं। और इस पर भी मैं प्रश्न किया करता था कि क्यों मेरी ही प्रार्थनाओं में लोग पवित्र आत्मा की शक्ति के अधीन गिर पड़ते हैं। लेकिन जब मैं इन प्रार्थनाओं के नतीजे देखता हूँ, तो पाता हूँ कि पवित्र आत्मा के हर एक प्रकाशन का एक ही लक्ष्य है : लोंगों को ख्रीष्ट की ओर ले आना।

यह इसका प्रमाण है कि ईश्वर जीवित हैं, कि वे अब भी लोंगों के जीवन में चल रहे हैं। मैंनें हजारों लोंगों को आत्मा की शक्ति के अधीन में सचमुच गिरते देखा है, और मैं यह विश्वास करता हूँ कि ईश्वर की शक्ति के संस्पर्श का एक लघु अंश मात्र का ही अनुभव किया। परन्तु यह लघु अंश ही सर्वशक्तिमान् की उस अपार अद्‌भुत शक्ति का प्रमाण है, और यह लोंगों को मुक्तिदाता की ओर खींच लाता है।

चंगा होना या आत्मा में वध किया जाना स्वर्ग पहुँचने की एक शर्त नहीं है। वहाँ के लिये सिर्फ एक द्‌वार है – प्रभु यीशु ख्रीष्ट। इस पृथ्वी पर आत्मा के लक्ष्य से आप अपने को कभी विचलित मत कीजिये। वे ही पिता के आत्मा हैं, और पुत्र के आत्मा हैं, जो लोंगों को यह स्वीकार करने को प्रेरित करते हैं कि यीशु मसीह ही प्रभु हैं।

जब से मैनें अपना सेवाकार्य आरम्भ किया, तब से पवित्र आत्मा की असीम शक्ति पर विस्मय करते मैं थकता नहीं हूँ, वे सौम्य हैं, कोमल हैं, पर सर्वशक्तिमान् हैं।

जब यहोवा की साँस उस पर चलती है,

तब घास सूख जाती है, और फूल

मुर्झा जाता है, निःसंदेह प्रजा घास है। (यशायाह 40:7)। पवित्र आत्मा एक कमजोर व्यक्तित्व नहीं हैं।

मैं एक नया मसीही और एक नया सेवक दोनों होनें के कारण सभाओं में प्रायः पीछे रह कर प्रभु के कार्य का निरीक्षण करता रहा था। मुझे सर्वोच्च ईश्वर का सामर्थ तथा पवित्र आत्मा का संचालन था। मैं तो सिर्फ स्तम्भित रह कर देखता रहता था।

मैं नहीं सोचता कि 1975 के अप्रैल महिने की उस रविवार रात के समान इसके पहले मैं कभी नही डरा था। मैं टोरंटो के पश्चिम ओर के उस छोटे पेन्तिकुस्त चर्च के मंच पर था, तब मेरे माता – पिता – कोस्टेन्डी और क्लेमेन्स – दरवाजे से अन्दर आ गये।

मेरी हृदय गति रुकते – रुकते बच गयी, और माथे पर पसीना आ गया। मेरा सबसे डरावना दुस्वप्न भी इसके सामने कुछ नहीं था। मैं ढ़ीठ हो गया – इतना चौंक गया कि हंस नहीं सका, इतना धक्का लगा कि रो नहीं सका।

वे क्या सोच रहे होंगे ?

मैं पाँच महिनों से प्रचार किये जा रहा था, पर मेरे माता – पिता को इसकी भनक तक नहीं थी। इस खबर का भँडा – फोड़ नहीं होने के बावजूद, प्रभु की बात को लेकर घर में काफी तनाव चल रहा था। परन्तु

उस पास्टर के द्वारा अखबार में दिये गये विज्ञापन देख कर ही वे उस छोटे चर्च में चले आये।

मैं तो पल भर के लिये भी उनकी तरफ देख नहीं पाया। किन्तु जिस घड़ी प्रवचन के लिये अपना मुँह खोला, उसी घड़ी उस पूरे मकान में पवित्र आत्मा का अभिषेक होने लगा। यह बहुत ही जबरदस्त था। एक नदी की धारा की भांति मेरे मुँह से शब्दों का प्रवाह होने लगा। मैनें अनुभव किया कि मैं सच में दिल की गहराई से उसी को सुन रहा था जिसे कहने के लिये पवित्र आत्मा ने मुझे प्रेरित किया।

मेरा प्रवचन समाप्त होते ही मुझे महसूस हुआ कि पवित्र आत्मा ने मुझे उन लोंगों की चंगाई के लिये संचालित किया जिन्हे इसकी जरुरत थी। मैंनें सोचा, इन सब के बारे में मेरे डैडी और मम्मी क्या सोच रहे होंगे?

जिम मैंनें सभा के बाद कहा, आपको प्रार्थना करनी ही है। उस रात को जिम पायन्टर भी मंच पर मेरे साथ था, जिसने स्थिति की गम्भीरता को भांप ली थी। घर में होने जा रही उस अवश्यम्भावी विस्फोट जनक स्थिति से बचने के लिये मैनें यह भी सोचा कि मैं जिम के घर में ही रात बिताऊँगा।

इसके बदले मैंने अपनी कार की स्टेयरिगं पकड़ ली और मैं टोरंटो की गलियाँ नापने लगा। मैनें सोचा, अगर मैं आधी रात को घर में घुस जाता, तो घर में सब सोते रहे होंगे। घड़ी में सुबह के दो बज चुके थे कार खड़ी कर, उसे जल्दी बन्द कर दिया।

मैं बिल्कुल आंतकित हो गया, तब मैंने देखा कि वे प्रार्थना कक्ष में घुस गये, और इस से भी खराब और क्या हो सकता है। मेरे घुटने थर थर काँपने लगे, और मैं बैठने के लिये एक जगह खोज रहा था।

सबसे पहले मेरे पिता जी ने कहा, और मैंनें सुना, पर अपने कानों पर विश्वास नहीं कर सका।

बेटे, उन्होने धीरे से कहा, हम लोग तुम्हारे समान कैसे बन सकते हैं ?

क्या मैं वही सुन रहा था जो मैनें सोचा कि मैं सुन रहा था? क्या ये वही आदमी है जो मेरे हृदय परिवर्तन से इतने आंतकित हो गये थे ? क्या ये वही पिता हैं जिन्होने अपने घर में यीशु का नाम तक बिल्कुल मना किया था।

हम लोग वास्तव में जानना चाहते हैं, उन्होने कहा। बताओ, तुम्हारे पास जो है, वह हम कैसे पा सकते हैं ?

मैनें अपनी स्नेही मम्मी को देखा और पाया कि उनके आँसू उन खूबसूरत गालों को भिगोते हुए झरझर टपक रहे थे। उस समय मेरी खुशी की सीमा नहीं रही। मैं रोने लगा। और उस अविस्मरणिय रात्रि की खामोशी में अगले एक घन्टें तक मैं बाइबल द्वारा डैडी मम्मी को प्रभु यीशु मसीह की मुक्ति के संदेश की ओर ले चला।

मेरे डैडी ने कहा, बैन्नी, क्या तुम जानते हो कि किस बात ने हमें विश्वास दिलाया ? उन्होने मुझे बताया कि जब मैनें प्रवचन शुरु किया, तो वे मेरी मम्मी की ओर मुड़ कर बोले, वह तुम्हारा बेटा नहीं है। तुम्हारा बेटा तो बोल नहीं सकता है। उसके ईश्वर सच्चे ईश्वर होंगे। उनको नहीं मालूम था कि मैं अपनी हकलाहट से पूरी तरह मुक्त हो चुका था।

मेरे माता – पिता के इस अद्भुत हृदय परिवर्तन के माध्यम से मेरे संम्पूर्ण परिवार में प्रभु ने वस्तुतः एक आमूल परिवर्तन होने दिया। हैनरी प्रार्थना सभा में पूरी दिलचस्पी दिखाने लगा और उसे मुक्ति मिली। मेरा छोटा भाई माइक का नया जन्म हुआ। तब क्रिस के साथ भी ऐसा ही

हुआ। अगर आपने कहीं सम्पूर्ण घराने की मुक्ति के बारे में सुना हो, तो बस, वह यही था।

हिन्न परिवार धरती पर स्वर्ग के रुप में बदला और यह बदलाव क्षणिक नहीं था। यह पवित्र आत्मा का एक चिर स्थाई सेवाकार्य था। आज क्रिस, बिली, हेनरी, सेम्मी और माइक जी जान से इस सेवा कार्य में संलिप्त हैं। मेरी और रोज पूर्ण रुप से समर्पित मसीही हैं और प्रभु के लिये जीवन बिता रहीं हैं। और बैन्नी ? वह तो आप जानते ही हैं कि उसको क्या हुआ है।

पहली चीजें पहले

जिस तरह पवित्र आत्मा ने मेरे जीवन का संहस्पर्श किया, और मेरे माता – पिता को मसीह की ओर संचालित किया, उसी तरह वे आपके साथ भी वही करना चाहते हैं। पवित्र आत्मा का सबसे महत्वपूर्ण कार्य आपको इस धरा पर किसी स्वर्गीय हर्षोन्माद के अनुभुति में डुबोना नहीं है। यह तो हो सकता है, परन्तु उनका उद्देश्य आपको निर्दोश साबित करना तथा लोगों को यीशु की ओर संचालित करना है।

जैसे आप यह पुस्तक पढ़ते आ रहे हैं, आपने कहा होगा, ''यह मेरे लिये ही है!'' मैं पवित्र आत्मा के साथ एक व्यक्तिगत भावुक सम्बन्ध स्थापित करना चाहता हूँ! ''किन्तु क्या आप इसके लिये तैय्यार हैं ? उस रात को मुझको जो हुआ, जब पवित्र आत्मा ने मेरे कमरे में प्रवेश किया, वह सबसे पहला चरण नहीं था। यह तो उससे भी बहुत पहले शुरु हुआ। अपने जीवन की प्राथमिकताएँ बैठानी होती हैं, पहली चीजें, और आपके आध्यात्मिक सीढ़ी के प्रत्येक पाँव दान पर स्पर्श करना होगा, मजबूती से कदम रखना होगा।

मेरे दोस्तो, अगर प्रभु यीशु को आप अपने हृदय में आने को कभी नहीं कहा है, तो यही वक्त है। यह आपके जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कदम होगा। ठीक इसी वक्त कहें, यीशु मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं एक पापी हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि आप ईश्वर के पुत्र हैं और आपने क्रूस पर अपना परममूल्यवान रक्त मेरे लिये ही बहाया। मुझे मेरे पापों की क्षमा दीजिये। सभी अधर्म आचरणों और बुरे विचारों से मेरे दिल को शुद्ध कीजिये। अब मेरी मुक्ति देने के लिये आपका दिल से आभारी हूँ। आमीन।

अगर आपने यह प्रार्थना अपनी अन्तरात्मा से की है, तो आप आत्मा में एक नया जीवन आरम्भ करने को तैय्यार हैं। और प्रत्येक दिन जैसे आप प्रार्थना करते हैं, ईश्वर का वचन पढ़ें और – ईश्वर के प्यार के बारे में दूसरों को बतायें, और आप अपने जीवन में ईश्वर के एक अद्वितीय मार्ग दर्शन का अनुभव करेंगे।

मैं इस निष्कर्श पर पहुँच चुका हूँ कि मैं पूरी तरह पवित्र आत्मा पर निर्भर हूँ। वे मेरे सर्वस्व हैं। वे आपके भी सर्वस्व हैं। यीशु की प्रतिज्ञा की ओर ईश्वर पिता ने उन्हे भेज दिया, जिससे आपको ज्ञान, सामर्थ, संम्पर्क और साहचर्य प्राप्त हो जाये। वे आपका मार्गदर्शन और संचालन करेंगे, प्रार्थना में मदद करेंगे, और अनेका अनेक अन्य वरदान भी दे देंगे।

वे आपके साथ एक ऐसा सम्बन्ध स्थापित करने की प्रतीक्षा कर रहें हैं जो आपके जीवन को हमेशा – हमेशा के लिये बदल डालेगा। परन्तु यह निमंत्रण देना है या नहीं, यह फैसला आपका है।

कल जब सूर्योदय की पहली किरणें आपका आलिंगन करेंगी, तब वे आपके मुँह से ये सुनने को लालायित होंगे, सु प्रभात, पवित्र आत्मा।